THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com
Vaartha Hindi
@Vaartha_Hindi
Vaartha official
www.hindi.vaartha.com

वर्ष-30 अंक : 30 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) वैशाख अमावस्या 2082 रविवार, 27 अप्रैल-2025

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर ✻ पृष्ठ : 16+32 मूल्य : 8 रुपये

आतंकियों का बंकर मिला, 5 एके-47 बरामद, 175 को हिरासत में लिया गया

श्रीनगर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। सुरक्षाबलों के सर्च ऑपरेशन में सेना को पांच एके-47 के साथ बड़े पैमाने पर गोला बारूद में मिला है। स्पेशल इंटेलिजेंस इनपुट पर कार्रवाई करते हुए सेदोरी नाला मुश्ताकाबाद माछिल के जंगलों में जॉइंट ऑपरेशन चलाया। ऑपरेशन के दौरान एक आतंकवादी ठिकाने को ध्वस्त कर दिया गया। सुरक्षाबलों को 5 एके-47 राइफल, 8 एके-47 मैगजीन, एक पिस्तौल, एक पिस्तौल मैगजीन, एके-47 गोला-बारूद के 660 राउंड, एक पिस्तौल राउंड और एम4 गोला-बारूद के 50 राउंड शामिल हैं। इसके अलावा पहलगाम हमले की जांच कर रही एजेंसियों ने 175 लोगों को हिरासत में लिया है।

'नागरिक देवो भव'

> पीएम मोदी ने 51 हजार युवाओं को सौंपें नियुक्ति पत्र

> 47 जगहों पर आयोजित किया गया रोजगार मेला

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को रोजगार मेले के तहत वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए विभिन्न सरकारी विभागों एवं संस्थानों में 51 हजार से अधिक नवनियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटे। उन्होंने इस कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित भी किया। रोजगार सृजन को उच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता के तहत 15वां रोजगार मेला देशभर में 47 जगहों पर आयोजित किया गया। इससे युवाओं को सशक्त बनाने के लिए सार्थक अवसर उपलब्ध होंगे और वे राष्ट्रीय विकास में प्रभावी योगदान देने में सक्षम होंगे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि आज केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में 51 हजार से अधिक युवाओं को पक्की सरकारी नौकरी के पत्र दिए गए हैं। आज भारत सरकार के अलग अलग विभागों में आप युवाओं के नए दायित्वों की शुरूआत हुई है। आपका दायित्व देश के आर्थिक तंत्र को मजबूत करना है, आपका दायित्व देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करना है, आपका दायित्व देश में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण का है, आपका दायित्व श्रमिकों के जीवन में मूलभूत बदलाव लाने का है। उन्होंने कहा कि जब युवा राष्ट्र के निर्माण में भागीदार होते हैं, तो राष्ट्र तेज विकास भी करता है और विश्व में अपनी पहचान भी बनाता है। भारत का युवा आज अपने परिश्रम और इनोवेशन से दुनिया को ये दिखा रहा है कि हममें कितना सामर्थ्य है। हमारी सरकार हर कदम पर ये सुनिश्चित कर रही है कि देश के युवाओं के लिए रोजगार-स्वरोजगार के अवसर बढ़ें।

सरकार ने मैन्युफैक्चरिंग मिशन की घोषणा की :

पीएम मोदी ने कहा कि इस बजट में सरकार ने मैन्युफैक्चरिंग मिशन की घोषणा की है। इसका उद्देश्य है- 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देना और भारत के युवाओं को ग्लोबल स्टैंडर्ड वाले प्रॉडक्ट बनाने का मौका देना। इससे ना केवल देश की लाखों एमएसएमई को...हमारे लघु उद्यमियों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पूरे देश में रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे। उन्होंने कहा कि आज का ये समय भारत के युवाओं के लिए अभूतपूर्व अवसरों का समय है। हाल ही में आईएमएफ ने कहा है कि भारत, दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा। देश में युवाओं के लिए नए नए अवसर बन रहे हैं।

पुणे कोर्ट ने राहुल गांधी को मानहानि मामले में किया तलब

पुणे, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। वीर सावरकर पर टिप्पणी मामले में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। अब पुणे की एक एमपी-एमएलए अदालत ने वीर सावरकर के एक रिश्तेदार द्वारा दायर मानहानि के मामले में लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष को तलब किया है।

अदालत ने राहुल गांधी को 9 मई, 2025 को अदालत में पेश होने को कहा है। गौरतलब है कि राहुल गांधी के खिलाफ यह मामला तब दर्ज किया गया था जब उन्होंने लंदन की अपनी यात्रा के दौरान वीर सावरकर के बारे में एक बयान दिया था। जिसके बाद विनायक दामोदर सावरकर के पोते सत्यकी सावरकर ने इस मामले में अदालत का रुख किया।

'विपक्ष को कुचलने का टागरेट'

> मीडिया को कमजोर किया जा रहा > दुनिया में लोकतांत्रिक राजनीति मौलिक रूप से बदल गई

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि मौजूदा आक्रमक पॉलिटिकल माहौल में विपक्ष को कुचलने और मीडिया को कमजोर किया जा रहा है।

उन्होंने कहा-पूरी दुनिया में लोकतांत्रिक राजनीति मौलिक रूप से बदल गई है। एक दशक पहले जो नियम लागू थे, वे अब लागू नहीं हैं। राहुल ने कहा कि हमारा विपक्ष सुनना नहीं जानता, क्योंकि उनके पास पहले से ही सभी उत्तर हैं। उसे ठीक से पता है कि क्या किया जाना चाहिए। यह पूरी तरह से गलत है। देश की जनता को पता है क्या किया जाना चाहिए।

गांधी ने कहा कि हम राजनेता के तौर पर जनता की बात सुनने में विफल रहे हैं। हमें इस पर वास्तव में वास्तव करना चाहिए। हमारे विरोधियों ने इसे स्थान को पूरी तरह से खाली छोड़ा है। राहुल गांधी शनिवार को हैदराबाद पहुंचे थे। उन्होंने यहां भारत समिट 2025 कार्यक्रम में हिस्सा लिया। आज इस कार्यक्रम का दूसरा दिन था। कार्यक्रम में तेलंगाना सीएम रेवंत रेड्डी भी मौजूद रहे। राहुल ने कहा- हमने पाया कि हमारे सभी रास्ते बंद हो गए हैं। मीडिया और माहौल हमें उस तरह से काम करने की परमिशन नहीं देता जैसा हम चाहते थे। इसलिए हम अपने इतिहास में वापस पहुंचे और हमने कन्याकुमारी से कश्मीर तक पैदल चलने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि मुझे यकीन है कि हम में से हर किसी की कुछ मामलों पर अलग-अलग राय होगी, लेकिन हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि मुद्दों पर क्या विचार कर सकते हैं। राहुल ने कहा था कि 4 हजार किमी की यात्रा कोई छोटा काम नहीं था।

6 आतंकवादियों के घर ब्लास्ट से गिराए

आर्मी मूवमेंट की कवरेज न करें, पाकिस्तानी पीएम बोले-निष्पक्ष जांच को तैयार

पहलगाम/नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा है कि वे पहलगाम अटैक की हर निष्पक्ष जांच में शामिल होने को तैयार हैं। शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान को बदनाम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान पर हर बार आरोप लगते हैं और यह बर्दाश्त नहीं है। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री जांच की बात कर रहे हैं और दूसरी ओर पाकिस्तान की फौज ने लगातार दूसरे दिन एलओसी पर गोली बारी की। भारतीय फौज ने इसका जवाब दिया। नुकसान की खबर नहीं हैं। भारत सरकार ने सभी मीडिया हाउस के लिए एडवाइजरी जारी की है कि डिफेंस ऑपरेशन और फोर्स के मूवमेंट की कवरेज न करें। इस बीच, जम्मू-कश्मीर में अब तक 6 आतंकवादियों के घर गिराए जा चुके हैं।

सेना ने त्राल, अनंतनाग, पुलवामा, कुलगाम और शोपियां में सर्च ऑपरेशन के दौरान यह एक्शन लिया। द कश्मीर रेजिस्टेंस फ्रंट ने पहलगाम हमले के 3 दिन बाद अटैक की जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया है। हमले के बाद सबसे पहले टीआरएफ ने ही इसकी जिम्मेदारी ली थी।

जून से अगस्त तक चलेगी कैलाश मानसरोवर यात्रा

विदेश मंत्रालय ने दिया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कैलाश मानसरोवर यात्रा जून से अगस्त 2025 तक चलेगी। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, इस साल पांच बैच, जिनमें से प्रत्येक में 50 यात्री होंगे, उत्तराखंड से लिपुलेख दर्रे को पार करते हुए यात्रा करेंगे। ऐसे ही 10 बैच, जिनमें से प्रत्येक में 50 यात्री होंगे, सिक्किम से नाथू ला दर्रे को पार करते हुए यात्रा करेंगे। आवेदन स्वीकार करने के लिए http://kmy.gov.in वेबसाइट खोल दी गई है। आवेदकों में से यात्रियों का चयन निष्पक्ष, कंप्यूटर से तैयार, यादृच्छिक (रैंडम) और लिंग-संतुलित चयन प्रक्रिया के माध्यम से किया जाएगा। कैलाश मानसरोवर यात्रा 30 जून से शुरू होगी। यात्रा का संचालन प्रदेश सरकार और विदेश मंत्रालय के संयुक्त प्रयास से किया जाएगा। कैलाश मानसरोवर यात्रा कोविड महामारी के कारण वर्ष 2020 से संचालित नहीं हो पाई थी। हालांकि,

पांच साल बाद शुरू हो रही कैलाश मानसरोवर यात्रा पर भी महंगाई की मार पड़ेगी। इस बार श्रद्धालुओं को कुमाऊं मंडल विकास निगम (केएमवीएन) को 35,000 की जगह 56 हजार रुपये चुकाने पड़ेंगे। केएमवीएन इस धनराशि से यात्रियों के आने-जाने, ठहरने और भोजन आदि का प्रबंध करेगा। इसके अलावा, मेडिकल जांच, चीन का वीजा, कुली, तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और चीन सीमा में अलग से खर्च करना पड़ेगा। कुमाऊं मंडल विकास निगम लिपुलेख दर्रे के रास्ते कैलाश मानसरोवर यात्रा का प्रबंध करता है। इस बार पंजीकरण के साथ श्रद्धालुओं को भोजन, आने-जाने और ठहरने के लिए केएमवीएन को 56000 रुपये देने होंगे।

उत्तराखंड की ओर से कैलाश मानसरोवर यात्रा का संचालन कुमाऊं मंडल विकास निगम करेगा। यह यात्रा दिल्ली से प्रारंभ होकर पिथौरागढ़ के लिपुलेख पास मार्ग से संचालित की जाएगी। पहला दल 10 जुलाई को लिपुलेख पास से होते हुए चीन में प्रवेश करेगा। अंतिम यात्रा दल 22 अगस्त को चीन से भारत के लिए प्रस्थान करेगा।

प्लाईवुड गोडाउन में भीषण आग, सामान फैक्ट्री से बाहर फेंका,

ठाणे, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के ठाणे में एक प्लाईवुड गोदाम में भीषण आग लग गई। आग इतनी तेज थी कि पूरे इलाके में तहलका मच गया। आग चार मंजिला के गोडाउन में लगी। ऐसे में उपरी हिस्सों में मौजूद सामान भी जलकर खाक हो गया। घटना जिले के भिवंडी परिसर के मनी सूरत कॉम्प्लेक्स की है। यहां रहनाल भिवंडी के पास प्लाईवुड गोडाउन में भीषण आग लग गई। चार मंजिला इमारत पर लगी आग को बुझाने में भिवंडी फायर ब्रिगेड को खासी मशक्कत करनी पड़ी। आग किस वजह से लगी, अब यह बता पाना मुश्किल मुश्किल है, लेकिन धीरे-धीरे आग की लपटें लगातार बढ़ती गईं। भिवंडी फायर को आग पर काबू पाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा। आग के लपटें जब फायर बिग्रेड के भी काबू में नहीं आईं तो लोगों ने फैक्ट्री के ऊपरी हिस्सों में मौजूद सामान बाहर फेंकना शुरू कर दिया।

जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ ये सबसे बड़ा अन्याय

सिंधु जल समझौते पर क्या बोले उमर अब्दुल्ला?

जम्मू, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के साथ सिंधु जल संधि को स्थगित कर दिया है। सरकार के इस फैसले के बाद पाकिस्तान की तरफ से लगातार बयानबाजी हो रही है और इस कार्रवाई को गलत बता रहा है। इस बीच जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शुक्रवार को सिंधु जल संधि को लेकर बड़ा बयान दिया है। सीएम ने कहा कि यह संधि जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए 'सबसे अनुचित दस्तावेज' है और वे कभी भी इसके पक्ष में नहीं रहे हैं। श्रीनगर में विभिन्न टूरिज्म, व्यापार और उद्योग निकायों के साथ बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में अब्दुल्ला ने कहा कि ईमानदारी से कहें तो हम कभी भी सिंधु जल संधि के पक्ष में नहीं रहे हैं।

सिंधु जल संधि पर क्या बोले सीएम उमर?

सिंधु जल संधि को निलंबित करने के केंद्र सरकार के फैसले पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि भारत सरकार ने कुछ कड़े कदम उठाए हैं। जहां तक जम्मू-कश्मीर का सवाल है, हम कभी भी सिंधु जल संधि के पक्ष में नहीं रहे हैं। हमारा हमेशा से मानना रहा है कि सिंधु जल संधि जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए सबसे अनुचित दस्तावेज है। सीएम का ये भारत सरकार की तरफ से सिंधु जल संधि को स्थगित करने के बाद आया है।

सरकार का पाकिस्तान के खिलाफ एक्शन

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में पाकिस्तान कनेक्शन सामने आने के बाद भारत ने सख्त रुख अपनाया है। इसी के तहत पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए भारत ने सिंधु जल समझौता स्थगित कर दिया है। इसके साथ ही कई और बड़े फैसले लिए हैं जिनमें 48 घंटों के अंदर सभी पाकिस्तानियों को भारत छोड़ना है। भारत ने सभी पाकिस्तानी वीजा रद्द कर दिए हैं।

सैयद आदिल हुसैन शाह पर क्या बोले सीएम?

सीएम अब्दुल्ला ने पहलगाम हमले में आतंकवादियों के खिलाफ बहादुरी से डटकर मुकाबला करने वाले टट्टूवाले सैयद आदिल हुसैन शाह की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि वह न केवल कश्मीरियत, बल्कि कश्मीरी मेहमाननवाजी के प्रतीक हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम न केवल उन्हें और उनके परिवार को सम्मानित करें, बल्कि उनकी यादों को हमेशा जिंदा रखें।

आठ घंटे की पूछताछ में गोलमोल जवाब देता रहा तहव्वुर राणा, जांच में सहयोग भी नहीं कर रहा

मुंबई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। महाराष्ट्र से मुंबई क्राइम ब्रांच की एक टीम दिल्ली पहुंची। टीम ने 26/11 आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा से पूछताछ की। मुंबई पुलिस के मुताबिक, टीम ने आतंकी तहव्वुर हुसैन राणा से 8 घंटे से ज्यादा पूछताछ की। तहव्वुर राणा गोलमोल जवाब दे रहा है। जांच में सहयोग भी नहीं कर रहा है। तहव्वुर राणा को दिल्ली स्थित एनआईए मुख्यालय में हिरासत में रखा गया है। भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई पर 2008 में हुए आतंकी हमलों की साजिश रचने वाले तहव्वुर राणा को भारत ले आया गया है। भारत पिछले 17 वर्षों से राणा और उसके साथी डेविड कोलमैन हेडली के प्रत्यर्पण की कोशिश में लगा था, जो कि 2009 में ही अमेरिका में गिरफ्तार हुए थे। हेडली के मामले में भारत को फिलहाल खास सफलता नहीं मिली है, लेकिन तहव्वुर राणा के मामले में अमेरिका की निचली अदालतों से लेकर सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत के दावों को मानते हुए उसके प्रत्यर्पण को मंजूरी दे दी थी।

2008 के मुंबई आतंकी हमलों में नाम क्यों आया?

दावा है कि तहव्वुर राणा ने अपनी कंसल्टेंसी फर्म्स में डेविड हेडली को भी नौकरी दी। इसी फर्म की मुंबई शाखा के काम के लिए डेविड हेडली मुंबई आया था और यहां लश्कर-ए-तयैबा के आतंकी हमलों की तैयारी के लिए मुंबई में ताज महल होटल और छत्रपति शिवाजी टर्मिनस जैसी प्रमुख जगहों की रेकी की थी। जांचकर्ताओं का मानना है कि तहव्वुर राणा ने कंसल्टेंसी फर्म की आड़ में ही डेविड हेडली से रेकी का पूरा काम कराया। साल 2008 में मुंबई में पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकियों ने घुसकर शहरभर में हमले किए थे। इन बर्बर हमलों में छह अमेरिकी नागरिकों और कुछ यहूदियों समेत 166 लोग मारे गए थे।

आपत्तिजनक ऑडियो वायरल होने के बाद नपा अध्यक्ष बुरा फंसे, पुलिस ने मामला किया दर्ज

छिंदवाड़ा, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक ऑडियो वायरल किए जाने के मामले में परासिया नगरपालिका अध्यक्ष विनोद मालवीय के खिलाफ पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता और आईटी एक्ट की विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है। यह मामला भाजपा नेता और पार्षद अनुज पाटकर की शिकायत पर दर्ज किया गया है। पाटकर ने आरोप लगाया कि उनके परिवार की महिलाओं के बीच हुई एक निजी बातचीत की ऑडियो क्लिप को सोशल मीडिया पर वायरल किया गया, जिससे उनकी और उनके परिवार की छवि को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया गया। उनका आरोप है कि यह क्लिप नपा अध्यक्ष विनोद मालवीय द्वारा वायरल की गई। शिकायत के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की और शुक्रवार को विनोद मालवीय के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया।

परासिया डीएसपी जितेन्द्र जाट ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि मामला भारतीय न्याय संहिता और आईटी एक्ट की धाराओं के तहत दर्ज किया गया है और नियमानुसार अगली कार्रवाई की जा रही है। उधर, नपा अध्यक्ष विनोद मालवीय ने कहा है कि उन्हें इस संबंध में किसी भी मामले की जानकारी नहीं है और जब तक कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिलती, वे इस पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते। गौरतलब है कि यह पहला मौका नहीं है जब विनोद मालवीय सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर विवादों में घिरे हों।

वर्ष 2021 में भी उनके खिलाफ इसी तरह का मामला दर्ज हुआ था, जिसमें वे न्यायिक हिरासत में भी रह चुके हैं।

उद्धव ठाकरे की नेता का टेलीफोन हुआ खराब

जांच में बड़ा खुलासा, 12 लाख रुपये का कॉपर वायर चोरी!

मुंबई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कॉपर केबल चोरी होने से शिवसेना (यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी का लैंडलाइन टेलीफोन बाधित होने का मामला सामने आया है। इस मामले में प्रियंका चतुर्वेदी द्वारा दी गई शिकायत के बाद जब एमटीएनएल अधिकारियों ने जांच की तो 12 लाख रुपये का कॉपर केबल चोरी होने और उसके चलते कनेक्शन बाधित होने का खुलासा हुआ।

इस मामले में एमटीएनएल अधिकारीयों ने गोरेगाव पुलिस स्टेशन में अज्ञात शख्स के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। गोरेगाव पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, इस चोरी का पता तब चला जब महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड की एक टीम बाधित कनेक्शन को ठीक करने के लिए चतुर्वेदी के गोरेगांव पश्चिम स्थित आवास पर पहुंची।

गोरेगांव में एमटीएनएल केबल चोरी का खुलासा

जांच के दौरान अधिकारियों को पता चला कि गोरेगांव पश्चिम स्थित एमटीएनएल टेलीफोन एक्सचेंज से कॉपर केबल चोरी हो गई है। पुलिस को दिए गए बयान में गोरेगांव एक्सचेंज के डिप्टी मैनेजर, गिरीश सदानंद सावंत (51) ने बताया कि यह घटना 22 मार्च को एक राज्यसभा सांसद की शिकायत के बाद सामने आई। सावंत और उनकी टीम ने 24 मार्च को मामले की जांच शुरू की। गोरेगांव पश्चिम के उन्नत नगर में सांसद के आवास पर कोई सेवा उपलब्ध नहीं थी। आगे की जांच के दौरान टीम ने पाया कि अंडरग्राउंड नलिकाओं के कवर के साथ छेड़छाड़ की गई थी और अंदर से तांबे के केबल गायब हो गए थे।

टेलीफोन लाइन से गायब तांबा केबल

जांच से पता चला कि 2,736 मीटर तक फैले 8 तांबे के केबल चोरी हो गए थे। ये केबल मूल रूप से 1995 से पहले बिछाए गए थे, जो अभी भी उपयोग में थे। सावंत को संदेह है कि चोरी 15 मार्च से 22 मार्च, 2025 के बीच हुई थी। उन्होंने स्थानीय पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है। इस मामले में आगे की जांच जारी है।

एटीएम लुटेरों के गिरोह का भंडाफोड़ दबिश देने पहुंचे पुलिसकर्मियों से मुठभेड़, दो गिरफ्तार

कलबुर्गी, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कर्नाटक के कलबुर्गी में दो एटीएम लुटेरों को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने बताया कि दो सप्ताह पहले कलबुर्गी जिला मुख्यालय शहर में एटीएम लूट में शामिल हरियाणा के दो लुटेरों को शनिवार तड़के उनके पैरों में गोली लगने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया। लुटेरों की पहचान हरियाणा के मेवात के रहने वाले तस्लीम (28) और शरीफ (22) के रूप में हुई है। वे मेवात गिरोह के सदस्य हैं। कलबुर्गी के पुलिस आयुक्त शरणप्पा एसडी ने बताया कि पुलिस ने गिरोह के सदस्यों पर गोलियां चलाईं, जो हाल ही में एसबीआई एटीएम लूट में शामिल थे। वहां गैस कटर का उपयोग करके 18 लाख रुपये चुराए गए थे। उन्होंने बताया कि दिल्ली के पंजीकरण वाली एक संदिग्ध कार के बारे में सूचना मिलने पर पुलिस ने वाहन का पता लगाया और शहर के बाहरी इलाके में उसे रोकने का प्रयास किया। पुलिस अधिकारी ने संवाददाताओं को बताया, 'जब संदिग्धों ने अधिकारियों पर हमला किया, तो आत्मसमर्पण करने के बजाय पुलिस ने आत्मरक्षा में गोलियां चलाईं, जिससे दो संदिग्ध तस्लीम और शरीफ के पैर में चोट लग गई। मुठभेड़ के दौरान पीएसआई बसवराज और कांस्टेबल राजू, मंजूनाथ और फिरोज भी घायल हो गए।' सभी घायलों को कलबुर्गी के जीआईएमएस अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारी ने बताया कि सरगना तस्लीम समेत चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

सीबीएन के सब इंस्पेक्टर की संदिग्ध हालात में मौत, होटल का दरवाजा तोड़कर निकाला गया शव

नीमच, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। केंद्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो में पदस्थ सब इंस्पेक्टर अजय कुमार शुक्ला की शनिवार सुबह एक होटल में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। वे अफीम तौल केंद्र पर ड्यूटी कर रहे थे और अम्रपाली होटल में ठहरे हुए थे। सुबह जब वे बाहर नहीं दिखे तो साथियों को शक हुआ। दरवाजा तोड़कर कमरे में देखा तो वे अचेत अवस्था में पड़े थे। उन्हें तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और कमरे को सील कर दिया गया। प्राथमिक जांच में होटल के कमरे में उल्टी के निशान मिले हैं, जिससे जहरीला पदार्थ सेवन करने की आशंका जताई जा रही है। पुलिस हर पहलू से मामले की जांच कर रही है।

हलक में पाकिस्तानियों की जान, भागने के लिए 24 घंटे से भी कम का समय

जम्मू, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ कई बड़े फैसले लिए हैं। इनमें से ही एक फैसला सभी पाकिस्तानियों को 48 घंटों के भीतर भारत छोड़ने का आदेश दिया था। इसके बाद से ही पाकिस्तानियोंमें अफरा-तफरी मच गई और अपने देश वापस जाने की होड़ लग गई। यही कारण है कि अटारी बॉर्डर पर पाकिस्तानियों की भारी भीड़ देखने को मिली। अब भारत के अल्टीमेटम को 24 घंटे से भी कम का समय बचा है। यही कारण है कि पाकिस्तानियों को वापस भेजने की कार्रवाई तेज हो चली है। अब तक 200 से ज्यादा पाकिस्तानी भारत छोड़ चुके हैं। अटारी बॉर्डर पर एक बार फिर से पाकिस्तान जाने वाले लोगों की भीड़ दिखाई दे रही है। इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जोकि मेडिकल ट्रीटमेंट के लिए भारत आए थे, लेकिन अब बीच में ही वापिस लौट रहे हैं। अटारी बॉर्डर पर वाहनों की कतारें बॉर्डर खुलने का इंतजार कर रही हैं। देश के लगभग सभी राज्यों से पाकिस्तानियों की वापसी के लिए सरकार की तरफ से कदम उठाए जा रहे हैं।

अटारी और वाघा बॉर्डर पर भारी भीड़

रिपोर्ट की माने तो पिछले दो दिनों में वाघा-अटारी सीमा के रास्ते से 392 भारतीय नागरिक पाकिस्तान से वापस लौटे, जबकि 229 पाकिस्तानी नागरिक भारत से वापस गए हैं। आज भी बॉर्डर पर भारी भीड़ मौजूद है। भारत के अल्टीमेटम के बाद कोई भी पाकिस्तानी भारत में रुकने की रिस्क नहीं लेना चाहता है। यही कारण है कि लोग तेजी से बॉर्डर की ओर जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में सरकार का एक्शन शुरू

महाराष्ट्र से अब तक 55 ऐसे पाकिस्तानी नागरिकों को राज्य सरकार और स्थानीय जिला प्रशासन तरफ से इंटिमेशन भेजा गया है जो सार्क वीजा या शार्ट टर्म वीजा के तहत महाराष्ट्र में रह रहे थे। राज्य सरकार ने पाकिस्तानियों को वापस भेजने की प्रक्रिया तेज कर दी है। केंद्र सरकार के निर्देश के बाद इन नागरिकों को 27 अप्रैल, रविवार तक भारत छोड़ने के आदेश जारी किए गए हैं। इस कार्रवाई को लेकर पूरे राज्य में पुलिस और खुफिया एजेंसियां सतर्क हो चुकी हैं। राज्य सरकार के अनुसार, यह अभियान केवल उन्हीं पाकिस्तानी नागरिकों के खिलाफ चलाया जा रहा है जो एसवीईएस के अंतर्गत भारत में रह रहे थे और अब जिनके वीज़ा रद्द कर दिए गए हैं। इन वीज़ा धारकों को व्यक्तिगत, सांस्कृतिक या धार्मिक आयोजनों में भाग लेने की अनुमति मिली थी, लेकिन अब इन्हें तत्काल भारत छोड़ने के आदेश दिए गए हैं।

ग्वालियर में दो पक्षों में विवाद के बाद युवक की मौत

ग्वालियर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। ग्वालियर के थाटीपुर थाना क्षेत्र के नितिन नगर में रविवार देर रात दो पड़ोसी परिवारों के बीच पुरानी रंजिश और कचरा फेंकने को लेकर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि मारपीट की नौबत आ गई, जिसमें एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। चार घंटे बाद उसकी तबीयत बिगड़ी और अस्पताल ले जाते समय उसकी मौत हो गई। मृतक के परिजनों ने हत्या का आरोप लगाते हुए थाने पर हंगामा किया। मृतक की पहचान अनिल माहौर के रूप में हुई है, जो ई-रिक्शा चालक था और अपने परिवार का एकमात्र कमाने वाला सदस्य था। उसके परिवार में पत्नी प्रवेशी, दो बेटियां सीमा और नेहा, बेटा नवीन और पीयूष हैं। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है, जिसमें मारपीट की तस्वीरें साफ दिखाई दे रही हैं। मारपीट के बाद अनिल को घबराहट और सांस लेने में परेशानी होने लगी। परिजन उसे पहले घर ले गए और बाद में अस्पतालों की तलाश शुरू की। करीब 11 बजे उसे जिला अस्पताल मुरार ले जाया गया, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। इससे पहले दो-तीन निजी अस्पतालों ने भर्ती करने से इनकार कर दिया था। मामले के संबंध में थाटीपुर थाना प्रभारी केके पाराशर ने बताया कि दोनों पक्षों में मारपीट हुई थी, जिसकी पुष्टि सीसीटीवी फुटेज से होती है। फिलहाल मर्ग कायम किया गया है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

फेसबुक पर पाकिस्तान समर्थित पोस्ट करने वाले को आधी रात पुलिस ने उठाया

गुवाहाटी, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। असम में फेसबुक पर पाकिस्तान समर्थित पोस्ट करना एक शख्स को भारी पड़ गया। पुलिस ने आधी रात को ही उसे गिरफ्तार कर लिया। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने 'एक्स' पर ट्वीट किया, 'करीमगंज पुलिस स्टेशन के अंतर्गत सैकुट गांव के कबीर अहमद के बेटे मोहम्मद मुस्ताक अहमद उर्फ साहेल को फेसबुक पर 'पाकिस्तान जिंदाबाद' पोस्ट करने के लिए कल रात गिरफ्तार किया गया।'

मणिपुर में प्रतिबंधित संगठन के चार सदस्य गिरफ्तार; ड्रग्स की खेप के साथ दो पकड़े गए

इंफाल, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। मणिपुर में पुलिस ने दो प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े चार लोगों को गिरफ्तार किया है। ये गिरफ्तारियां इंफाल पूर्व और पश्चिम जिलों से हुई। पुलिस को आरोपियों के बारे में खुफिया सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर पुलिस ने इंफाल ईस्ट जिले में सेजांग मायेइ और तेल्लोउ ममांग लेइकेइ इलाकों में छापा मारकर प्रतिबंधित संगठन प्रीपेक से जुड़े दो लोगों को गिरफ्तार किया। इनकी पहचान समरजीत मैतेई (25 वर्षीय) और एलांगबम लांगांबा मैतेई (26 वर्षीय) के रूप में हुई है।

पकडे गए लोग प्रतिबंधित संगठन के

पुलिस ने बताया कि उन्होंने गुरुवार को इंफाल पश्चिम के लांगथाबल इलाके में छापा मारकर दो उग्रवादियों को गिरफ्तार किया। इनकी पहचान जॉयशंकर (33 वर्षीय) और मोरिंगथेम नेलसन (30 वर्षीय) के रूप में हुई है। आरोप है कि ये लोग जबरन वसूली में शामिल थे। इससे पहले प्रतिबंधित संगठन यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट के भी एक समर्थक को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से हथियार भी बरामद किए हैं। वहीं बिष्णुपर जिले में पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान हथियार और गोला बारूद बरामद किया है। मणिपुर में बीती 13 फरवरी को राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया था। उसके बाद से ही राज्य में तलाशी और छापेमारी अभियान तेज कर दिए गए हैं।

'नफरत नहीं, भारत जोड़ो', दिल्ली में पहलगाम हमले के शहीदों को कांग्रेस ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दिल्ली में हजारों कार्यकर्ताओं के साथ एक बड़ा कैंडल मार्च निकाला। यह मार्च जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए 26 पर्यटकों को श्रद्धांजलि देने के लिए था। नफरत छोड़ो, भारत जोड़ो के नारे के साथ कांग्रेस ने साफ कर दिया कि वो देश को बांटने की कोशिशों को कामयाब नहीं होने देगी। मार्च दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने आयोजित किया। कार्यकर्ता कांग्रेस हेडक्वॉर्टर 24 अकबर रोड पर जमा हुए और वहां से कैंडल जलाकर 30 जनवरी मार्ग होते हुए महात्मा गांधी स्मृति तक गए। इस कैंडल मार्च में राहुल गांधी के साथ कांग्रेस के बड़े चेहरे नजर आए। सबने मिलकर शहीदों को याद किया और आतंकवाद के खिलाफ आवाज बुलंद की।

राहुल गांधी ने घायलों से की अस्पताल में मुलाकात

दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने कहा, पहलगाम का ये कायराना हमला देश को धर्म के नाम पर तोड़ने की साजिश है, लेकिन हम ऐसा होने नहीं देंगे। आतंकवाद इंसानियत का दुश्मन है, ये सिर्फ डर फैलाता है। इसे जड़ से खत्म करना जरूरी है। उन्होंने ये भी बताया कि राहुल गांधी अनंतनाग के जीएमसी अस्पताल गए और वहां घायलों से मिले। यादव ने मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना जताई। देवेंद्र यादव ने सरकार से कुछ सख्त सवाल पूछे। उनका कहना था, जब इंटेलिजेंस को पहले से पता था कि खतरा है और सीमा पार से धमकियां आ रही थीं, तो सरकार ने इसे गंभीरता से क्यों नहीं लिया? लाखों टूरिस्ट कश्मीर गए थे, उनकी सुरक्षा का जिम्मा केंद्र का था। पहलगाम में त्रिस्तरीय सुरक्षा थी, फिर भी ये हमला कैसे हो गया? जम्मू-कश्मीर तो गृह मंत्रालय के अधीन है, फिर ये चूक किसकी है? उन्होंने मांग की कि इसकी गहरी जांच हो और जिम्मेदारों को सजा मिले।

दिल्ली से निकाले जाएंगे पाकिस्तानी नागरिक

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता बोलीं- केंद्र का फैसला सख्ती से लागू करेंगे

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। दिल्ली में रहने वाले सभी पाकिस्तानी नागरिकों को वापस पाकिस्तान भेजा जाएगा। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने ट्वीट कर कहा कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने 27 अप्रैल, 2025 से मेडिकल, डिप्लोमैटिक और लॉन्ग-टर्म वीज़ा को छोड़कर पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए सभी वीज़ा रद्द कर दिए हैं। मौजूदा मेडिकल वीज़ा भी 29 अप्रैल, 2025 के बाद अमान्य हो जाएंगे। इसके बाद पाकिस्तानी नागरिकों को कोई नया वीज़ा जारी नहीं किया जाएगा। दिल्ली सरकार इन आदेशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कर रही है।

गंभीरता से सरकार रख रही मामले पर नजर

रेखा गुप्ता ने कहा कि अगर कोई पाकिस्तानी केंद्र सरकार की तरफ से जारी आदेश का उल्लंघन करेगा तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि मामले की गंभीरता से नज़र रखी जा रही है।

सिर्फ इन लोगों को मिलेगी छूट

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि पाकिस्तानी नागरिकों के लिए सार्क वीजा रद्द करने के संबंध में गृह मंत्रालय से निर्देश मिला है। आदेश के क्रम में विदेशी अधिनियम, 1946 की धारा 3(1) के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीजा सेवाओं को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने का निर्णय लिया है। भारत सरकार द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए मेडिकल वीजा,

दीर्घकालिक वीजा, राजनयिक और आधिकारिक वीजा को छोड़कर सभी मौजूदा वैध वीजा 27 अप्रैल 2025 से तत्काल प्रभाव से रद्द हो गए हैं। यह आदेश पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) और राजनयिक और आधिकारिक वीजा पर लागू नहीं होगा।

अमित शाह ने सभी मुख्यमंत्रियों को दिया है ये निर्देश

बता दें कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को फोन किया और उनसे यह सुनिश्चित करने को कहा कि कोई भी पाकिस्तानी नागरिक भारत छोड़ने के लिए निर्धारित समय सीमा से अधिक देश में न रहे। मुख्यमंत्रियों को उनके राज्यों में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान करने और उनका निर्वासन सुनिश्चित करने के लिए भी कहा गया है।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH
स्वतंत्र वार्ता
मेरा हैदराबाद
रविवार, 27 अप्रैल, 2025

सुविचार: पतझड़ जब आता है तो हमें ये सिखाता है कल फिर उस डालियों पर पत्ते लगेंगे ।

आतंकवाद पर मोदी सरकार का सख्त रुख : बड़ी संजय

केंद्रीय मंत्री ने रोजगार मेला कार्यक्रम में भाग लिया

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बड़ी संजय कुमार ने कहा कि पहलगाम की घटना आतंकवादी क्रूरता की पराकाष्ठा को दर्शाती है। उन्होंने चेतावनी दी कि जो लोग बंदूक चलाते हैं, वे अंततः उन्हीं बंदूकों के सामने गिरेंगे। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार आतंकवाद को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है और पाकिस्तान को हिलाकर रख देने वाले कड़े कदम उठाने की तैयारी कर रही है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार इस संबंध में कड़े फैसले लेने वाली है और उन्होंने पूरे देश से इसके समर्थन में खड़े होने का आह्वान किया। वे आज यहां मैरी चेन्ना रेड्डी मानव संसाधन विकास केंद्र में आयोजित 'रोजगार मेला' कार्यक्रम में बोल रहे थे। उनके साथ जीएसटी के मुख्य आयुक्त संदीप प्रकाश, वी. सपूर्णा और अन्य लोग शामिल हुए। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रोजगार मेला कार्यक्रम को दिल से मानते हैं। वे एक ऐसे नेता

हैं जो दस लाख नौकरियां देने के अपने वादे पर कायम हैं। 22 अक्टूबर 2022 को शुरू हुआ रोजगार मेला आज भी जारी है। अब तक 14 रोजगार मेले आयोजित किए जा चुके हैं, जिसके परिणामस्वरूप 925,000 नौकरियां दी गई हैं। आज के 15वें रोजगार मेले के माध्यम से देशभर में 51,000 से अधिक नौकरियां भरी जा रही हैं, जिससे कुल संख्या करीब दस लाख हो गई है। भ्रष्टाचार या त्रुटि की गुंजाइश के बिना तय समय सीमा के भीतर इतनी सारी नौकरियां भरना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है, और इसका श्रेय मोदी सरकार को जाता है। जब सरकारी विभागों में रिक्तियां होती हैं, तो बोझ मौजूदा कर्मचारियों पर पड़ता है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में सेवाएं देना मुश्किल हो जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए पीएम मोदी के नेतृत्व में विभागों में रिक्तियों को तेजी से भरा जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहले किसी भी सरकार ने इस तरह नियमित रूप से रिक्त पदों को नहीं भरा था। आज देशभर में 47 केंद्रों पर रोजगार मेला आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 51,000 उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र जारी किए गए हैं। हमारे राज्य में यह हैदराबाद और सिकंदराबाद में आयोजित किया जा रहा है। एमसीएचआरडी केंद्र से करीब 700 उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र मिल रहे हैं। कड़ी मेहनत और पढ़ाई से नौकरी हासिल करने के बाद अब आपकी जिम्मेदारी है कि आप अपने कर्तव्यों का पालन पूरी प्रतिबद्धता के साथ करें और पहचान बनाएं। नई तकनीकों और अपने काम में होने वाले बदलावों से अपडेट रहें और सीखते रहें। आप जानते हैं कि पीएम मोदी रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, यही वजह है कि हम दस लाख पदों को भरने में सफल रहे। यह एक ऐसी सरकार है जो अपने वादों को पूरा करती है। इसके अलावा, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहल युवाओं को न केवल नौकरी पाने के लिए बल्कि नौकरी देने वाले बनने के लिए भी प्रोत्साहित कर रही हैं। महामारी के दौरान, जब अमेरिका जैसे देशों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, तब भारत आत्मनिर्भर पैकेज की वजह से स्थिर रहा, जिसका श्रेय मोदी सरकार को जाता है। उन्होंने कहा, तेलंगाना राज्य की बात करें तो पिछली राज्य सरकार नियमित रूप से नौकरियां भरने में विफल रही, पेपर लीक और देरी के कारण बेरोजगार युवाओं के साथ अन्याय हुआ। यहां तक कि वर्तमान राज्य सरकार भी भ्रष्टाचार और अनियमितताओं से ग्रस्त है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत वैश्विक आर्थिक नेता बनने का प्रयास कर रहा है। 11वें स्थान से भारत 5वें स्थान पर पहुंच गया है और अगले तीन वर्षों में इसका लक्ष्य तीसरे स्थान पर पहुंचना है। जैसे-जैसे हम 2047 में आजादी के 100 साल पूरे करेंगे, मोदी का सपना है कि भारत अमेरिका और चीन को पीछे छोड़कर दुनिया का नंबर एक देश बन जाएगा।

टीपीसीसी प्रमुख ने एमएलसी कविता को महाबली करार दिया

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ ने बीआरएस एमएलसी कलवकुंतला कविता को कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए उन्हें "शराब की रानी" और "महाबली" करार दिया है। शनिवार को एमएलसी कविता ने एक्स पर ट्वीट किया, जिसमें दावा किया गया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी गलत रास्ते से तेलंगाना आ रहे हैं, उन्होंने तर्क दिया कि कांग्रेस सरकार ने अपने 16 महीने के कार्यकाल के दौरान लोगों पर अत्याचार किया है, यहां तक कि हाइड्रा और मूसी कायाकल्प परियोजना की आड़ में गरीबों को नुकसान पहुंचाने के लिए बुलडोजर भी भेजे हैं। उनकी टिप्पणियों के जवाब में, टीपीसीसी प्रमुख ने कहा कि शराब के कारोबार में शामिल कविता को राहुल गांधी की आलोचना करने का अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि बीआरएस एमएलसी, जो खुद को "मेगा उपद्रवी" कहती हैं, को कांग्रेस नेता का विरोध करने के लिए शर्मिंदा महसूस करना चाहिए। महेश कुमार गौड़ ने कविता से केसीआर के प्रशासन के दौरान हैदराबाद में हुई भूमि बिक्री के मुद्दे को संबोधित करने के लिए भी कहा है।

विश्व मंगल गौशाला
सोमारम ग्राम, मेडचल, हैदराबाद (तेलंगाना)
सस्नेह निमंत्रण
आज रविवार 27 अप्रैल 2025 प्रातः 11 बजे से
सतुवाई अमावस्या
शुभ स्थल : विश्व मंगल गौशाला सोमारम ग्राम, मेडचल, हैदराबाद
गौ-माता पूजन * भजन * भोजन प्रसादी
भोजन प्रसादी लाभार्थी : गुप्त दान
हरी घास व्यवस्था : श्री नारायणलालजी विक्रमजी सुथार बोलारम
भजन गायक : गौ-भक्तों द्वारा
दूरभाष : 9346917593
Bank Details : GOU GRAM VIKAS SEVA SAMITHI
A/c No. 50200063938688 | IFSC : HDFC0009429
HDFC Bank, Kanajiguda Branch

42 बैलों और 10 गायों को ले जाने के आरोप में अज्ञात व्यक्ति पर केस

आदिलाबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। शनिवार को इकोडा मंडल के गांधीनगर में बिना अनुमति के बैलों और गायों को नागपुर से हैदराबाद के एक बूचड़खाने में ले जाने के आरोप में एक अज्ञात व्यक्ति पर मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने एक वैन, 42 बैलों और 10 गायों को जब्त किया।

पुलिस ने बताया कि जब पुलिस ने मवेशियों को बूचड़खाने ले जा रहे वाहन को रोका तो वैन का ज्ञात चालक मौके से भाग गया। उन्होंने वैन में ठूंसकर भरे बैलों और गायों को बचाया और उन्हें एक शेड में रख दिया। वैन के चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

स्थानीय लोगों और मवेशी संरक्षण कार्यकर्ताओं का कहना है कि व्यापारी महाराष्ट्र और तेलंगाना के विभिन्न हिस्सों से अवैध रूप से मवेशियों को हैदराबाद ले जाते हैं ताकि जल्दी से जल्दी पैसा कमा सकें। कथित तौर पर चेक-पोस्ट पर अधिकारियों को रिश्वत देकर व्यापारी इस अपराध को अंजाम देने में सक्षम हैं। कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि स्वस्थ गायों को भी बूचड़खानों में ले जाया जा रहा है, जिससे उनकी आबादी खत्म हो रही है और कृषि क्षेत्र प्रभावित हो रहा है।

राहुल गांधी के साथ केटीआर ने साझा की तेलंगाना के स्थानों की सूची

अवश्य जाने का किया आग्रह

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना में कांग्रेस के कुशासन और राज्य में उसके शासन के कारण हुई बर्बादी के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तीखा कटाक्ष करते हुए बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष के टी रामाराव ने शनिवार को इसके लिए पार्टी के गलत कदमों और 17 महीने के शासन के दौरान प्रशासन द्वारा फैलाई गई विघटनकारी क्षमता को जिम्मेदार ठहराया।

हैदराबाद में भारत शिखर सम्मेलन में राहुल गांधी की निर्धारित उपस्थिति से पहले, बीआरएस नेता ने उनके साथ स्थानों की एक सूची साझा की, तथा उनसे आग्रह किया कि वे कांग्रेस सरकार की विफलताओं को स्वयं जानने के लिए अवश्य वहां जाएं। सूची में लागाचेर्ला गांव शामिल है, जहां आदिवासी समुदायों ने फार्मा विलेज परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण का जमकर विरोध किया है और हैदराबाद के लिए एक महत्वपूर्ण जल परियोजना स्थल सुंकीशाला, जिसे बुनियादी ढांचे की विफलताओं और रिटेनर दीवार के ढहने के कारण झटके का सामना करना पड़ा है।

उन्होंने हाइड्रा विध्वंस स्थलों की ओर भी इशारा किया, जो भूमि को पुनः प्राप्त करने के प्रयासों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और मूसी विध्वंस स्थल, एक रिवरफ्रंट विकास परियोजना का हिस्सा है जिसने हजारों परिवारों को विस्थापित कर दिया।

अन्य स्थानों में एचसीयू कांचा गाच्चीबावली शामिल है, जहां 400 एकड़ भूमि क्षेत्र पारिस्थितिकी और स्वामित्व विवाद में उलझा हुआ है और यहां ऐसे परिवारों के घर हैं जो त्रासदियों से प्रभावित हुए हैं, जैसे कि भोजन विषाक्तता और अन्य कारणों से 100 से अधिक गुरुकुल छात्रों की मृत्यु और कर्ज और फसल विफलता से प्रेरित 500 से अधिक किसानों की आत्महत्याएं।

केटी रामाराव ने एसएलबीसी सुरंग ढहने की घटना को भी उजागर किया, जो बुनियादी ढांचे के मुद्दों को उजागर करने वाली एक दुखद घटना है और अशोक नगर, नौकरी चाहने वालों के लिए कोचिंग सेंटर का केंद्र है, जिन्हें कांग्रेस ने सरकारी नौकरी देने का वादा किया था।

उन्होंने राहुल गांधी को कांग्रेस के अधूरे वादों की याद दिलाई, जिसमें शासन के पहले वर्ष के भीतर दो लाख सरकारी नौकरियां देने और युवा विकासम योजना के तहत वित्तीय सहायता देने का वादा शामिल है।

राजस्व मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी की संपत्तियों पर ईडी की छापेमारी और उसके बाद चुप रहने को प्राथमिकता देने का स्पष्ट संदर्भ देते हुए, उन्होंने प्रवर्तन निदेशालय को प्रबंधित करने की कांग्रेस के मंत्रियों की क्षमता की आलोचना की।

|| जय गौ माता || जय जय रघुवीर समर्थ || श्री श्री श्री सद्गुरु ||
श्री समर्थ कामधेनु गौशाला
कामधेनु गौ मंदिर
श्री सद्गुरु समर्थ नारायण आश्रम, शिवबाग़, जियागुड़ा, हैदराबाद. फोन : 9296358630, 7013711317
समर्थ नारायण महाराज
आज रविवार, 27 अप्रैल 2025 को वैशाखी अमावस्या है।
"गौ माता की सेवा से आयु, स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। पापों का नाश होता है।" गौ-ग्रास सेवा से सुख-शांति, मंगलमय जीवन, सर्व दोष निवारण का लाभ उठाएँ। गौशाला में गौ दान की सुविधा उपलब्ध है।
श्री प्रभुदत्तजी महाराज
Online गौ सेवा के लिये
(For Income Tax Exemptions u/s 80g)
SHREE KALPAVRUKSHA KAMDHENU WELFARE TRUST
SBI Bank King koti Branch A/c No. 10015542319 IFSC: SBIN0007054
SHRI SADGURU SAMRATH NARAYAN ASHRAM
SBI PPB, Red Hills A/c No. 20100020864 IFSC: SBIN0002790
PAYTM - 9296358630/GOOGLE PAY/PHONE PAY/7013711317
सत्यनारायण गोपाल बल्दवा
ब्रिगेट रोड नं 7, बंजारा हिल्स, हैदराबाद, मोबाईल 9000366660
GB GOPAL BALDAWA GROUP

|| जय गौ माता ||
नारायणी गौ सेवा सदन में आप सभी गौ भक्तों का स्वागत है।
सुन्दरकाण्ड पाठ एवं प्रसादी
स्थान : नारायणी गौ सेवा सदन
संपर्क सूत्र : 6304421076 9246522435 9573888111 9490929321 9346169887
सत्यनारायण गोपाल बल्दवा
ब्रिगेट रोड नं 7, बंजारा हिल्स, हैदराबाद, मोबाईल 9000366660
GB GOPAL BALDAWA GROUP

जय श्री राम : श्री गणेशाय नमः : (स्थापना: दि. 13.01.2010) जय श्री राम
आज रविवार दिनांक 27-04-2025
सतुवाई अमावस्या
स्नानदान श्रा. अमावस्या
यादेवी श्री आईजी गौशाला
शुभस्थल : एन एच 44,मेडचल रोड, कल्लाकल।
गौशाला प्रांगण में भोजन प्रसादी एवं भजनों का कार्यक्रम रहेगा।
अतः आप से निवेदन है कि अधिक संख्या में पधार कर गौ-सेवा कर पुण्य के भागी बने।
सम्पर्क : नारायणलाल :8712311785 , सिरवि वी ताराराम पंवार :9246368842
Gpay / phone pay : 9246368842
CHOUDHARY BROTHERS
HNo : 1-307, NH 44, OPP BUS DEPOT, MEDCHAL
SOHANLAL : 9032160794
BEAUTIFUL HOMES

गावो विश्वस्थ मातर || जय श्री कृष्ण || जय गो माता
श्री गोपाल गौशाला
संत विनोबानगर, रामदास पल्ली के पास, सागर रोड, इब्राहिमपटनम
आज रविवार, 27 अप्रैल 2025 को वैशाखी अमावस्या है।
अमावस्या के उपलक्ष्य में सभी गौ प्रेमियों से विनम्र अनुरोध है कि गौसेवा कर पुण्य के भागी बने और हमें सहयोग राशी इन बैंक खाते में जमा करा सकते है।
प्रसाद की व्यवस्था रहेगी।
विशेष सेवा : गौभक्त अपने जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ, अपने पूज्य एवं प्रियजनों की याद में गौशाला में संपूर्ण एक दिन की सेवा हेतु 21,000/- देकर पुण्य एवं शांति का लाभ लेवे।
अन्य सेवा : एक कट्टा घास् का प्रति दिन एक माह तक 500/-
एक गाय की मासिक सेवा 1100/-
गूड - दलिया या चुन्निभूसा एक दिन की सेवा 3100/-
एक DCM गाडी घॉस या एक समय की संपूर्ण गोवंश की भोजन व्यवस्था 11,000/-
Scan To Pay
SRI GOPAL GOSHALA TRUST MAHESH BANK, VANASTHLIPURAM BRANCH, S/A NO. 025001100001224 IFSC CODE : APMC0000025
निवेदक : श्री गोपाल गौशाला ट्रस्ट (रजि.)
सम्पर्क सूत्र : तुलसीराम बंसल - 9247262215, सतबीर गर्ग - 9346098880, महावीरप्रसाद अग्रवाल - 9246340476, अर्जुन गोयल - 9390389055, विनोद गर्ग (ट्रस्टी-लेखा जोखा) - 9885237833
गोशाला व्यवस्थापक : राणुराम सेपटा - 8019106318, रमेश कावरा - 9290434314 एवं समस्त ट्रस्टीगण

श्री धर्मसाई गौशाला
धर्मगिरी, शमशाबाद, आरआर डिस्ट्रीक तेलंगाना-501218
सस्नेह निमंत्रण
दर्श अमावस्या
आज रविवार, 27 अप्रैल 2025 को वैशाखी अमावस्या है।
गौ माता पूजन : सभी से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर गौ सेवा, दान पूण्य के भागीधार बने
C/o Sree Dharmasai Temple, Dharmagiri, Shashabad
SRI DHARMASAI GOW RAKSHA TRUST
A/c no-922020006836112
AXIS BANK, Shamshabad branch
IFSC code-UTIB0000867
Paytm,GOOGLE PAY, Phone pe:-
9440828585
सत्यनारायण गोपाल बल्दवा
ब्रिगेट रोड नं 7, बंजारा हिल्स, हैदराबाद, मोबाईल 9000366660

कालेश्वरम के मुख्य अभियंता के आवास पर छापेमारी

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) के अधिकारियों ने शनिवार को शैकपेट में कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई योजना (केएलआईएस) के मुख्य अभियंता (ईसीएन) हरिराम के आवास पर छापेमारी की। हरिराम के शेखपेट स्थित आवास और राज्य के अन्य स्थानों पर छापेमारी की जा रही है। यह कार्रवाई कथित तौर पर कालेश्वरम परियोजना से संबंधित एनडीएसए की रिपोर्ट पर आधारित है। एसीबी की टीमें जांच के तहत दस्तावेजों और कंप्यूटरों की गहन जांच कर रही हैं। हरिराम को कालेश्वरम परियोजना के निर्माण में अहम भूमिका निभाने के लिए जाना जाता है।

आज रविवार दि. 27 अप्रेल 2025 अमावस्या है ।
सर्व धर्म प्रेमी समाज- गौ प्रेमी - जीवदया प्रेमी - पर्यावरण प्रेमी - करुणामयी सज्जनों द्वारा निर्मित-संचालित गौनिवास तथा केन्द्र पर आप सभी का हार्दिक स्वागत है ।
पधारकर अपने करकमलों से चारा-दाना अर्पण किजीये ।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् गौनिवास गगनपहाड 6500 से अधिक गौवंश की सुचारु देखभाल सुचारु उपचार के लिए माँ सरस्वती पशु
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् गौसेवा केन्द्र बुरूजुगड्डा के साथ इनके तथा पास पडोस के पशुओं के चिकित्सालय मे उपचार की पूर्ण व्यवस्था है ।
Scan & Pay
SATYAM SHIVAM SUNDARAM GAUNIVAS
#7-4-117/3/1/1, Gagan Pahad, Rajiv Gandhi International Airport Road, R.R. Dist, Hyderabad - 500 052, Telangana,
Cell : 99853 85399, 99894 03635, 94404 37618, 99121 42260 , 92465 22435, 93472 11966, 94412 10591, 94414 22085
Bankers : BANK OF BARODA, Nallakunta Branch, Hyd. , A/c. : 75450200001071 IFSC CODE : BARBOVJNAKU
To Avail 80G/CSR Kindly Donate - AKSHYA PASHU PAKSHI TRUST
Canara Bank - Basheerbagh Branch, Hyd. A/c : 0878132000033, IFSC CODE : CNRB0000878
NAVKAR

सीएम योगी ने पहलगाम हमले के मृतकों को दी श्रद्धांजलि

> कहा-सभ्य समाज में आतंकवाद की जगह नहीं

लखीमपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को लखीमपुर खीरी के पलिया में जनसभा को संबोधित करते हुए आतंकवाद पर जमकर बरसे। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभ्य समाज में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। अराजकता के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। भारत सरकार सुरक्षा, सेवा और सुशासन का मॉडल है, जो विकास, गरीब कल्याण और सबकी सुरक्षा पर आधारित है। अगर कोई सुरक्षा में सेंध लगाने का दुस्साहस करेगा तो उसके लिए जीरो टॉरलेंस की नीति के तहत कड़ा जवाब देने को भारत तैयार है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह नया भारत किसी को छेड़ता नहीं है। अगर किसी ने छेड़ा है तो उसे छोड़ेगा भी नहीं। उन्होंने कहा कि जीरो टॉरलेंस नीति के तहत उत्तर प्रदेश को माफियामुक्त किया। अराजकता और दंगों से मुक्त किया। यूपी को देश की अग्रणी अर्थव्यवस्था के तौर पर लाकर खड़ा कर दिया है। आज यहां तेजी से विकास हो रहा है।

सपा और कांग्रेस पर साधा निशाना

सीएम योगी ने अपनी सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस जाति के नाम समाज को बांटने का काम कर रही है। समाजवादी पार्टी एक तरफ छत्रपति शिवाजी महाराज और राणा सांगा का अपमान करती है। दूसरी तरफ क्रूर शासक औरंगजेब और बाबर का महिमा मंडन करती है। मुख्यमंत्री योगी ने जनसभा से पहले पलिया में शारदा नदी के चैनलाइजेशन कार्य का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने मोटरबोट पर सवार होकर बाढ़ से बचाव के लिए कराए जा रहे कार्यों को बारीकी से देखा। अफसरों से चैनलाइजेशन कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी ली।

योगी सरकार टैरिफ वॉर को अवसर बनाएगी

लखनऊ, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। अमेरिका (यूएसए) और चीन के बीच जारी टैरिफ वॉर को योगी सरकार खुद के लिए अवसर बनाने की तैयारी कर रही है। वैसे तो दुनिया के दो शक्तिशाली देशों के बीच अपने-अपने वर्चस्व के लिए शुरू हुआ टैरिफ वॉर पूरे देश के लिए एक मौका है। लेकिन, योगी सरकार की कानून-व्यवस्था, वैश्विक स्तर की बुनियादी सुविधाओं (एक्सप्रेसवे, सामान्य एवं इंटरनेशनल एयरपोर्ट, अंतरराज्यीय जलमार्ग) का विस्तार, भरपूर मानव संसाधन के चलते सस्ता श्रम, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) को बढ़ावा देने के कारण उत्तर प्रदेश की संभावनाएं अन्य राज्यों की तुलना में बढ़ जाती हैं। सरकार इन संभावनाओं को हकीकत में बदलने का हरसंभव प्रयास भी कर रही है। सरकार नई निर्यात नीति लाने जा रही है। इसमें इन्वेस्ट यूपी को और प्रभावी एवं पारदर्शी बनाया जाएगा। उत्तर प्रदेश के उत्पादों की देश-दुनिया में ब्रांडिंग के लिए सरकार ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में इंटरनेशनल ट्रेड शो भी आयोजित करती है।

गर्भवती महिला समेत चार की मौत

मिर्जापुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। सोनभद्र के लोढ़ी अस्पताल से शनिवार की सुबह गर्भवती महिला को एंबुलेंस से बनारस ले जाते समय रास्ते में अहरौरा-वाराणसी सवार नगर मार्ग पर ओवर ब्रिज के पास गिट्टी लदा ट्रक एम्बुलेंस पर पलट गया। हादसे में एंबुलेंस सवार गर्भवती महिला समेत चार लोगों की मौत हो गई। दो लोग घायल हो गए। जानकारी के अनुसार, सोनभद्र के लोढ़ी अस्पताल से गर्भवती महिला को रेफर किया गया था। गर्भवती महिला के परिवार के तीन सदस्य एंबुलेंस में बैठे थे। एंबुलेंस चालक अपने एक साथी के साथ सभी को लेकर बनारस अस्पताल जा रहा था। सोनभद्र के क्रशर प्लांट से गिट्टी लोड कर वाराणसी की ओर तेज रफ्तार से जा रहा ट्रक शनिवार की सुबह ओवर ब्रिज के पास अनियंत्रित एंबुलेंस के ऊपर पलट गया। लोग ट्रक पर लदे गिट्टी के नीचे मलबे में दब गए। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस बचाव तथा राहत कार्य में जुटी गई।

एकता और विचारों से भाजपा के दुष्प्रचार का मुकाबला करें : तेजस्वी यादव

पटना, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। राजद नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने पटना में पार्टी के प्रदेश कार्यालय के कर्पूरी सभागार में एक समीक्षा बैठक को संबोधित किया। उन्होंने सभी पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं को लालू प्रसाद यादव के विचारों से प्रेरित होकर गरीबों, दलितों, पिछड़ों, अति पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के हित हाशिए के समुदायों से गहराई से जुड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पार्टी की जिम्मेदारियों को सभी स्तरों पर पूर्ण समर्पण, ईमानदारी और स्पष्ट प्रतिबद्धता के साथ पूरा किया जाना चाहिए।

तेजस्वी यादव ने कहा, भाजपा और एनडीए हमेशा अफवाहें फैलाते हैं, ऐसे में संगठनात्मक मजबूती और विचारों के प्रति प्रतिबद्धता उनके दुष्प्रचार का मुकाबला करने का एकमात्र साधन है। उन्होंने पार्टी नेताओं से भाजपा के नफरत भरे माहौल का सकारात्मकता के साथ मुकाबला करने की बात कही। साथ ही बिहार में सरकार की विफलताओं और संस्थागत भ्रष्टाचार को उजागर करने की अपील की। उन्होंने कहा, हमें नफरत का मुकाबला एकता से और अफवाहों का मुकाबला विचारों से करना चाहिए। हमें लोगों से सीधे जुड़ना होगा और जनता के वास्तविक मुद्दों को समझना होगा। लालू प्रसाद के नेतृत्व, एकता, सामाजिक न्याय और सद्भाव के प्रति प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए तेजस्वी यादव ने पार्टी सदस्यों से उनकी विरासत और मूल्यों को आगे बढ़ाने का भी आग्रह किया। तेजस्वी यादव ने इस बात पर जोर देते हुए अपने भाषण को समाप्त किया कि जनता का विश्वास राजद के प्रति बढ़ रहा है और प्रत्येक नेता का यह कर्तव्य है कि वह ईमानदारी से काम करें और जनता का भरोसा हासिल करें। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 से पहले समीक्षा बैठकें जमीनी स्तर पर पार्टी की उपस्थिति को मजबूत करने और एनडीए को कड़ी टक्कर देने की राजद की योजना का हिस्सा थीं।

इस मौके पर राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानंद तिवारी, उदय नारायण चौधरी, अब्दुल बारी सिद्दीकी, मंगनीलाल मंडल, अली अशरफ फातमी, अवध बिहारी चौधरी, कांति सिंह, मनोज कुमार झा, संजय यादव, अभय कुमार सिंह कुशवाहा, झारखंड सरकार के मंत्री संजय यादव, शिवचंद्र राम, अशोक कुमार सिंह, रणविजय साहू समेत पार्टी के जिला अध्यक्ष, जिला प्रधान महासचिव, जिला प्रभारी, सभी प्रकोष्ठों के प्रदेश अध्यक्ष और प्रवक्ता भी मौजूद रहे।

वाराणसी पुलिस ने शॉर्ट टर्म वीजा वाले पाकिस्तानी नागरिक को भेजा वापस

वाराणसी, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद केंद्र सरकार ने सख्त रुख अपनाते हुए पाकिस्तानी नागरिकों को भारत से वापस भेजने के निर्देश दिए। केंद्र के निर्देश के बाद वाराणसी पुलिस ने कार्रवाई करते हुए शॉर्ट टर्म वीजा पर रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों को वापस पाकिस्तान भेज दिया है। वाराणसी पुलिस के अनुसार, शहर में कुल 10 पाकिस्तानी नागरिक रह रहे हैं। इनमें से 9 के पास लॉन्ग टर्म वीजा है जबकि एक व्यक्ति शॉर्ट टर्म वीजा पर रह रहा था। सरकार के ताजा निर्देशों के बाद शॉर्ट टर्म वीजा धारक पाकिस्तानी नागरिक को तुरंत शिवगंगा ट्रेन से दिल्ली रवाना किया गया, वहां से उसे वाघा बॉर्डर होते हुए पाकिस्तान भेजा जाएगा।

पुलिस ने बताया कि पाकिस्तानी नागरिक, जिस घर में रह रहा था, उस परिवार के एक सदस्य और पुलिस के एक जवान को भी साथ में भेजा गया है। इसके अलावा, फिलहाल जिन 9 पाकिस्तानी नागरिकों के पास लॉन्ग टर्म वीजा है, उनके लिए केंद्र सरकार की ओर से कोई नया निर्देश नहीं आया है, लेकिन पुलिस सतर्क है और उन पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। वाराणसी पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल ने कहा कि जैसे ही हमें जानकारी मिली कि भारत सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द करने का फैसला लिया, हमने उसी दिन से वाराणसी में रह रहे सभी पाकिस्तानी नागरिकों पर कड़ी निगरानी शुरू कर दी। यहां दस पाकिस्तानी नागरिक थे, जिनमें नौ लॉन्ग टर्म वीजा पर और एक 45 दिन के शॉर्ट टर्म वीजा पर था। शुक्रवार को शासनादेश मिलने के बाद, शुक्रवार रात शॉर्ट टर्म वीजा धारक को वाराणसी की सीमा से बाहर कर दिया गया। उन्हें रात की ट्रेन से दिल्ली भेजा गया, साथ में एक पुलिसकर्मी भी गया। उन्होंने आगे कहा कि वहां से वह अमृतसर के रास्ते वाघा बॉर्डर से देश से बाहर भेजे जाएंगे।

पूर्व जिला पंचायत सदस्य की हत्या

फिरोजाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। फिरोजाबाद के टूंडला में पुरानी रंजिश को लेकर कुछ लोगों ने पूर्व जिला पंचायत सदस्य की दिन-दहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर हत्यारोपियों की तलाश शुरू कर दी है। वहीं शव उठाने को लेकर आक्रोशित ग्रामीणों ने पुलिस गाड़ी पर पथराव कर दिया। थाना क्षेत्र के गांव मोहम्मदाबाद निवासी पप्पू कुशवाहा पूर्व जिला पंचायत सदस्य था। गांव के एक परिवार से उनकी रंजिश चल रही थी। शनिवार सुबह 10.15 बजे करीब वह घर निकले तभी पहले से घात लगाए बैठे लोगों ने उन पर गोलियां बरसा दी। नतीजन उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस हत्यारोपियों की तलाश कर रही है। इस बीच पुलिस ने शव उठाने का प्रयास किया तो ग्रामीणों में आक्रोश छा गया। ग्रामीणों ने पुलिस की गाड़ी पर पथराव कर दिया। घटना से गांव में अफरा तफरी का मौहल है।

बच्ची से दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार

पहले भी दे चुका है कई घटनाओं को अंजाम

वैशाली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। वैशाली जिले के बालीगांव थाना क्षेत्र में पिछले दिनों एक सात वर्षीय बच्ची के साथ हुए दुष्कर्म मामले में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। व्यक्ति पड़ोसी बताया गया है, जिसे पुलिस गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। बताया गया कि घटना तब हुई, जब बच्ची 10 रुपये घर से लेकर घर के ही पास दुकान में बिस्किट खरीदने जा रही थी।

उसी समय आरोपी द्वारा नाबालिग को अपहरण कर लिया गया और उसका मोबाइल छीन कर पड़ोस के ही मक्के के खेत में फेंक दिया गया। उसके बाद आरोपी के द्वारा बच्ची के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया है। बहुत देर तक जब बच्ची बिस्किट लेकर अपने घर नहीं लौटी तो परिवार वाले आसपास खोजबीन शुरू किए। इसके बाद बच्ची को बेहोशी की हालत में परिवार वालों ने बरामद किया। वहीं, तुरंत बच्ची को स्थानीय अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया, जहां पर डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए हाजीपुर सदर अस्पताल में रेफर कर दिया। जहां पर डॉक्टर के द्वारा बच्ची का इलाज किया गया है। इसकी सूचना स्थानीय थाने को दी गई। स्थानीय थाने के पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल में लग गई और दुष्कर्म की घटना को लेकर एफआईआर भी दर्ज कर लिया है। इसी दौरान पूरे मामले की जांच के दौरान आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया और पूछताछ में घटना के बारे में स्वीकार किया है। कोई गिरफ्तार आरोपी के बारे में बताया गया कि इससे पहले भी घटना को गांव में ही अंजाम दे चुका है। आरोपी साल 2013 में पड़ोसी के साली के साथ भी छेड़खानी की घटना को अंजाम दिया था। उस समय स्थानीय लोगों के द्वारा पंचायत कर पूरे मामले को समझौता करवा दी गई थी। लेकिन 2014 में एक बच्ची के साथ छेड़खानी किया था। उस मामले में पुलिस ने जेल भेज दिया था। आरोपी शादीशुदा है, एक बेटी दो बेटी हैं। बड़ी बेटी की शादी दो साल पहले कर चुका है।

रिटायर्ड डीएसपी के बेटे ने की खुदकुशी

पटना, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पटना में सेवानिवृत्त डीएसपी के बेटे ने सुसाइड कर लिया है। उसने सिर में गोली मारकर जान दे दी। घटना कोतवाली थाना क्षेत्र इलाके के कौशल्या अपार्टमेंट में हुई। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। आसपास के लोगों की भीड़ जुट गई। इधर, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन में जुट गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृत युवक की पहचान नीरज कुमार के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि नीरज अपने परिवार के साथ कौशल्या अपार्टमेंट में रहता था। पिछले कुछ दिनों नीरज को उसकी पत्नी के बीच विवाद चल रहा था। इससे तंग आकर उसने खुदकुशी कर ली।

सीएम नीतीश ने अधिवक्ता समागम का किया उद्घाटन

पटना, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को जदयू पार्टी कार्यालय स्थित कर्पूरी सभागार में बिहार जदयू विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित अधिवक्ता समागम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी लोगों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं। बहुत खुशी की बात है कि हाल ही में जदयू विधि प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। उन्होंने कहा, मुझे पूरा विश्वास है कि विधि प्रकोष्ठ के अधिवक्ता साथी पार्टी को मजबूती प्रदान करेंगे। आप सब न्याय के साथ विकास के सरकार के संकल्प को जमीन पर क्रियान्वित करने में सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में पूरी मजबूती के साथ पार्टी को जीत दिलाने में आप लोग अपना पूरा योगदान देंगे। आप सबसे आग्रह है कि पूरी ताकत से एकजुट होकर काम करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम लोगों ने समाज के सभी वर्गों एवं राज्य के सभी क्षेत्रों के विकास के लिये काम किया है। महिलाओं के उत्थान के लिये काफी कार्य किया गया है। हम शुरू से एनडीए के साथ रहे हैं, बीच में हम उधर चले गये थे। लेकिन अब कहीं नहीं जायेंगे, एनडीए के साथ ही रहेंगे। हम लोग एनडीए के सभी साथी एकजुट होकर बिहार विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिये आप सभी को धन्यवाद देता हूं। इस अवसर पर जदयू के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय कुमार झा, जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, ऊर्जा सह योजना एवं विकास मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव, ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी, शिक्षा मंत्री सुनील कुमार, विधान पार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी, विधान पार्षद ललन सर्राफ, जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा, पूर्व मंत्री श्याम रजक, जदयू विधि प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. आनंद कुमार सहित सभी जिलों से आये हुये बड़ी संख्या में अधिवक्तागण एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विवाद सुलझाने गए नीतीश सरकार के अधिकारी पर जानलेवा हमला

बेगूसराय, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। बेगूसराय के लरुआरा में पंचायत सरकार भवन निर्माण के क्रम में बिहार सरकार की सत्ताधारी दल जदयू विधायक के सामने ही बिहार सरकार के अधिकारी पर हमला हो गया। हालांकि अब पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पर, सियासी गलियारे में इस घटना की चर्चा जोरों पर है। इतना ही जिस पंचायत में भवन निर्माण को लेकर वाद विवाद पैदा हुआ उस पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि भी जदयू के प्रदेश महासचिव हैं।

दरअसल, सदर प्रखंड के लडवारा पंचायत में पंचायत सरकार भवन निर्माण को लेकर कई महीनो से प्रक्रिया चल रही है। लेकिन, लरुआरा पंचायत के ही एक दबंग परिवार द्वारा इसका विरोध किया जा रहा था।

बिहार में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान कर भेजेंगे वापस

डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी का ऐलान

पटना, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद देशभर में सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर हैं। इसी बीच बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने आजतक से खास बातचीत में बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि बिहार में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान कर उन्हें हर हाल में वापस उनके देश भेजा जाएगा। सम्राट चौधरी ने साफ कहा कि केंद्र सरकार के निर्देश पर बिहार सरकार लगातार काम कर रही है।

डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने कहा कि पाकिस्तान के नागरिकों को अब किसी भी कीमत पर राज्य में रहने की इजाजत नहीं दी जाएगी। उनकी पहचान कर आवश्यक प्रक्रिया के तहत उन्हें उनके देश भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि देश बचेगा तभी राजनीति होगी। हमारी प्राथमिकता देश की अखंडता और सुरक्षा है, राजनीति बाद में आती है। पहलगाम हमले में 26 लोगों की मौत के बाद देशभर में पाकिस्तान के खिलाफ गुस्सा है। इस संदर्भ में जब विपक्षी दलों द्वारा निकाले जा रहे कैंडल मार्च पर सवाल पूछा गया, तो सम्राट चौधरी ने कहा कि इस समय हर किसी को राजनीति से ऊपर उठकर देश के लिए एकजुट होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह समय राजनीतिक बयानबाजी का नहीं, बल्कि ठोस कार्रवाई का है। हम सबको देश की सुरक्षा के लिए एकजुट रहना चाहिए। डिप्टी सीएम ने यह भी कहा कि राज्य सरकार केंद्र के साथ मिलकर एक समन्वय योजना पर काम कर रही है। बिहार सरकार का यह कदम आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षा के खिलाफ जारी मुहिम में महत्वपूर्ण है। आने वाले दिनों में राज्य में रहने वाले पाकिस्तानी नागरिकों के दस्तावेजों की सख्त जांच और वेरिफिकेशन अभियान शुरू किया जाएगा।

देवबंद में बड़ा हादसा : पटाखा फैक्टरी में विस्फोट

धमाकों से दहला क्षेत्र, तीन युवकों की मौत की पुष्टि

सहारनपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। देवबंद में शनिवार सुबह करीब 6:00 बजे एक पटाखा फैक्टरी में जोरदार विस्फोट हुआ। इस धमाके से इलाके में अफरा-तफरी मच गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, विस्फोट के समय फैक्टरी के अंदर कई लोग मौजूद थे, हादसे में तीन युवकों की मौत हुई है। डीएम मनीष बंसल ने तीन लोगों के मरने की पुष्टि की है। इसमें राहुल उर्फ काका (24) पुत्र रामकुमार निवासी फतेहपुर गांव, विशाल(25) पुत्र संदीप कुमार निवासी गुनारसा गांव और विकास(19) पुत्र राजबल निवासी जड़ौदा जट शामिल है। उधर, ग्रामीणों ने जाम लगा दिया है। ग्रामीणों का आरोप है कि हादसे में तीन हिंदू युवकों की मौत हुई है, जबकि वहां पर मुस्लिम युवक भी काम करते थे। उन्हें कुछ क्यों नहीं हुआ।पुलिस-प्रशासनिक अधिकारी ग्रामीणों को समझाने पर जुटे हुए हैं। हाईवे पर कई किलोमीटर लंबा जाम लगा है। विस्फोट की सूचना मिलते ही जिलाधिकारी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मौके पर पहुंचे और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया। फैक्टरी में आग लगने के बाद दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है। प्रशासन घटना के कारणों की जांच कर रहा है। वहीं मौके पर भारी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए हैं।

जूस पी रहे युवक को मारी गोली

आगरा, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। आगरा के सिकंदरा थाना क्षेत्र देवी राम फूड सर्कल के सामने दो बाइक सवार युवकों ने राहगीर को गोली मार दी। इसके बाद फरार हो गए। आसपास में इलाके में सनसनी फैल गई। घायल युवक को पुलिस ने इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया है। बिचपुरी निवासी मिलन 20 मजदूरी करते थे। शनिवार सुबह वह देवीराम फूड सर्कल के सामने गन्ने के जूस की रेड़ी पर जूस पीने आया था।

पुलिस मुठभेड़ में दो इनामी लुटेरों को लगी गोली

हाथरस, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश की हाथरस पुलिस और स्वाट टीम ने सादाबाद क्षेत्र में लूट की वारदातों को अंजाम देने वाले दो इनामी बदमाशों को मुठभेड़ के बाद पकड़ लिया। इस मुठभेड़ में दोनों बदमाश घायल हो गए। पुलिस ने उनके कब्जे से 19,500 रुपये नकद, तमंचे, कारतूस और एक मोटरसाइकिल बरामद की है। दोनों बदमाशों पर 25-25 हजार रुपये का इनाम था।

हाथरस के अपर पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार ने बताया कि सादाबाद क्षेत्र में शादी समारोहों के दौरान रुपये और आभूषणों की लूट की घटनाएं बढ़ रही थीं। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि 25 हजार रुपये के इनामी बदमाश प्रवीण त्यागी और शेर खान उर्फ अंशु फिर से लूट की साजिश रच रहे हैं। इस सूचना के आधार पर सादाबाद कोतवाली पुलिस और स्वाट टीम ने बीजलपुर रोड पर चेकिंग शुरू की।

'मैं भारत की बहू, मुझे यहीं रहने दीजिए'

सीमा हैदर ने पीएम मोदी और सीएम योगी से लगाई गुहार

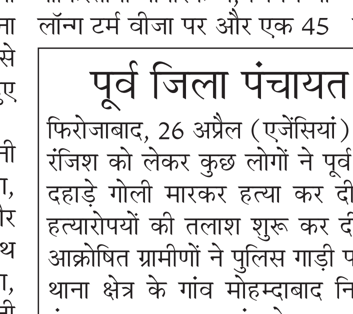

नोएडा, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। सीमा हैदर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उसे भारत में रहने देने की गुहार लगाई है। सीमा ने अपील करते हुए कहा कि वह बेशक पाकिस्तान की बेटी थी लेकिन अब वह भारत की बहू है और उन्हें भारत में रहने की इजाजत दी जाए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर शेयर किए जा रहे एक वीडियो में सीमा हैदर ने यह बातें कही हैं।

दरअसल, पहलगाम में आतंकी हमले में 26 पर्यटकों की मौत के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ एक बड़ा और कड़ा फैसला लेते हुए सार्क वीजा छूट की नीति के तहत पाकिस्तानी नागरिकों को दी जा रही सुविधा समाप्त कर दी है। इस निर्णय के अनुसार अब पाकिस्तानी नागरिक इस छूट के अंतर्गत भारत की यात्रा नहीं कर सकेंगे। वहीं, जो पाकिस्तानी नागरिक पहले से इस सुविधा के तहत भारत में मौजूद हैं। उन्हें एक सप्ताह के भीतर देश छोड़ने का आदेश दिया गया है। जिसके बाद सीमा हैदर को वापस पाकिस्तान भेजने की मांग की जा रही है। सीमा हैदर ने एक वीडियो में कहा, 'मैं पाकिस्तान नहीं जाना चाहती। मैं मोदी जी और योगी जी से अपील करती हूं कि मैं अब उनकी शरण में हूं। मैं पाकिस्तान की बेटी थी, लेकिन अब मैं भारत की बहू हूं। मुझे यहीं रहने दीजिए।' हैदर का दावा है कि सचिन मीना से शादी के बाद उसने हिंदू धर्म अपना लिया है।

सीमा हैदर की कहानी सोशल मीडिया से लेकर समाचार चैनलों तक में पहले भी सुर्खियों में रह चुकी है। वह ऑनलाइन गेम पब्जी के जरिए ग्रेटर नोएडा के रहने वाले सचिन मीणा से जुड़ीं और दोनों के बीच प्रेम संबंध बन गए। इसके बाद सीमा अपने चार बच्चों के साथ नेपाल के रास्ते भारत आ गईं। अब वह सचिन के साथ नोएडा में रह रही हैं और हाल ही में दोनों को एक बच्चा भी हुआ है। देशव्यापी विरोध के बावजूद सीमा हैदर के वकील एपी सिंह को उम्मीद है कि उन्हें भारत में रहने की अनुमति दी जाएगी। एपी सिंह ने दावा किया कि वह अब पाकिस्तानी नागरिक नहीं हैं। अधिवक्ता एपी सिंह ने कहा, सीमा अब पाकिस्तानी नागरिक नहीं है। उसने ग्रेटर नोएडा निवासी सचिन मीना से विवाह किया और हाल ही में उनकी बेटी भारती मीना को जन्म दिया। उसकी नागरिकता अब उसके भारतीय पति से जुड़ी हुई है और इसलिए केंद्र का निर्देश उस पर लागू नहीं होना चाहिए।

सीमा हैदर के वकील एपी सिंह ने कहा कि पहलगाम हमले की जानकारी होने पर सीमा बहुत परेशान और

गुजरात में 500 से ज्यादा बांग्लादेशी डिटेन

अहमदाबाद में चंदोला तालाब से 457 घुसपैठिये पकड़ाए

अहमदाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। गुजरात में गैरकानूनी रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ सबसे बड़ी कार्रवाई की गई है। अहमदाबाद पुलिस ने 457 और सूरत पुलिस ने 120 बांग्लादेशी नागरिकों को डिटेन किया है। इन्हें अहमदाबाद के चंदोला तालब में देर रात कॉम्बिंग ऑपरेशन करके डिटेन किया गया है। पिछले कुछ सालों से चंदोला तालाब गैरकानूनी रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों का बड़ा सेंटर बन गया था। पिछले एक साल में अहमदाबाद क्राइम ब्रांच ने इनके खिलाफ अभियान छेड़ते हुए इनकी गैरकानूनी गतिविधियों पर नकेल कसी है और इन्हें डिटेन करके डिपोर्ट करना भी शुरू किया है। पिछले साल भी पुलिस ने 127 बांग्लादेशी नागरिकों को चंदोला तालाब से डिटेन किया था। गुजरात पुलिस के अनुसार अहमदाबाद और सूरत में जाली दस्तावेजों के साथ भारत में रहने वाले बांग्लादेश के 550 से अधिक अवैध अप्रवासियों को हिरासत में लिया गया। अधिकारी ने कहा कि सत्यापन और पूछताछ पूरी होने के बाद निर्वासन की कार्यवाही की जाएगी। समन्वित अभियान का नेतृत्व विशेष अभियान समूह (एसओजी), अपराध शाखा , मानव तस्करी निरोधक इकाई (एएचटीयू), अपराध निरोधक शाखा (पीसीबी) और स्थानीय पुलिस टीमों सहित कई कानून प्रवर्तन इकाइयों द्वारा किया गया।

फर्जी कागज के दम पर बनाए घर

अधिकारियों ने पुष्टि की कि हिरासत में लिए गए सभी व्यक्ति वैध दस्तावेजों के बिना भारत में थे और उन्होंने निवास स्थापित करने के लिए नकली कागजात का इस्तेमाल किया था। सूरत में , एसओजी , डीसीबी, एएचटीयू, पीसीबी और स्थानीय पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से रात भर चलाए गए तलाशी अभियान के परिणामस्वरूप 100 से अधिक बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया। विशेष अभियान समूह के पुलिस उपायुक्त राजदीप सिंह नकुम ने कहा वे अवैध रूप से भारत में घुसे थे और जाली दस्तावेजों के साथ सूरत में रह रहे थे। जांच के बाद, उन्हें बांग्लादेश भेज दिया जाएगा।

शनिवार तड़के शुरू किया अभियान

शनिवार को सुबह करीब 3 बजे अहमदाबाद में एक साथ अभियान चलाया गया। क्राइम ब्रांच , एसओजी , आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू), जोन 6 और मुख्यालय की टीमों ने अवैध अप्रवासी होने के संदेह में 450 से अधिक व्यक्तियों को हिरासत में लिया। डीसीपी क्राइम ब्रांच अजीत राजियन ने पुष्टि की कि सुबह-सुबह की गई छापेमारी के दौरान 400 से अधिक लोगों को हिरासत में लिया गया। अहमदाबाद की क्राइम ब्रांच के संयुक्त पुलिस आयुक्त शरद सिंघल ने कहा कि गृह मंत्री, पुलिस आयुक्त और पुलिस महानिदेशक के आदेशों के अनुपालन में ये कार्रवाई की गई। उन्होंने कहा, गृह मंत्री, पुलिस आयुक्त और डीजीपी ने हमें निर्देश दिया था कि अवैध अप्रवासियों को पकड़ा जाना चाहिए। क्राइम ब्रांच ने अप्रैल 2024 से अब तक दो एफआईआर दर्ज की हैं। 127 अवैध बांग्लादेशियों को पकड़ा गया और 77 को निर्वासित किया गया।

खुफिया रिपोर्ट के आधार पर छापेमारी

सिंघल ने कहा कि अहमदाबाद में नवीनतम छापेमारी खुफिया रिपोर्टों पर आधारित थी, जिसमें चंदोला क्षेत्र में बड़ी संख्या में अवैध अप्रवासियों के होने का संकेत दिया गया था। हमें इनपुट मिले थे कि चंदोला क्षेत्र में बड़ी संख्या में बांग्लादेशी रह रहे हैं। उन्होंने कहा, इलाके में आज सुबह पुलिस ने तलाशी अभियान चलाया। हमने अब तक 457 लोगों को हिरासत में लिया है। पूछताछ के बाद निर्वासन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

पराली जलाने के मामलें बढ़ें: अप्रैल में 83,659 आग की घटनाएं, 90% पराली से जुड़ी, भोपाल संभाग टॉप पर

भोपाल, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। गेहूं उत्पादन में मध्य प्रदेश का देश में दूसरा स्थान है, लेकिन फसल की कटाई के बाद खेतों में पराली जलाने में मध्य प्रदेश टॉप पर है। यह बहुत चिंता की बात है। मध्य प्रदेश पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार 1 अप्रैल से 24 अप्रैल 2025 के बीच प्रदेश में आग की 83,659 घटनाएं दर्ज की गई हैं। इनमें से 90 प्रतिशत पराली जलाने के मामले हैं। प्रदेश में सबसे ज्यादा आग की घटनों में भोपाल संभाग 20 हजार से ज्यादा मामलों के साथ टॉप पर है। यहां पर भी रायसेन जिला और विदिशा जिले में सबसे ज्यादा मामले सामने आए हैं। सरकार ने पराली जलाने पर रोक लगाने के साथ कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। जिलों में कलेक्टर जुर्माना के साथ ही एफआईआर तक की कार्रवाई कर रहे है। इसके बावजूद पराली जलाने के मामले कम नहीं हो रहे है, जिसका सीधा असर वायु गुणवत्ता पर पड़ रहा है।

एंटी रेबीज वैक्सीन लगने के 15 दिन बाद बच्ची की अमेरिका में मौत

पीजीआई रोहतक में लगी थी डोज, जांच शुरू

रोहतक, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। एंटी रेबीज वैक्सीन लगने के करीब 15 दिन बाद आठ वर्षीय बच्ची की अमेरिका में मौत हो गई। पीजीआई रोहतक में लगी इस वैक्सीन के बारे में अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन की चिट्ठी आने के बाद केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने जांच बैठा दी है। टीम ने मरीजों को लगाई जा रही वैक्सीन के बॉक्स सील कर दिया है। जांच से पीजीआई में खलबली मच गई है। शहर की श्रीनगर कॉलोनी निवासी यशदीप ने बताया कि उनकी बेटी दिशा 10 मार्च को गली में खेल रही थी, तभी उसके गाल व होंठ पर कुत्ते ने काट लिया। उसे पीजीआई लेकर पहुंचे, जहां आपातकालीन विभाग में एंटी रेबीज वैक्सीन लगाई गई। इसका दूसरा डोज 15 मार्च व तीसरा 17 मार्च को दिया गया। 21 मार्च को बच्ची सपरिवार अमेरिका घूमने चली गई। वहां पहुंचने के दो दिन बाद बुखार आ गया। अस्पताल में भर्ती कराने के कुछ घंटे बाद सांस फूलने लगी। उसे आईसीयू में शिफ्ट कराना पड़ा। मगर, हालत बिगड़ती चली गई और पांच दिन बाद बच्ची की मौत हो गई।

बच्ची के दिमाग में एंटी रेबीज वैक्सीन के मिले अंश

चिकित्सकों ने मौत के कारणों का पता लगाने के लिए शव का पोस्टमार्टम किया तो उसके दिमाग में एंटी रेबीज वैक्सीन के अंश मिले। इसके बाद नई बीमारियों को फैलने से रोकने और उनसे बचाव के लिए काम करने वाले अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने भारत सरकार को जांच कराने के लिए लिखा। स्वास्थ्य विभाग की टीम 20 अप्रैल को पीजीआई पहुंची और वैक्सीन की एक्सपायरी समेत अन्य रिकॉर्ड की जांच की। टीम ने वैक्सीन बॉक्स सील कर दिया है।

'2034 तक सीएम रहेंगे फडणवीस'

बावनकुले की इस टिप्पणी पर एकनाथ शिंदे ने एक शब्द में दिया जवाब

मुंबई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री और बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि देवेंद्र फडणवीस राज्य के अब तक के 'सबसे बेहतरीन मुख्यमंत्री' हैं और वे 2034 तक इस पद पर बने रहेंगे। मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में बोलते हुए बावनकुले ने कहा कि देवेंद्र फडणवीस ने 'विकसित महाराष्ट्र' का जो संकल्प तैयार किया है, उसे पूरा करने के लिए अगले 9 साल तक उनके नेतृत्व की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, 'देवेंद्र फडणवीस 2034 तक मुख्यमंत्री बने रहेंगे क्योंकि उन्होंने 'विकसित महाराष्ट्र' का रोडमैप तैयार किया है। वह महाराष्ट्र के अब तक के सबसे बेहतरीन मुख्यमंत्री हैं।' चंद्रशेखर बावनकुले ने महाराष्ट्र की लंबे समय तक चलने वाली विकास योजना का जिक्र करते हुए कहा कि फडणवीस की निरंतर नेतृत्व क्षमता उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए अनिवार्य है। उन्होंने कहा, 'हमारे पास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रूप में केंद्र में और फडणवीस के रूप में राज्य में दोहरे इंजन की सरकार है। इस दोहरे नेतृत्व से महाराष्ट्र एक विकसित राज्य बनेगा। उन्होंने पार्टी और राज्य के लोगों से एकजुट होकर फडणवीस के नेतृत्व में आगे बढ़ने का आह्वान किया। बावनकुले बोले, हमें एकजुट होकर फडणवीस के पीछे खड़ा रहना चाहिए ताकि यह सपना साकार हो सके।

एकनाथ शिंदे ने दी ये प्रतिक्रिया

जब पत्रकारों ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से बावनकुले की इस टिप्पणी पर प्रतिक्रिया मांगी, तो शिंदे ने संक्षिप्त रूप से कहा, 'शुभकामनाएं।' शिंदे शिवसेना के प्रमुख हैं, जो बीजेपी के नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन का हिस्सा है। वे जून 2022 से नवंबर 2024 तक मुख्यमंत्री रहे, जिसके बाद महायुति की चुनावी जीत के बाद फडणवीस ने मुख्यमंत्री पद संभाला। वहीं, बावनकुले की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवसेना नेता रामदास कदम ने कहा, 'अगर फडणवीस 2080 तक भी मुख्यमंत्री बने रहते हैं, तो हमें कोई आपत्ति नहीं है' हमारी शुभकामनाएं फडणवीस, बावनकुले और एकनाथ शिंदे- तीनों के साथ हैं। हम सब साथ हैं। कोई भी अगर हमारे बीच फूट डालने की कोशिश करता है तो वह सफल नहीं होगा।

बाइक पर पटाखों से भरी बोरी ले जा रहे थे युवक अचानक हुआ विस्फोट, दो नाबालिग समेत चार की मौत

सलेम, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। तमिलनाडु के सेलम जिले के कंजनाइकेनपट्टी गांव में दर्दनाक हादसा हुआ। गांव के मंदिर उत्सव के लिए बाइक पर पटाखों से भरी बोरी ले जाते वक्त अचानक विस्फोट हो गया। हादसे में दो नाबालिग समेत चार लोगों की मौत हो गई। इनमें तीन लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। जबकि चौथे की अस्पताल में मौत हुई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने चार लोगों की मौत पर शोक जताया है। साथ ही प्रभावित परिवारों को तीन-तीन लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की। पुलिस ने बताया कि द्रौपदी अम्मन मंदिर में उत्सव के दौरान फोड़ने के लिए एक दोपहिया वाहन पर बोरी में भरकर ले जाए जा रहे पटाखों के बंडल में शुक्रवार रात को कंजनाइकेनपट्टी गांव के पूसारीपट्टी बस स्टैंड के पास आग लग गई और वह फट गया। पुलिस ने बताया कि जब एक व्यक्ति ने पटाखों का परीक्षण करने का प्रयास किया तो पूरी बोरी जल उठी। दुर्घटना मंदिर से करीब एक किलोमीटर दूर हुई। मंदिर पर बड़ी संख्या में लोग उत्सव के लिए एकत्र हुए थे। मृतकों की पहचान कोट्टामेडु, कंजनाइकेनपट्टी निवासी सेल्वराज (29) और गुरुवल्लियुर निवासी 11 वर्षीय दो लड़कों के रूप में हुई है। जबकि एक युवक की सलेम सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मौत हो गई। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा कि यह दुखद समाचार सुनकर मुझे गहरा सदमा लगा है। मैं उन परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करता हूं, जिन्होंने अपने परिजनों को खो दिया है। उन्होंने मुख्यमंत्री जन राहत कोष से मृतकों के परिवारों को तीन-तीन लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की। एआईएडीएमके महासचिव एडप्पादी के पलानीस्वामी ने कहा कि कंजनाइकेनपट्टी गांव में एक मंदिर उत्सव के दौरान पटाखा दुर्घटना में चार लोगों की दुखद मौत की खबर बहुत चौंकाने वाली और दर्दनाक है। मैं मृतकों के परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करता हूं। उन्होंने आरोप लगाया कि डीएमके सरकार के तहत ऐसी दुर्घटनाएं बार-बार हो रही हैं। मंदिर उत्सवों के दौरान उचित प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया गया और उचित सुरक्षा प्रदान नहीं की गई। उन्होंने राज्य सरकार से राहत राशि बढ़ाने तथा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उचित कदम उठाने की मांग की।

सैलरी कटने से बौखलाया गार्ड, पेट डॉग को किडनैप कर मांगी 25 हजार फिरौती

मुंबई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। मुंबई में एक चौंकाने वाली घटना ने सभी को हैरान कर दिया, जब तनख्वाह में कटौती से नाराज एक सिक्योरिटी सुपरवाइजर ने गुस्से में आकर एक पालतू कुत्ते का अपहरण कर लिया और फिरौती की मांग कर डाली। हालांकि पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन मासूम कुत्ते की तलाश अभी भी जारी है। जुहू पुलिस ने बताया कि आरोपी राजेंद्र पांढरकर (30) को गिरफ्तार कर लिया गया है। उस पर आरोप है कि उसने जुहू स्थित रुस्तमजी सिरोक टावर में रहने वाली अदिति जोशी के पालतू पोमेरेनियन कुत्ते 'प्रिक्सी' का अपहरण किया। ये घटना 15 अप्रैल की है। वेतन काटे जाने से नाराज आरोपी राजेंद्र ने कुत्ते को घुमाने के बहाने किडनैप कर लिया। पुलिस ने खोजबीन की तो सोसाइटी के बाहर सीसीटीवी कैमरे में कुत्ते के साथ आरोपी ऑटोरिक्शा में बैठते देखा गया था। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसने विले पार्ले स्टेशन के पास प्रिक्सी को छोड़कर अहमदनगर भागने की कोशिश की। पुलिस के अनुसार, आरोपी ने अदिति जोशी से 25,000 रुपये की फिरौती मांगी थी, जो उसकी मासिक सैलरी के बराबर है। अदिति जोशी ने तुरंत जुहू पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई शुरू की। पुलिस जांच में सामने आया कि राजेंद्र पांढरकर की पत्नी गर्भवती है और अहमदनगर में रहती है।

वह अक्सर उससे मिलने छुट्टी लेता था। लगातार अनुपस्थिति के चलते सिक्योरिटी एजेंसी ने उसकी सैलरी से 4000 रुपये काट लिए थे। इसी बात से नाराज होकर राजेंद्र ने कुत्ते के अपहरण की साजिश रची, ताकि वह नुकसान की भरपाई कर सके। अपहरण के बाद राजेंद्र ने प्रिक्सी को विले पार्ले रेलवे स्टेशन के बाहर छोड़ दिया था।

आरोपी किशोर की मां जेल से बाहर आई, सुप्रीम कोर्ट ने चार दिन पहले दी थी अंतरिम जमानत

पुणे, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पुणे पोर्श कार हादसे में आरोपी किशोर की मां शनिवार को जमानत मिलने के बाद जेल से बाहर आ गई। चार दिन पहले सुप्रीम कोर्ट ने उनकी अंतरिम जमानत को मंजूरी दी थी। साथ ही पुणे की अदालत को जमानत की शर्तें तय करने के निर्देश दिए थे। पोर्श केस में रक्त नमूने की अदला-बदली मामले में गिरफ्तार 10 आरोपियों में से जमानत पर रिहा होने वाली पहली महिला हैं। किशोर की मां पर आरोप है कि उन्होंने दुर्घटना के समय अपने बेटे के नशे में होने की बात छिपाने के लिए उसके रक्त के नमूने की जगह अपने रक्त का नमूना दे दिया था। रक्त के नमूनों की अदला-बदली के लिए तीन लाख रुपये में डील कराई गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने आरोपी मां को अंतरिम जमानत देते हुए पुणे की एक अदालत को जमानत की शर्तें तय करने का निर्देश दिया था। जिला एवं सत्र न्यायालय ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनीं। सरकारी वकील शिशिर हिरय ने कहा कि हमने पुणे जिले में रहने से रोकने, पासपोर्ट जब्त करने, पुलिस स्टेशन में अनिवार्य उपस्थिति और हर समय उनका मोबाइल लोकेशन चालू रखने जैसी शर्तें मांगी थीं। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अमोल शिंदे ने पुलिस की याचिका को खारिज कर दिया जिसमें उन्हें पुणे में रहने पर प्रतिबंधित लगाने की मांग की गई थी। आरोपी के वकीलों ने पुणे से बाहर रहने की शर्त का विरोध किया, जिसमें उनके पति की हिरासत और कानूनी कार्यवाही में सहायता के लिए शहर में उनकी उपस्थिति जरूरत बताई गई। उन्होंने प्रस्तावित 5 लाख रुपये की जमानत और रोजाना पुलिस स्टेशन जाने पर भी आपत्ति जताई। वकील ने कहा कि हमने तर्क दिया कि चूंकि आरोपपत्र दाखिल किया जा चुका है और उससे कोई वसूली लंबित नहीं है, इसलिए ऐसी सख्त शर्तें अनुचित हैं। इस पर अदालत ने कई जमानत शर्तें लगाईं, जिनमें एक लाख रुपये का निजी मुचलका, जांच अधिकारी को पासपोर्ट जमा कराना, मोबाइल टावर लोकेशन अनिवार्य रूप से साझा करना और अदालत की अनुमति के बिना भारत छोड़ने पर प्रतिबंध शामिल है। साथ ही अदालत ने महिला पर तीन महीने तक अपनी पहचान उजागर करने पर भी रोक लगा दी है तथा उसे हर बुधवार को पुलिस स्टेशन में उपस्थित होने को कहा है।

पिछले साल कल्याणी नगर में हुई थी घटना

बता दें कि 19 मई 2024 को पुणे के कल्याणी नगर में पोर्श कार ने बाइक को टक्कर मार दी थी। हादसे में बाइक सवार दो आईटी इंजीनियरों की मौत हो गई थी। दोनों मृतकों की पहचान अनीश अवधिया और अश्विनी कोष्टा के रूप में हुई थी। आरोप है कि पोर्श कार को 17 वर्षीय किशोर चला रहा था, जो घटना के वक्त नशे में था।

नूंह में भीषण हादसा: दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर हादसे में छह सफाई कर्मचारियों की मौत

नूंह, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। हरियाणा के नूंह जिले में शनिवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे ने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया। थाना फिरोजपुर झिरका सीमा के अंतर्गत दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर इब्राहिमबास गांव के पास तेज रफ्तार पिकअप वाहन ने सफाई कार्य में जुटे कर्मचारियों को टक्कर मार दी। इस भीषण हादसे में छह सफाई कर्मचारियों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि पांच अन्य कर्मचारी गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा सुबह करीब 10 बजे हुआ, जब करीब 10 सफाई कर्मचारी एक्सप्रेसवे पर सफाई कार्य कर रहे थे। अचानक आई तेज रफ्तार पिकअप ने इन कर्मचारियों को जोरदार टक्कर मार दी। छह कर्मचारियों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। घायल पांच कर्मचारियों को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। हादसे के बाद घटनास्थल पर चीख-पुकार मच गई। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और घायलों को अस्पताल पहुंचाने में मदद की। देखते ही देखते सड़क पर भारी भीड़ जमा हो गई। एंबुलेंस, रोड सुरक्षा एजेंसी के वाहन और पुलिस टीमें मौके पर पहुंचीं। हादसे की भयावहता ऐसी थी कि लोग स्तब्ध रह गए।

कलकत्ता हाईकोर्ट बोला-नाबालिग के ब्रेस्ट छूना रेप की कोशिश नहीं

गंभीर यौन उत्पीड़न माना, आरोपी को बेल; इलाहाबाद एचसी भी ऐसा बोल चुका

कोलकाता, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट के बाद अब कलकत्ता हाईकोर्ट ने कहा है कि नशे की हालत में नाबालिग लड़की के ब्रेस्ट छूने की कोशिश करना, प्रिवेंशन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्शुअल ऑफेंस (पोक्सो) एक्ट के तहत रेप की कोशिश नहीं है। हालांकि, कोर्ट ने इसे गंभीर यौन उत्पीड़न की कोशिश माना लेकिन आरोपी को जमानत दे दी। मामले की सुनवाई जस्टिस अरिजीत बनर्जी और जस्टिस बिस्वरूप चौधरी की डिवीजन बेंच (खंडपीठ) कर रही थी। दरअसल, ट्रायल कोर्ट ने आरोपी को पोक्सो एक्ट की धारा 10 और आईपीसी की धारा 448/376(2)(सी)/511 के तहत दोषी ठहराया था। कोर्ट ने उसे 12 साल जेल और 50 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई थी। इसके खिलाफ आरोपी ने ऊपरी अदालत याचिका लगाई थी। इसके साथ ही आरोपी ने कहा था दो साल से ज्यादा समय तक जेल में बंद होने का तर्क देकर जमानत मांगी थी। इससे पहले इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भी 19 मार्च को इसी तरह का फैसला दिया था। कोर्ट ने कहा था कि किसी नाबालिग के ब्रेस्ट पकड़ना, उसके पायजामे का नाड़ा तोड़ना या घसीटकर पुलिया के नीचे ले जाने की कोशिश रेप या रेप की कोशिश नहीं है। आरोपी ने अपनी याचिका में कहा था कि उसे झूठे मामले में फंसाया गया है। सबूत बलात्कार की कोशिश के आरोप का समर्थन नहीं करते हैं। भले ही पीड़ित, जांच करने वाले डॉक्टर और अन्य गवाहों के सबूतों को सच मान लिया हो लेकिन आरोप साबित नहीं होते हैं। आरोपी के वकील ने तर्क दिया कि पेनेट्रेशन के बिना आईपीसी की धारा 376 के तहत अपराध नहीं माना जा सकता है। ज्यादा से ज्यादा पोक्सो एक्ट की धारा 10 के तहत गंभीर यौन उत्पीड़न का मामला बन सकता है। इसके लिए निर्धारित सजा 5 से 7 साल है। वकील ने कहा कि आरोपी ने सजा का का एक बड़ा हिस्सा पूरा कर लिया है, इसलिए उसे जमानत मिलनी चाहिए। इस पर कोर्ट ने पाया कि पीड़ित के दिए सुबूतों में पेनेट्रेशन के संकेत नहीं मिलते। इस पर कोर्ट ने माना कि स्तन पकड़ने की कोशिश बलात्कार की कोशिश के बजाय गंभीर यौन उत्पीड़न का मामला हो सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले पर रोक लगा दी है, जिसमें एचसी ने कहा गया था कि नाबालिग लड़की के ब्रेस्ट पकड़ना और उसके पायजामे के नाड़े को तोड़ना रेप या अटेम्प्ट टु रेप नहीं है। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस एजी मसीह की बेंच ने 26 मार्च को कहा, यह बहुत गंभीर मामला है और जिस जज ने यह फैसला दिया, उसकी तरफ से बहुत असंवेदनशीलता दिखाई गई। हमें यह कहते हुए बहुत दुख है कि फैसला लिखने वाले में संवेदनशीलता की पूरी तरह कमी थी। वहीं, केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा- सुप्रीम कोर्ट का फैसला पूरी तरह से सही है। कुछ फैसलों को रोकने के कारण होते हैं।

मध्य प्रदेश में विधायक-सांसदों को सैल्यूट करेंगे पुलिस अफसर

डीजीपी ने जारी किया आदेश; फोन आए तो सुननी होगी बात

भोपाल, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में अब मुख्यमंत्री और मंत्रियों के साथ-साथ सांसदों और विधायकों को भी पुलिस अफसरों और कर्मचारियों को सैल्यूट करना होगा। ये निर्देश डीजीपी कैलाश मकवाना ने जारी किए हैं। निर्देश में लिखा है कि किसी भी जनप्रतिनिधि के साथ शिष्ट व्यवहार में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। अगर कोई सांसद और विधायक मिलने आए तो पुलिस अफसरों को प्राथमिकता के आधार पर मुलाकात कर उसका निराकरण करना होगा। साथ ही किसी जनसमस्या को लेकर कोई सांसद या विधायक फोन करते हैं तो उनकी बात प्राथमिकता से सुननी होगी और उचित समाधान भी करना होगा।

डीजीपी ने जारी किया आदेश

डीजीपी द्वारा सांसदों-विधायकों के सम्मान को लेकर जारी निर्देश में 8 अलग-अलग परिपत्रों का जिक्र भी किया है। ये सभी सर्कुलर पुलिस अफसरों के लिए 23 जनवरी 2004, 18 मई 2007, 22 मार्च 2011, 24 अक्टूबर 2017, 19 जुलाई 2019, 11 दिसंबर 2019, 12 नवंबर 2021 और 4 अप्रैल 2022 को समय समय पर सरकार के द्वारा जारी किए जा चुके हैं। डीजीपी ने लिखा है कि सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रमों या किसी भी सामान्य समारोह में पुलिस अधिकारी और कर्मचारी वर्दी में सांसदों और विधायकों को सलामी देंगे। आदेश में कहा गया है कि अधिकारी सांसदों और विधायकों द्वारा लिखे गए पत्रों का समय पर जवाब दें। आदेश के मुताबिक पत्रों पर अधिकारियों के हस्ताक्षर होने चाहिए। डीजीपी ने कहा कि जब भी कोई सांसद या विधायक किसी के कार्यालय में आए तो अधिकारी को सर्वोच्च प्राथमिकता के तौर पर सांसदों और विधायकों से मिलना चाहिए।

विधायक-सांसद फोन करें तो ध्यान से समस्या सुनें पुलिस अधिकारी

डीजीपी ने कहा कि यदि कोई सांसद या विधायक किसी समस्या के लिए किसी पुलिस अधिकारी को फोन करता है तो संबंधित अधिकारी को ध्यान से उनकी समस्या सुननी चाहिए। विधायकों के सवालों का विनम्रता से जवाब देना चाहिए।

डीजीपी ने इस वजह से जारी किया आदेश

सूत्रों के अनुसार डीजीपी ने यह आदेश मुख्यमंत्री मोहन यादव से मिले निर्देश के बाद जारी किया है। पुलिस अधिकारियों और विधायकों के बीच कहासुनी की खबरें आ रही थीं। पुलिस अधिकारियों और विधायकों के बीच कहासुनी कटनी विधायक संदीप जायसवाल और एसपी अभिजीत राजन के बीच कहासुनी हुई थी। इसी तरह मऊगंज के टीआई ने विधायक प्रदीप पटेल पर कुछ टिप्पणी कर दी। पटेल गुरुवार को थाने पहुंच गए। नर्मदापुरम के विधायक सीताशरण शर्मा ने भी पुलिस अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोला हुआ है। इसी तरह पिछोर विधायक प्रीतम लोधी का शिवपुरी एसपी अमन सिंह राठौर से विवाद चल रहा है।

साहित्य सृजन के महाविजेता : विनोद कुमार शुक्ल

अतुल कुमार

भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मानित पुरस्कार ज्ञानपीठ अवार्ड को इस बार हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि और लेखक विनोद कुमार शुक्ल को देने की घोषणा की गयी है . यह 59 वा ज्ञानपीठ अवार्ड है जो भारतीय साहित्य के लेखकों और कवियों को प्रदान किया जाता है . इस पुरस्कार को पाने का अर्थ भारतीय पाठकों के बीच लेखकों और कवियों के लेखन को बड़ी मान्यता और सम्मान मिलना है . प्रतिष्ठित भारतीय ज्ञानपीठ ट्रस्ट द्वारा इस साहित्यिक सम्मान का प्रबंधन और संचालन किया जाता है। जिसकी बडी साख साहित्य प्रेमियों के बीच है. पूर्व में यह पुरस्कार हिन्दी के लबद्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार सुमित्रा नंदन पंत ,रामधारी सिंह दिनकर ,महादेवी वर्मा ,निर्मल वर्मा , श्रीलाल शुक्ल और कृष्णा सोबती आदि को मिल चुका है. विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी के 12 वे साहित्यकार है जिन्हे इसको पाने का गौरव मिला पुरस्कार में रु 11 लाख की नकद राशि प्रतीक ताम्र पत्र और वाग्देवी (देवी सरस्वती) की मूर्ती पुरस्कार विजेता को प्रदान की जाती है. मूल रूप से यह पुरस्कार लेखक या कवि के जीवन भर के साहित्यिक योगदान को ध्यान में रख दिया जाता है .प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद का प्रसिद्ध कथन है " सिर्फ उसीको अपनी संपत्ती समझो जिसे तुमने अपने परिश्रम से कमाया है " विनोद कुमार शुक्ल ने यही किया. छतीसगढ़ के पहले साहित्यकार है जिन्हे यह पुरस्कार मिला है.

पुरस्कार की घोषणा के बाद 88 वर्षीय विनोद कुमार शुक्ल ने कहा कि "मुझे लिखना बहुत था ,बहुत कम लिख पाया ,मैंने देखा बहुत सुना भी मैंने बहुत ,महसूस भी किया बहुत , लेकिन लिखने में बहुत थोड़ा लिखा कितना कुछ लिखना बाकी है ,जब सोचता हूँ तो लगता है बहुत बाकी है ।" इस बचे हुए को मैं लिख लेना चाहता हूँ अपने बचे होने तक मैं शायद लिख नहीं पाऊँगा तो मैं बड़ी दुविधा में रहता हूँ. मैं अपनी ज़िंदगी का पीछा अपने लेखन से करना चाहता हूँ, लेकिन मेरी ज़िंदगी कम होने के रास्ते पर तेजी से बढ़ती है और मैं लेखन को उतनी तेजी से नहीं बढ़ा पाता हूँ तो कुछ अफसोस भी है. उनके उपन्यास "नौकर की कमीज "पर प्रसिद्ध फिल्म कार मणि कौल ने फिल्म बनायी . विनोद कुमार शुक्ल ने अपने लेखन को निपट साधारण आदमी को समर्पित किया. आज कितने उपन्यासकार ,कथाकार और कवि है जो जन सामान्य की तंगहाली बेबसी और मजबूरी को अपनी सोच और कलम का सबजेक्ट बना रहे हैं सोचिए ! बाज़ारवाद ने जब आदमी की आदमीयत को छीन लिया हो ! हैसियत के मुताबिक उसको पहचाना जाता हो और लाचारगी उसका पीछा नहीं छोड़ रही हो तब ऐसे लेखक की अहमियत ज्यादा दिखायी देती है ।

विनोद कुमार शुक्ल के लेखन में सेल्फ रेसपेक्ट , आदमीयत और सघर्ष की आहट सुनायी देती है. यही उनके लिखे हुए की खूबी भी है . कविता को नारे बाजी की तरह पढने ,लिखने और बोलने से परहेज किया बल्कि उसमे मंत्रों की पवित्रता को भरना उनकी पहचान बना. कथा कहने की नयी शैली ,भाषा और स्ट्रक्चर को विकसित किया पाठकों की आकाक्षाओ मनोभावों और विचारों को अच्छी तरह जानते और समझते, इसलिए उनकी कहानियों में विचारोत्तेजकता के साथ साथ अपनेपन की भाव भूमि बसी मिलती है . " खिलेगा तो देखेगे " और " दीवार में एक खिड़की रहती थी " जैसे नावेल्स के माध्यम से जीवन के रोजाना के किस्सों कनथो को कथा रूप में डेवलप किया और पाठकों का दिल जीता .मिडिल क्लास की बहुविध बातों ,परेशानियों और उनसे जूझते आदमी की समस्याओ को बारीकी से समझा ,जाना और महसूस किया जो कथा धरातल पर जीवंत हो उतरा .

कथाओ में कैरेक्टर्स के रूप रंग और रिहायश को असरदार तरीके से पेश कर उनकी पीड़ाओ को कथ्य का रूप दिया तो समकालीन हिन्दी कविता को संवेदनात्मक गहराई दी जो साहित्य की प्रसिद्ध रचनाए बनी सन 1971 में पहला कविता संग्रह "लगभग जयहिंद " शीर्षक से प्रकाशित हुआ । आज वह सर्वाधिक चर्चित है जिसका मुख्य कारण उनके कविता कहानी कहने की अलबेली अदा है , "दीवार में एक खिड़की रहती थी " को प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक मोहन महर्षि ने नाटक का रूप दिया जिसे दर्शकों ने सराहा 1 जनवरी 1937 को राजनन्द गाँव छतीसगढ़ में जन्मे इस लेखक ने कामकाज के रूप में अध्यापन को चुन सारा ध्यान साहित्य सृजन में लगाया. " आकाश धरती को खटखटाता है " कविता समयातीत है जो समसामयिक होते हुए भी अर्थ के भंडार को बहुत आगे तक ले जाती है सीधे सरल और साफ विचार उनकी कविताओ का जेवर बने उनकी कविता "हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था " कि इन पंक्तियों को पढिए हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था / व्यक्ति को मैं नहीं जानता था / हताशा को जानता था / इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया /मैंने हाथ बढ़ाया मेरा हाथ पकड़ कर वह खड़ा हुआ /मुझे वह नहीं जानता था /मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था /हम दोनों साथ चले /दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे /साथ चलने को जानते थे /

दूसरी कविता चिड़ियों का घोंसला की इन लाइनों को पढिए " चिड़ियों का घोंसला बना पहले /या मनुष्य का पहले घर ? चिड़ियों ने बनाया होगा घोंसला पहले / मनुष्य ने बनी बनायी पहाड़ों की गुफाओ में रह कर घर को जाना /पर मनुष्य ने चिड़ियों से घर बनाना सीखा/ यह तो तय है चिड़ियों के बने घौसलों को देख ही उसने घर बनाना और उसमें रहना सीखा यह तय है // विनोद कुमार शुक्ल ने प्रकृति के बारे में कहा उससे क्या लूँ और क्या छोड़ू सब कुछ तो उसने दिया और लुटाया पर मैंने उसके लिए क्या किया ? यह सवाल मंथित करता है ! सोचिए ! क्या इस दिशा में कभी कोई आज सोचता और समझता भी है ? निर्मल वर्मा को अपने लेखन जीवन का आदर्श मानने वाले विनोद शुक्ल ने लिखा कि उनसे प्रेरित हो साहित्य में दूसरे रास्तों को तलाश सका मनुष्य के रूप में उनको अपने भीतर प्रिज़र्व कर रख पाया । रोजमर्रा की छोटी छोटी बातों और घटनाओ से उन्होंने जिस साहित्य को लिखा वाहभारतीय साहित्य की कालजयी धरोहर बना .

" दीवार में खिड़की रहती थी " उपन्यास में निम्न मध्यम वर्गीय परिवार के कथा नायक रघुवर प्रसाद के संसार में कोई ऐसी विशिष्टता नहीं है जिससे कि एकबारगी में पढ़ने का जी करे घटनाविहीन सनसनी और चकाचौंध से दूर उसके ब्योरों को दर्ज करने की आवश्यकता पर देखा जाए तो सवाल उठना स्वाभाविक है. लेकिन निम्न मध्यम वर्ग के जीवन के मनो विश्लेषण पर शुक्ल की गहरी पैठ दिखायी देती है , जो साधनहीन जीवन को रंगीन सपनों से भर कर जीने का हौसला रखता है जो कथाकार की सोसायटी पर नजरिए की पकड़ को दर्शाता है.

वास्तव में शुक्ल ने अपने साहित्य को समाज के उस सबसे छोटे आदमी से जोड़ा जहां सपना देखना या रखना को विलासिता समझा जाता है पर क्यों ? इसी प्रश्न की अदम्य शक्ति ने विनोद कुमार शुक्ल के लिटरेरी लेखन को यादगार बनाया .

उनके 10 काव्य संग्रह 6 उपन्यास 4 कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं आज विश्व साहित्य में उनकी चर्चा हो रही है क्यों की वह साहित्य स्रजन के महाविजेता हैं.

काव्य कुंज

बता क्या धर्म है तेरा

कुमुद बाला,
हैदराबाद

धर्म पूछकर निर्दोषों की हत्या करने वाले
देश की थाली में खाकर देश बाँटने वाले
राजनीति का सहारा लेकर झूठ फैलाने वाले
मज़हब की छतरी तान बरगलाने वाले
दीमक की तरह देश खोखला करने वाले
आज़ादी का ग़लत फायदा उठाने वाले
आँखों की रौशनी छीनने वाले
जातियों में बाँट चाबुक चलाने वाले
किसी की पत्नी को विधवा बनाने वाले
बच्चों को अनाथ बनाने वाले
धर्म के नाम पर दंगा भड़काने वाले
तेरा कोई मज़हब नहीं
तू तो आतंक फैलाने वाला आतंकवादी है
जो इंसानियत से महरूम एक गद्दार है
और तुझे बहत्तर हूर चाहिए ?
तेरे जैसे गद्दार को जीने का हक़ नहीं
ऊपरवाले की लाठी में आवाज़ नहीं होती
वक्त आने पर तु तड़प-तड़प के जायेगा
प्यासा ही मर जायेगा
तुझे तेरे धर्म की ही हाय लगेगी
और कब्र तक नसीब न होगी ।

पहलगाम

विजेंद्र जैन

सरहद पर बदनियत वाले
जल्दी ही पतन को पाएगा
आतंक और घृणा की अग्नि में
वो खुद ही जिंदा जल जाएंगे
हिंदुस्तान देख रहा तुमको कहीं बांध सब्र का ना टूटे
तुम सर्वनाश को पाओगे जो अस्त्र-शस्त्र चल जाएंगे
एक महामानव बन देवदूत तुमको समझाने आए थे
है अकल तुम्हारी घुटनों में तुमको कैसे समझाएंगे
है देश सुरक्षित हाथों में हमसे गुस्ताखी मत करना
गर नेत्र तीसरा फड़केगा सब मिट्टी में मिल जाएगा
सरहद पर बदनीयत वाले जल्दी ही पतन को पाएगा
आतंक और घृणा की अग्नि में वह खुद जिंदा जल जाएगा।

हिमाग्नि यही है!

डॉ. केशिराजु
श्रीनिवास

मुझे इसका आभास हो रहा है!!
अब मैं देख रहा हूँ कि कैसे जन सेना
कश्मीर में तांडव करेगी!
पहलगाम की घटना के बाद, वहाँ
अब अचानक, एक नवजात शिशु भी
सिंह की भाँति गर्जना करेगा!
वह माँ से लोरी में जागरण और
पराक्रम भरने को कहेगा!
जो कल पालकी में चढ़कर बारात में जाने वाले थे,
वे अब बंदूकें उठाकर कश्मीर के मस्तक के
पवित्र तिलक की रक्षा के लिए खड़े होंगे।
वे युवक-युवतियाँ, जो पहले कॉलेज की ओर चलते थे,
अब सीमा की रक्षा के लिए दौड़ लगाएँगे।
उस घाटी में,यहाँ तक कि हिमालय भी
बर्फ के बीच अग्नि में परिवर्तित हो जाएगा।
हिमालय के तपस्वियों की आत्म-शक्ति
अब सहस्र पाशुपत अस्त्र बन जाएगी।
कश्मीरी पंडितों के कंठों से अब धर्मा गृह का स्वर फूटेगा।
भारत माता के हाथ मेंजो ध्वज है,
वह अब त्रिशूल बन जाएगा,
और मुष्करों की साजिशों कोचीर कर रख देगा।
हर जाग्रत भारतीय हृदय
कश्मीर की रक्षा हेतु उत्साह से आगे बढ़ेगा।
यहाँ तक कि भगवान बुद्ध भी आत्मचिंतन में उतरेंगे,
क्या सहनशीलता की भी कोई सीमा होती है
यह जानने।
कश्मीर के हर द्वार से एक नया ललिता पग बढ़ाएगा।
उस घाटी में हम सदा सुनते रहेंगे
हरियाली और चंदन-सुगंधित शीतल पवन का गीत।
अब, यह हिमाग्नि है!
(बर्फ की अग्नि)मुझे इसका आभास है!

अब धर्म पूछकर बंदूक चलाएंगे

जय महलवाल,
बिलासपुर

आज फिर हुई की साज़िश है,
क़त्ल हुआ है इंसानियत का,
फ़िर क्यों लगता गद्दारों को,
उन्होंने जो किया वो वाज़िब है?
कभी हमारा सेना का जवान शहादत पाता है,
कभी हिन्दू तो कभी मुसलमान मारा जाता है,
क्यों नहीं समझता आख़िर इंसान ही तो हैं सब!!!
जो गद्दार इतना कहर बरपाता है।
कभी पुलवामा तो कभी पहलगाम निशाना होता है,
हर बार ही क्यों कश्मीर बहाना होता है?
कान खोलकर सुन लो गद्दारों,
हमको जवाब देना भी बख़ूबी आता है।
वो सोचते इंसानों में ऐसे दहशत फैलाएंगे,
खुल के कश्मीर में उन्माद फैलाएंगे,
पहले होते थे सेना के जवान निशाना,
अब धर्म पूछकर बंदूक चलाएंगे।
स्वरचित एवम अप्रकाशित रचना।

रूपया

टी तारासिंह
हैदराबाद

बच्चे-बुढो को हसाये रूपया
भाई-भाई से लडाये रूपया
जग मे बडा है रूपया सबसे बडा है रूपया
रूपया का साथ कोई न छोडे
दर्द सहेगे मगर रूपया का साथ न छोडेगे
तेरे साथ रहने से होठो पर मुस्कुराहट रहती
तू दर्द देता, खुशियाँ देता, सब तमाशा देखता
तू रिश्ते जोडे , दुष्मनी साथ मे बढाये
दु:ख- दर्द कम करे फसादे बढाये
अमीर-गरीब को भी तेरी ही जरूरत
तू रूपया है चंचल,किसी का भी भला न करे
तू रास्ता भटकाये, आसमाँ पर पहुंचये
फिर जमीन पर ला गिराये, औकात बताये
रूपया है तो बहार ही बहार है ।।

आंसू पोछने है

गजानन पाण्डेय

अब बदला चाहिए
आतंक की कमर तोड़ दे
ऐसी कार्रवाई चाहिए ।
' नापाक ' हरकत का
हिसाब लेना है
हर दहशतगर्द का
काम तमाम करना है ।
पीड़ित परिवारों के आंसू पोछने है
ऐसा दुस्साहस कोई न कर पाए
यह विश्वास दिलाना है ।

डिजिटल रेप झेला दंश...!

संजय एम.
तराणेकर, इंदौर

अस्पताल का आई.सी.यू
और जीवन संघर्ष,
वो यौन उत्पीडन या
डिजिटल रेप झेला दंश।
सामान्य रेप से
अतिरिक्त यहाँ भी न छोड़ोगे,
क्यों? नहीं काँपते
तुम्हारे हाथ क्या? मोड़ोगे।
ये अवचेतन अवस्था में एयरलाइन कर्मचारी,
क्या से क्या सह रहीं थीं वो बिस्तर पे बेचारी।
वासना का घिनौना कर्म किसने हैं सिखाया,
बिन सहमति गुप्तांग में अंगूठा प्रवेश कराया।
न कोई शर्म, न हया कुछ भी ना रहा हैं बाकी,
हवस की पराकाष्ठा ने घृणित बन हुआ दागी।
ऐसा विकृत करते अपनों के खयाल ना आते,
वहशियों माँ,बहन,बेटी के मुख नज़र न आते।
अस्पताल को यहाँ जीवनदायी कहा जाता हैं,
तुम दीपक थे सभी को दरिंदा नज़र आता हैं।

आतंकवाद का घिनौना रूप

मोनिका डागा,
चेन्नई

कुछ बद्दिमाग खूंखार राक्षसों
की काली करतूत,
मचाती हाहाकार,
कष्ट से हो जाता विश्व द्रवीभूत,
निहत्थों पर वार
चलाना कैसी शर्मनाक फितरत है ?
कायरता का जश्न मनाना ये कैसी बेकार शोहरत है ?
खून का बदला खून से क्या कर सकता भरपाई,
जिन्होंने अपने जीवन की खोई अनमोल ईकाई,
जन्म लेगी नफ़रत और भड़के की ज्यादा आग,
चलता रहेगा ये हत्याओं का खूनी दर्दनाक फाग ।
थू थू करता जग सारा तुम पर क्यों साख डुबोते हो ?
गड्ढा खोदते दूसरों के लिए व खुद ही गड्ढे में गिरते हो,
बद्दुआओं में जीकर कौन सा तीर मारा जीवन में ?
ख़ून की नदियां बहाई क्या मिला दहशत घुटन में ?
कैसी तालीम मिली तुमको इंसानियत को ही भूल गए ?
अपने ही मुल्क को बदनाम कर देश प्रेम को भूल गए ?
इस घृणित कर्म से न जाने कितने सिपाही मारे जाएंगे ?
लाल वो भी धरा के बेवजह क्रोध की बलि चढ़ जाएंगे ?
धर्म जाति के नाम पर लडाई करवा गंदा खेल रचते हो ?
क्यों शांति, प्रेम, अमन सुकून को कलंकित करते हों ?
थम जाओ छोड़ दो ये हिंसा का दर्दनाक भयावह मंजर,
मासूमों के हाथ मत दो तुम्हारी नफ़रत का खूनी खंजर ।
कसूरवार हो तुम क्यों ईर्ष्या घृणा फैला कर हंसते हो ?
किसी से प्रेम नहीं करते बस अहम को सिद्ध करते हो ?
जो करना होगा वो तो देश की सरकारें निर्णय ले करेंगी,
जहर की इस फसल को जड़ समेत ही उखाड़ फेंकेगी ।
कांप रही है ये कलम आज आंखों की पलकें भी नम,
दुश्मनी की खाई क्यों नहीं होती इतने वर्षों बाद भी कम,
सुरक्षित नहीं इंसान कहीं भी इंसान ही बन बैठा दुश्मन,
आनंद नहीं जीवन में बढ़ी हर मन में चिंताएं उलझन ।

दस्तक देता कौन दर पर

संजीव ठाकुर,
रायपुर

मैं तो अपनी शर्तों पर जीता हूं.
पराये दर्द के अश्कों को पीता हूं।
रातें तो सितारों संग बीत जाती हैं,
दिन के उजालों से बचता रहता हूं।
अब चले ना चले कोई साथ मेरे
मैं तो सदा खुद के संग चलता हूं।
ना शायरी,आशिकी ना मोहब्बत
लोग हंसते हैं जाने कैसे जीता हूं।
बहारें भी लौट गई मुझको देखकर
अब फूल नहीं कांटे चुनता रहता हूं।
आईना हमेशा हंसता रहा मुझ पर
लिए पत्थर सा चेहरा घूमता रहता हूं ।
न खबर आई ना कोई आएगा यहां
मैं तो बेखुदी के वीरानें में रहता हूं ।
तमन्नाओं से क्या वास्ता होगा मेरा
रिश्ता जो उससे छत्तीस रखता हूं।
ये दस्तक कौन देता है घर-पर संजीव
दरवाजा घर का हमेशा खुला रखता हूं।

सजा मिली है

रेणुका अग्रवाल
हैदराबाद

इस क़दर क्यों सबको सजा मिली है।
अच्छी भली ज़िन्दगी को कजा मिली है।
ये किस तूफ़ान की आहटें हो रही है
गर्मियों में सेहरा की हवा मिली है।
धीरे धीरे गुनाहों का बेइख़्तियार हो जाना
कब इन नामुरादों को वफ़ा मिली है।
सच और झूठ का पता नही चल रहा है
राजा और प्रजा को कैसी जफ़ा मिली है।
एक मछली ने दरिया जो नापाक कर दिया
समंदर को जैसे मैली फ़ज़ा मिली है।
सकते में है क़सूरवार और बेक़सूर भी
ये कैसी ज़हरीली निशा मिली है।
इल्म तो सिखा रही है क़ुदरत हमें
कौन जाने किसको कितनी हया मिली है।
रेणू क्या समझेगी और समझाएगी
उसे नही किसी की अदा मिली है।
हम पुकारें भी तो किसे पुकारें
हमे न किसी की सदा मिली है।

उम्र की ढलती साँझ में

गीता अग्रवाल
हैदराबाद

उम्र की ढलती साँझ में
तन्हाई का आलम है,
उगते सूरज को सब सलाम करें,
बढ़ती उम्र तन्हाई का नाम है,
अनुभव खजाना भरा पड़ा है
पर जीवन की ढलती शाम है,
कोई दुर्बल तन का साथी नहीं
जब तक जीवन, तन्हाई का पीना जाम है,
वृद्धावस्था का चक्रव्यूह
नहीं तोड़ना आसान है,
जब तक साथी साथ में
थोड़ा सा आराम है,
दवा दारू खाना पीना देकर
परिवार वालों का हो गया काम है,
अकेलापन काट रहा है
सारी दुनिया अनजान है,
अपनेपन से भरा स्मृति कलश
खोला तो हैरान है,
जब तक ये जवानी, अमूल्य पूंजी,
अब अपना तो बस राम राम है।

शुक्र है परिंदों को...

दर्शन सिंह
हैदराबाद

इक्कीसवीं सदी
जिधर से भी गुजरो,
शमशीर नज़र आती है
बेवजह हाथों की लकीर
खंडित नज़र आती है
गलतियां भी नहीं की,
फिर भी माफ़ी की अर्जियां
अखियां अश्रुओं से भरी नज़र आती हैं
लेकिन एक अति सुंदर दृश्य, प्रभु की कारीगरी
करें चिंतन
अन्यथा अंधेरों से सजी कायनात होती
शुक्र है परिंदों को नहीं पता, उनका महजब क्या है
वरना आसमां से भी खून की बारिश होती
चर्चा आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस की
अंतरात्मा स्तब्ध
किन्तु उल्लासित हो जाती है
झूमो, नाचो, गाओ प्रफुल्लित हो जाती है
खामोश थी आंधी, तूफानों की प्रचंडता
हर इक की धमनियां रोमांचित हो जाती हैं
इसके बाद भी मनवा बेचैन,
तो रब ही राखा
हां अगर प्रकृति की शरण में जाएं तो असीम शांति
अन्यथा खातपतवार से भरी बगिया होती
शुक्र है परिंदों को नहीं देख...
हुई भोर, अनावश्यकों द्वारा दीवारें खड़ी कर दी जाती हैं
बेवजह चाय की प्याली में तूफान भर दी जाती हैं
अवगत,हम आदमी हां इक दम के
फिर भी
जीवित सांसें पांव तले दबा दी जाती हैं
ठीक है विभिन्न राहें लेकिन प्रभु तो एक
व्याकरण समझे तो ठीक
अन्यथा धरा गर्त से भरी होती
शुक्र है परिंदों को..

उलझन

डॉ डी डी देसाई

कोई तो पूछो...उलझन मेरी..
जो दिमाग़ में अँधेरा कर बैठी हैं।
प्रज्वालित हो स्वयं से कोई जुगनू...
अलोकित करे दिमागी संदूक को,
मिटाना चाहता हूँ...अँधेरा....
जो मेरी नींद भी खा गया हैं।
बिस्तर से अभी उठा नहीं...कि....
सोफे पर फैली पड़ी हैं एक और उलझन,
मेरी निद्राभंग के इंतजार में...
लालच भरी नेत्रों से ताकती खड़ी हैं..
पुनः मुझपर सवार होने के लिए...।
मैं बेबस.... लाचार...हतबल....
उसे रोक न सका...।
अब उलझने मुझपर हैं सवार,
मस्ती में धुत...अपनी ही धून में सवार ।
बोझ तले दबी साँसे भी मेरी...
धड़कनें भी थरथरा रही हैं।
खुली हवा की चाहत में,
घर से बाहर निकला....।
दरवाजे पर खड़ी मेरे अतिथ्य में,
फिर एक उलझन दूसरी उलझन के बाद ।
उलझनों की कतार बढ़ती ही गयी...
लंका दहन में हनुमान की पूँछ हो जैसे ।
मैं बेबस...असमर्थ...असहाय...।
सवारी पर सवारी बैठती गयी ।
मैं जीवन रथ खिंचता रहा...।
साँसे भी दबी...आवाज़ भी दबी,
कदम भी लड़खड़ाने लगे ।
खुद को घसीटते ले जा रहा हूँ ।
मैं ठहरा आम आदमी... अब निभाह भी मुश्किल हैं ।
फिर भी ढ़ो रहा हूँ.... बोझ उलझनों का......।

धरती का स्वर्ग दहला

जे गंगाधर 'गंध'
हैदराबाद

धरती का स्वर्ग दहला
नराधमों ने किया हमला,
धरती का स्वर्ग बना नर्क,
धर्म-मज़हब में किया फर्क।
दरिंदों ने धर्म पूछकर किया अंत,
वह धर्म जो हिन्दू धर्म है श्रेष्ठ पथ,
सर्वधर्मसमभाव का किया है अंत,
सौभ्रातृत्ववाद पर ही किया आघात।
पहलगाम का हृदय विदारक कृत्य,
आतंकवाद का कहा जारहा कुकृत्य,
यह कतई आतंकवाद नहीं है भाई,
यह तो जिहाद ही शैतानी कुरूप है।
जेहादियों ने यह साबित कर दिखा दिया,
शांति-अमन के चमन पर खून बहा दिया,
मज़हब ही सिखाता आपस में बैर रखना,
धर्म पूछकर, कपड़े उतार कर कत्लेआम करना।

आतंक की परछाई

पद्मजा श्रीवास्तव

धरती लहुलुहान हुई
अंबर रोता है ज़ार –ज़ार
तार तार हुई मानवता
सीने में उसको फिर घाव मिले
नफ़रत की इस आँधी में
आतंकियों ने मासूमों कों
गहरी नींद सुला दिया ।
नाम पूछ कर ,धर्म पूछ कर,
क्यों भून दिया बेकसूरो को
मातम में बदल गई किलकारी खुशियों की
माहौल बना भय का फिर से अब ।
जाने कैसा युद्ध है ये
क्यों खत्म नहीं होता है
आतंक की ये परछाई कब दूर होगी हमसे
कब तक कीमत रहेंगे चुकाते
जो कसूर किया ही नहीं हे ईश्वर सद्बुद्धि दो
दहशत फैलाने वालों को अब तो सद्बुद्धि दो ।।

उड़ान

हेमंत सुराना,
उदयपुर

मन चला पंछी बनकर,
उड़ चलू हवा में
सपनों की उड़ान आसमान तक,
हौसलों की बुलंदी आसमान तक
खोल परो को, खोल परो को,
तू संघर्ष कर, तू आगे बढ़
ख्वाबों को पूरा करने को,एक आग दिल में लगानी है
आसमान को छू लेने को, एक उड़ान ऐसी भरनी है
डर भी लगेगा फासला देखकर, बढ़ते चलो रास्ता देखकर
सफलता की उड़ान, हौसलों की उड़ान
सपनों में साहस भरो सपनों की उड़ान भरो,
प्रगति पथ पर बढ़े चलो, प्रगति पथ पर बढ़े चलो ।

स्वतंत्र वार्ता
काव्य कुंज ब्लॉग
AGA. Publications. Ltd.
396, Lower Tankbund,
Hyderabad-500080

कुछ बड़ा करने की तैयारी कर रहा भारत

फाइटर जेट्स तैयार, बॉर्डर अलर्ट, सर्वदलीय बैठक और पीएम के बयान का संकेत

भारत ने अपने सबसे लडाकू विमान राफेल को युद्धाभ्यास में उतार दिए हैं। गृहमंत्री अमित शाह और विदेश मंत्री जयशंकर ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की है। सरकार ने सभी दलों की बैठक बुलाकर चर्चा की है। रूस की मीडिया ने भी आशंका व्यक्त की है कि दो न्यूक्लियर संपन्न देशों के बीच कुछ बड़ा होने वाला है। क्या पहलगाम हमले का बदला लेने के लिए भारत कुछ बड़ा करेगा, अगर हां तो विकल्प क्या हैं और उनका संभावित असर क्या होगा।इसकी पडताल करती रिपोर्ट

22 अप्रैल की दोपहर 2:45 बजे जम्मू-कश्मीर के पहलगाम की बैसरन घाटी में 4 आतंकियों ने हमला किया। इसमें 26 लोगों की मौत हो गई। हमले के बाद शुरुआती 72 घंटों में भारत में ऐसा क्या-क्या हुआ, जो किसी बड़े एक्शन का संकेत दे रहा है...। हमले के वक्त पीएम नरेंद्र मोदी सऊदी अरब के दौरे पर थे। उन्होंने ट्वीट किया- इस जघन्य कृत्य के पीछे जो लोग हैं, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। पीएम ने गृहमंत्री को कश्मीर जाने को कहा। 7 घंटे के भीतर अमित शाह श्रीनगर पहुंचे और उच्च स्तरीय बैठक की। मोदी भी दौरा छोटा करके देश लौट आए। पीएम मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीएस) ने 5 पॉइंट एक्शन लागू किया। इसमें सिंधु जल संधि स्थगित करना, अटारी-वाघा चेक पोस्ट को बंद करना और सार्क वीजा छूट योजना को बंद करना शामिल था। सिंधु जल प्रणाली पर पाकिस्तान की 90% खेती निर्भर है। पीने का पानी और बिजली उत्पादन के लिए भी ये पानी बेहद जरूरी है। पाकिस्तान ने कहा, 'अगर भारत सिंधु जल समझौते को रोकता है तो इसे एक्ट ऑफ वॉर यानी जंग की तरह माना जाएगा।'

भारतीय वायुसेना ने सैन्य अभ्यास 'आक्रमण' शुरू किया, जिसमें पहाड़ी और जमीनी ठिकानों पर हवाई हमलों का अभ्यास किया गया। इसमें राफेल लड़ाकू विमान भी शामिल हैं। इसके अलावा भारत ने अरब सागर में नई मिसाइल का परीक्षण भी किया। अमित शाह और विदेश मंत्री एस जयशंकर राष्ट्रपति भवन पहुंचे। उन्होंने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। बताया गया कि पहलगाम हमले का ब्रीफ देने गए थे, लेकिन अंदरखाने की बात सामने नहीं आई।

सर्वदलीय बैठक में केंद्र सरकार ने माना कि पहलगाम हमले में सुरक्षा में चूक हुई। आतंकियों के खिलाफ सख्त कदम उठाने की मांग हुई। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा- 'हम हर एक्शन पर सरकार के साथ हैं। 24 अप्रैल को रशियन टुडे (आरटी) ने X पर पोस्ट करते हुए लिखा- 'पाकिस्तान ने इंडियन एयरक्राफ्ट वाले रास्ते को नो-फ्लाई जोन घोषित किया। दो न्यूक्लियर देशों के बीच कुछ बड़ा होने वाला है। भारत ने अपने एयरक्राफ्ट कैरियर को अरब सागर में आगे बढ़ाया है, जो युद्ध की तैयारियों का संकेत हो सकता है।'

ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के स्ट्रैटेजिक स्टडीज प्रोग्राम के डिप्टी डायरेक्टर विवेक मिश्र कहते हैं कि भारत कार्रवाई जरूर करेगा। ये एक छिपा मिशन या खुली लड़ाई भी हो सकती है। जिसका मकसद आतंकियों को खत्म करना, पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव और आतंकी नेटवर्क को नष्ट करना होगा। हमला बालाकोट एयरस्ट्राइक से भी ज्यादा बड़े स्तर का हो सकता है।

लेफ्टिनेंट जनरल (रि.) सतीश दुआ कहते हैं कि इस तरह के कायराना हमले के बाद सरकार को तीन स्तर पर कार्रवाई करनी चाहिए- डिप्लोमैटिक, इकोनॉमिक और मिलिट्री एक्शन। सरकार ने सीसीएस की मीटिंग में डिप्लोमैटिक स्तर पर अटारी बॉर्डर बंद करने, दूतावास में ऑफिसर्स की संख्या घटाने जैसे कदम उठाने के अलावा सिंधु जल समझौते को रोकने का फैसला किया है, इनका असर तो आएगा ही। साथ ही अब जल्द ही मिलिट्री एक्शन भी होने की संभावना है। मिलिट्री एक्शन पहले किया जाता है, बाद में उसकी घोषणा की जाती है। पाकिस्तान में भारत के राजदूत रहे अजय बिसारिया के मुताबिक, 'भारत निश्चित रूप से जवाबी कार्रवाई करेगा, लेकिन अभी कार्रवाई जंग का मोर्चा खोलने जैसी नहीं होगी। ऐसी स्थिति में देश एक सब-कन्वेंशनल यानी सीमित मिलिट्री ऑपरेशन करते हैं और जंग की नौबत आने से रोकने की कोशिश करते हैं।'

ऐसे में भारत के पास कुछ बड़ा करने के तीन उपयुक्त विकल्प हैं...। पहला मिसाइल से एयरस्ट्राइकः भारत की बदले की कार्रवाई हवाई रास्ते से होने की उम्मीद है। हो सकता है भारत के मिसाइल लॉन्च पैड से पाकिस्तान के अंदर मिसाइल अटैक किए जाएं। सीमा पार आतंकी ठिकानों और सैन्य कैंपों के सटीक को-ऑर्डिनेट्स यानी लोकेशन तय करके मिसाइल हमले किए जा सकते हैं। इससे पाकिस्तान की जवाबी कार्रवाई से कोई नुकसान नहीं होगा।' दूसरा अब देश अपने सैनिकों को सीधे जंग के मैदान में तभी उतारते हैं, जब मैदान पर उनकी जीत पक्की होती है। उससे पहले तक ताकतवर इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेज और मानवरहित ड्रोन की मदद से दुश्मन के ठिकानों पर हमले किए जाते हैं। भारत भी सीमा पार आतंकियों के ठिकाने चुनकर मानवरहित ड्रोन के हमले कर सकता है। तीसरा है जमीनी या समुद्री हमला। भारत ने पाकिस्तान से लगे बॉर्डर पर निगरानी बढ़ा दी है। राजस्थान में भी सीमावर्ती इलाकों में अलर्ट है। बॉर्डर वाले इलाकों में हथियार बंद जवान तैनात किए गए हैं। यानी भारत के पास उरी की तरह सर्जिकल स्ट्राइक करने का ऑप्शन है। उरी स्ट्राइक में भारत ने एलओसी पार कर आतंकियों के ठिकानों को तबाह कर दिया था। ऐसा ही कुछ इस बार भी हो सकता है। इसके अलावा भारत ने अरब सागर में युद्धपोत भेजकर मिसाइल परीक्षण भी किया। इस वक्त पाकिस्तान को भी पता है कि पहलगाम हमले के बाद भारत कार्रवाई जरूर करेगा। वो सर्जिकल और एयर स्ट्राइक जैसे जवाबों से निपटने के लिए हर तरह की तैयारियां कर रहा होगा, लेकिन भारत पहले जैसे रिस्पॉन्स नहीं देगा। इस बार हमारी कार्रवाई भी अलग होगी।

भारत के पास मिसाइल अटैक, ड्रोन अटैक या समुद्री, जमीनी लड़ाई के लिए हथियारों का बड़ा जखीरा और हर तरह के युद्धपोत हैं। भारत के पास अग्नि-1 (700 किलोमीटर रेंज) से लेकर अग्नि-5 (5000 किलोमीटर रेंज) तक नई जनरेशन की बैलिस्टिक मिसाइल्स हैं। पृथ्वी-2 और पृथ्वी-3 जैसी कम दूरी की शॉर्ट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल्स यानी एसआरबीएम हैं। जो करीब 300 किलोमीटर से 750 किलोमीटर दूरी तक के टारगेट्स पर सटीक निशाना साध सकती हैं। इन्हें जमीन से मोबाइल लॉन्चर के जरिए लॉन्च किया जा सकता है। ब्रह्मोस जैसी सुपरसोनिक मिसाइल्स (रेंज 1000 किलोमीटर) और निर्भय जैसी सबसोनिक मिसाइल्स तेज गति से सटीक हमला कर सकने में सक्षम हैं। इन्हें सुखोई और राफेल जैसे फाइटर जेट्स की मदद से दागा जा सकता है।

के -सीरीज की के-4 और के-15 सागरिका जैसी मिसाइल्स को पनडुब्बी से लॉन्च किया जा सकता है। वहीं भारत के पास S-400 एयर डिफेंस सिस्टम है जो पाकिस्तान की दागी हुई मिसाइल्स को ट्रैक करके हवा में ही खत्म कर सकता है।

अगर भारत ड्रोन अटैक करता है तो उसके पास हेरॉन, हारोप और हर्मीस जैसे इजराइली ड्रोन हैं। सैटेलाइट से सिग्नल लेकर सटीक हमला करने वाला हेरॉन ड्रोन लगातार 36 घंटे उड़ सकता है, जबकि इसकी रेंज 450 किलोमीटर है। भारत के पास अभी 4 हेरॉन-2 ड्रोन हैं। भारत के पास 1000 किलोमीटर की रेंज वाले 160 से ज्यादा हारोप ड्रोन हैं। ये अपने साथ 20 किलो से ज्यादा विस्फोटक ले जाकर टारगेट पर हमला कर सकते हैं।

भारत ने अमेरिका से 2 एमक्यू-9B रीपर ड्रोन लिए हैं। सी-गार्जियन कहे जाने वाले इन ड्रोन की रेंज 6000 नॉटिकल मील है, जबकि ये अपने साथ 2 टन तक विस्फोटक ले जा सकते हैं। बड़े आकार के सी-गार्जियन ड्रोन को आईएनएस विक्रांत जैसे विमानवाहक युद्धपोतों से भी लॉन्च किया जा सकता है। भारत के पास स्वार्म, रुस्तम-2 और तपस जैसे निगरानी और हमला कर सकने वाले स्वदेशी ड्रोन भी हैं। इन ड्रोनों को जमीन पर मोबाइल लॉन्चर, हवा में राफेल जैसे फाइटर जेट्स से लॉन्च किया जा सकता है। इनमें से कई ड्रोन लॉइटरिंग म्यूनिशन हैं, यानी ऐसे ड्रोन हैं जो किसी टारगेट को लॉक करने, तबाह करने से पहले हवा में मंडरा सकते हैं। इससे टारगेट पर सटीक हमला करना आसान हो जाता है। ग्लोबल फायरपावर इंडेक्स 2025 के मुताबिक, सैन्य क्षमता के मामले में भारत दुनिया भर में चौथे नंबर पर है, जबकि पाकिस्तान बारहवें नंबर पर है। भारत के पास टी-90 भीष्म और अर्जुन जैसे ताकतवर टैंक हैं। हालांकि, स्वचालित आर्टिलरी यानी तोपों के मामले में पाकिस्तान के पास बढ़त है, लेकिन मोबाइल आर्टिलरी यानी एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जा सकने वाली तोपें भारत के पास ज्यादा हैं। डिजिटल वॉरफेयर के मामले में भारत कहीं आगे है। रात में लड़ाई करने के लिए उसके पास अपग्रेडेड हथियार हैं। भारत के पास आईएनएस विक्रमादित्य और आईएनएस विक्रांत जैसे भारी विमानवाहक युद्धपोत हैं, जबकि पाकिस्तान के पास कोई विमानवाहक युद्धपोत नहीं है। भारत और पाकिस्तान के बीच लंबी कोस्टल लाइन यानी समुद्री तटरेखा है, ऐसे में ये युद्धपोत भारत के लिए समुद्र से फाइटर जेट्स लॉन्च करने में मददगार होंगे।

सैन्य इतिहासकार श्रीनाथ राघवन के मुताबिक, भारत पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति में हमेशा की तरह इस बात का जोखिम है कि दोनों देश एक-दूसरे की कार्रवाई का गलत अनुमान न लगा लें। अगर भारत ने आतंकी ठिकानों पर हमले किए तो गंभीर संकट और जंग की नौबत भी आ सकती है। भारत सीमापार गोलीबारी शुरू करने का विकल्प अपनाए या मिसाइल हमले करे, दोनों में बहुत जोखिम है।

ट्रंप के मुंह में 'राम', बगल में 'छुरी'!

लादेन को पाकिस्तान में घुसकर मारने वाला अमेरिका दोगलेपन पर उतरा?

पहलगाम में आतंकवादी हमले को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का रवैया बहुत ही ढुलमुल नजर आ रहा है। हमले के बाद से ट्रंप और उनकी सरकार के जो बयान आए हैं, उनमें एकरूपता बिल्कुल नहीं है। सबसे बड़ी बात ये है कि आधिकारिक रूप से तो इस मुद्दे पर अमेरिका तो पूरी तरह से भारत के साथ खड़े होने की बात कर रहा है, लेकिन इसी दौरान ट्रंप का पाकिस्तान प्रेम भी उभर आया है। शुक्रवार को डोनाल्ड ट्रंप समेत अमेरिकी सरकार की ओर से इस आतंकी घटना को लेकर तीन तरह के बयान आए हैं और इनमें जमीन आसमान का फर्क है। बड़ी बात है कि ट्रंप ने 'मोदी इज माई बेस्ट फ्रेंड' वाला नकाब तब उतारा है, जब पाकिस्तानी रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने आतंकवाद के मसले पर अमेरिका और ब्रिटेन के असली चरित्र को बेनकाब कर दिया है।

पहलगाम हमले से शुरू में हाथ खींचने वाले पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने एक इंटरव्यू में मान लिया है कि वह तीन दशकों से आतंकवाद को पाल रहा है। उनका दावा है कि पाकिस्तान यह 'गंदा काम' 'अमेरिका और ब्रिटेन समेत पूरे पश्चिम के लिए करता रहा है। यह गलती थी और हम इसका खामियाजा भुगत चुके हैं।' पाकिस्तान का यह पुराना रवैया रहा है कि वह पहले तो अपने आतंकवादी चरित्र को नकारता है, लेकिन फिर खुद ही उसे कबूल भी कर लेता है। उसकी यह रणनीति 1947-48 से ही चल रही है।

शुक्रवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पहलगाम हमले के बाद यह बयान देकर अमेरिका से लेकर भारत तक में सनसनी मचा दी है कि 'मैं भारत और पाकिस्तान के करीब हूं...कश्मीर का मुद्दा एक हजार सालों से चल रहा है, शायद उससे भी ज्यादा... उस सीमा पर लगभग 1,500 सालों से तनाव है...वे इसे किसी न किसी तरह सुलझा लेंगे।' ट्रंप के इस बयान में आतंकवाद का कहर झेल झुके अमेरिका का पुराना इतिहास छिपा है और शायद उसी की पोल पट्टी खुल रही है तो वह अपने पुराने दोस्त को कूटनीतिक लॉलीपॉप देने की कोशिश कर रहा है!

ट्रंप उसी अमेरिका के राष्ट्रपति हैं, जिसे 9/11 के मास्टरमाइंड ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान में गुपचुप तरीके से घुसकर मारना पड़ा, क्योंकि उसे आशंका थी कि अगर वहां के हुक्कमरानों को भनक लग जाएगी, तो अमेरिका के गुनहगार को सजा देना नाममुकिन होगा। जिस दिन ट्रंप ने पाकिस्तान और भारत को एक तराजू में बराबर तोलने की हिमाकत की, उसी दिन उनकी सरकार की डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंटेलिजेंस तुलसी गबार्ड ने पहलगाम हमले पर भारत से कहा, 'हम आपके साथ हैं और इस जघन्य हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को पकड़ने में आपका समर्थन करते हैं...हम इस भयानक इस्लामी आतंकवादी हमले के बाद भारत के साथ एकजुटता के साथ खड़े हैं...मेरी दुआएं और गहरी संवेदनाएं उन लोगों के साथ हैं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है...प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत के सभी लोगों के साथ हैं।'

तुलसी गबार्ड ने सिर्फ उस लाइन को बढ़ाया, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पहलगाम हमले के बाद अपने फोन कॉल में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था और इस आतंकी वारदात के गुनहगारों को न्याय के कटघरे में लाने में भारत को 'पूर्ण समर्थन' देने का संकल्प लिया था। इसी वजह से गबार्ड के बयान का अर्थ निकाला गया कि चाहे गुनहगारों को सजा देने के लिए भारत पाकिस्तान में घुसकर ही कार्रवाई क्यों न करे, अमेरिका को कोई दिक्कत नहीं होगी। लेकिन, ट्रंप के नए बयान से तो लगता है कि उनकी मंशा साफ नहीं है।

जब अमेरिका में 9/11 हुआ तो आतंकवाद के प्रति उसका नजरिया बदल गया। उसने पाकिस्तान में घुसकर उसका बदला लिया। अब जब भारत में उसे आतंकवाद के खिलाफ खुलकर खड़े होने का मौका मिला है, तो वहां के राष्ट्रपति ट्रंप मुंह में 'राम', बगल में 'छुरी'वाला पैंतरा दिखा रहे हैं। ये वही ट्रंप हैं, जो पीएम मोदी के बारे में 'मोदी इज माई बेस्ट फ्रेंड' कह चुके हैं। ऐसे में तो आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत का सबसे सच्चा मित्र इजराइल है, जो इस मुद्दे पर कभी कंफ्यूज नहीं रहा और बिना लाग लपेट के साथ भारत के साथ खड़ा रहा है।

दिल्ली वक्फ बोर्ड की संपत्ति 12 साल में 9 से 1047 हुई

केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि 2013 में वक्फ एक्ट, 1995 में एक बदलाव किया गया था। इस बदलाव से पहले, बिना रजिस्ट्रेशन वाले वक्फ पर कोई दावा नहीं कर सकता था। लेकिन बदलाव के बाद वक्फ बोर्ड की संपत्तियों में भारी बढ़ोतरी हुई है। पहले पूरे देश में वक्फ बोर्ड के पास 2,07,394 संपत्तियां थीं। इनका क्षेत्रफल 18.3 लाख एकड़ था। 2013 में संशोधन होने के बाद, ये संपत्तियां बढ़कर 8,72,870 हो गईं। अब इनका क्षेत्रफल 39 लाख एकड़ हो गया है।

दिल्ली वक्फ बोर्ड का उदाहरण लेते हैं। 2013 में उनके पास सिर्फ नौ संपत्तियां थीं। इनका क्षेत्रफल 0.03 एकड़ था। लेकिन 2025 तक, उनके नियंत्रण में 1,047 संपत्तियां हो गईं। इनका क्षेत्रफल 28 एकड़ हो गया है। जम्मू और कश्मीर में तो और भी ज्यादा बदलाव हुआ है। 2013 में औकाफ बोर्ड के पास सिर्फ एक संपत्ति थी। इसका क्षेत्रफल 0.42 एकड़ था। 2025 तक, उनके पास 32,533 संपत्तियां हो गईं। इनका क्षेत्रफल 31.4 एकड़ हो गया है। ये जानकारी केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को दी है।

दूरदराज के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भी वक्फ संपत्तियां बढ़ी हैं। 2013 में यहां 35 संपत्तियां थीं। 2025 में ये बढ़कर 151 हो गईं। इस दौरान 138 एकड़ जमीन और जुड़ गई। सबसे कम बढ़ोतरी मेघालय में हुई है। यहां 2013 में 51 वक्फ संपत्तियां थीं। 2025 में ये बढ़कर 58 हो गईं। मेघालय में ईसाई धर्म के लोग 75% हैं, हिंदू 11% और आदिवासी समूह 9% हैं।

राजस्थान में भी वक्फ संपत्तियों में मामूली वृद्धि हुई। 12 सालों में 7,769 संपत्तियां बढ़ीं। 2013 में यहां 23,126 संपत्तियां थीं। तमिलनाडु में 2013 में 43,623 वक्फ संपत्तियां थीं। अगले 12 सालों में 22,469 और जुड़ गईं। उत्तर प्रदेश में सुन्नी वक्फ संपत्तियां 2013 में 12,914 थीं। 2025 में ये बढ़कर 2,17,161 हो गईं। पश्चिम बंगाल में ऐसी संपत्तियां 2013 में 17,946 थीं। 2025 में ये बढ़कर 80,808 हो गईं। गुजरात में वक्फ संपत्तियां 2013 में 3,074 थीं। 2025 में ये बढ़कर 39,940 हो गईं। आंध्र प्रदेश में भी भारी वृद्धि हुई। यहां 2013 में 390 संपत्तियां थीं। 2025 में ये बढ़कर 14,685 हो गईं।

केंद्र सरकार ने कहा कि बिना रजिस्ट्रेशन के वक्फ संपत्तियों में तेज वृद्धि हो रही है। वक्फ बोर्ड खुद ही किसी संपत्ति को वक्फ घोषित कर रहे हैं। इसलिए सरकार 2025 में संशोधन लाई। सरकार का कहना है कि इसका मकसद है कि देश में वक्फ बोर्ड ठीक से काम करें और पारदर्शिता हो। वक्फ कानून का बार-बार गलत इस्तेमाल न हो, जिससे लोगों की निजी संपत्ति छिन जाए और सरकारी जमीन पर कब्जा हो जाए।

सरकार ने आगे कहा कि ये संशोधन इसलिए जरूरी था क्योंकि देश भर में बार-बार ऐसे मामले सामने आए हैं जहां वक्फ बोर्ड ने सरकारी जमीन, सार्वजनिक सुविधाओं और संरक्षित स्मारकों पर मालिकाना हक जताया है। उनके पास कोई दस्तावेज, सर्वे या कानूनी फैसला नहीं था। वे सिर्फ बोर्ड के रिकॉर्ड के आधार पर दावा कर रहे थे। इन दावों में कलेक्टर के ऑफिस, सरकारी स्कूल, एएसआई द्वारा संरक्षित विरासत स्थल और राज्य या नगर निगम के अधीन जमीन शामिल थी। एएसआई भारत सरकार का एक विभाग है जो ऐतिहासिक इमारतों और स्थलों की देखभाल करता है।

बर्बाद होता ड्रैगन और भारतीय कंपनियां

शिवानन्द मिश्रा

90% चर्चा इस बात पर होती है कि चीन ने विश्व अर्थव्यवस्था को कैसे हाईजैक किया और कैसे वे ऐसा करने के लायक नहीं हैं, कैसे सभी राजनेताओं ने हमें निराश किया है और कैसे वे सभी बौद्धिक संपदा चुरा रहे हैं और कैसे हम बर्बाद हो जाएँगे यदि हम टिकटॉक डाउनलोड करना बंद नहीं करते हैं।

यह सत्य है या नहीं, यह लेख इस कथन से असहमत होने के बारे में नहीं है। इसका आशय इस तथ्य के बारे में नहीं है कि अमेरिका में एक औसत चीनी छात्र अपने काम के घंटों के मामले में अन्य सभी छात्रों (भारतीयों सहित) से बेहतर है और उसका एकमात्र नुकसान यह है कि उसकी अंग्रेजी अच्छी नहीं है लेकिन वह उस स्तर पर पहुँच रही है। यह लेख इस तथ्य के बारे में नहीं है कि चीन के लोग कड़ी मेहनत करते हैं जबकि इतालवी लोग छुट्टियाँ मनाते हैं और फ्रांसीसी लोग 4 दिन का सप्ताह चाहते हैं अथवा आप भारत में एक अच्छे मशीनिस्ट या जालसाज को काम पर नहीं रख सकते क्योंकि वे सभी कॉल सेंटर में बैठे हैं और तकनीकी रूप से चुनौती प्राप्त अमेरिकियों के सवालों का जवाब दे रहे हैं। ये सत्य है कि चीन और उसके लोग उस स्थान के लायक नहीं हैं जहाँ वे पहुँचे हैं। यह लेख एक ऐसे उद्योग के बारे में है, जिसमें चीन को भारत ने मात दी है।

सरकार ही नहीं, वास्तव में कंपनियां ही प्रतिस्पर्धा करती हैं और जहां तक भारत का सवाल है, विनिर्माण के पतन के लिए जिम्मेदार लोग ये कंपनियां हैं।

मुंबई में इंजीनियरिंग कॉलेज जिसे सर्वश्रेष्ठ में से एक माना जाता है, से किसी ने जिस भी शाखा में अध्ययन किया है- मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, सिविल, प्रोडक्शन, टेक्सटाइल, 80% सॉफ्टवेयर उद्योग के लिए कोडर बन जाते हैं।

उन कॉलेजों में प्लेसमेंट के लिए साक्षात्कार के वक्त कैंपस आयोजित करने के लिए हर कॉलेज में प्रशिक्षण और प्लेसमेंट अधिकारी (टीपीओ) द्वारा बताया जाता है कि प्रौद्योगिकी कंपनियों को प्राथमिकता दी जाती है।

लेकिन यह समझ में नहीं आता, क्या इंजन बनाना तकनीक नहीं है? भारत में इसे तकनीक नहीं, विनिर्माण के रूप में लिया जाता है। TCS के किसी कर्मचारी द्वारा न्यूयॉर्क में बैंक के लिए कोबोल कोड लिखना तकनीक माना जाता है। हो सकता है कि चीनियों ने हमें ऐसा करने के लिए मजबूर किया हो।

भारतीय कंपनी बजाज ऑटो ने अपना R&D बनाया। बैच दर बैच मोटरसाइकिलों की डिजाइनिंग और निर्माण को आकर्षक बनाना और इसके लिए भुगतान करना। चयन अनुपात 1:15 था। अधिकांश IIT, REC और VJTI में टॉपर थे जो बिल्कुल बेकार थे। वे कार्नोट साइकिल नहीं बना सकते थे, डीजल और पेट्रोल इंजन के बीच अंतर नहीं बता सकते थे। उन्हें ऊंचाई और योजना दें, वे साइड व्यू नहीं बना सकते थे। उनमें से अधिकांश कोड लिखने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, जैसा कि भारत में प्रचलन चल रहा है लेकिन ऐसे रत्न भी हैं, जो भावुक और जानकार हैं लेकिन अंग्रेजी में व्यक्त नहीं कर सकते हैं। जब हिंदी, मराठी, तेलुगु, तमिल और इसी तरह के अन्य भाषाओं में साक्षात्कार आयोजित किया जाय तो ऐसे रत्न मिलते हैं।

ये भारतीय, सरकार, अंग्रेजी बोलने, लिखने वाले एलीट क्लास अपने को समझने वाले से लाख गुना बेहतर हैं।वर्ष 2005 में, चीनी मोटरसाइकिलों ने 30% सस्ते उत्पादों के साथ भारत पर हमला किया। कई डीलरों ने उन्हें बेचना शुरू कर दिया। प्रेस ने भारतीय निर्माताओं के खत्म होने की भविष्यवाणी की। 6 महीने के भीतर वे दिवालिया हो गए। उनकी गुणवत्ता भारतीय मोटरसाइकिलों के बराबर नहीं थी। वे फिर कभी वापस नहीं आए।

बजाज ने फिर अफ्रीका में उन पर हमला करना शुरू कर दिया। अफ्रीकियों के पास दो विकल्प थे; महंगी जापानी मोटरसाइकिलें खरीदें या सस्ती चीनी मोटरसाइकिलें। चीनी मोटरसाइकिलें एक बॉक्स में आती थीं। आप बॉक्स खरीदते हैं और उसे मैकेनिक के पास ले जाते हैं और वह उसे असेंबल कर देता है। नाइजीरिया में मोटरसाइकिलों का इस्तेमाल टैक्सी के रूप में किया जाता है। इसलिए कोई भी आपको एक पैसा भी ज़्यादा नहीं देगा।

ऐसे ही बाजार में बजाज ने अपनी पूरी तरह से असेंबल की गई मोटरसाइकिल लॉन्च की और कड़ी मेहनत की। कीमत चीनी से ज़्यादा और जापानी से कम। आज बजाज मार्केट लीडर है। टीवीएस दूसरे नंबर पर है। चीनियों को बाहर कर दिया गया है। आप ओकाडा (टैक्सी ड्राइवर) के बजाज बाइक के प्रति प्रेम को बखूबी देख सकते हैं। अफ्रीका में देश दर देश, दक्षिण अमेरिका में भारतीयों ने बाजार पर कब्जा कर लिया और चीनियों को बाहर कर दिया है।2018 में भारत दुनिया में दोपहिया वाहनों का सबसे बड़ा निर्माता बन गया (चीन से दोगुना)। भारतीय कंपनियों ने यूरोपीय ब्रांड खरीदना शुरू कर दिया है।

सतुवाई अमावस्या: रविवार और अमावस्या के योग में सूर्य पूजा के साथ पितरों के लिए धूप-ध्यान करने का योग

रविवार, 27 अप्रैल को वैशाख मास की अमावस्या है, इसे सतुवाई अमावस्या कहा जाता है। इस तिथि पर पूजा-पाठ के साथ ही दान-पुण्य और पितरों के लिए धूप-ध्यान करने की परंपरा है। ज्योतिष में सूर्य को रविवार का कारक ग्रह माना जाता है। इसलिए रविवार और अमावस्या के योग में दिन की शुरुआत सूर्य पूजा के साथ करनी चाहिए। इस अमावस्या पर सत्तु का दान करने का विधान है।

अभी गर्मी का समय है, इसलिए वैशाख अमावस्या पर जरूरतमंद लोगों को जूते-चप्पल, जल, कपड़े, खाना और छाते का दान करना चाहिए। अमावस्या को भी पर्व की तरह माना जाता है। इस तिथि के स्वामी पितर देव माने जाते हैं।

कब और कैसे करें पितरों के लिए धूप-ध्यान?

पितरों के लिए धूप-ध्यान करने का सबसे अच्छा समय दोपहर का होता है। सुबह-शाम देवी-देवताओं की पूजा के लिए सबसे अच्छा समय रहता है और दोपहर में करीब 12 बजे पितरों के लिए धूप-ध्यान करने का समय बताया गया है। इस समय को कुतप काल कहते हैं। अमावस्या की दोपहर में गोबर के कंडे जलाएं और जब कंडों से धुआं निकलना बंद हो जाए, तब अंगारों पर गुड़ और घी से धूप अर्पित करें।

सतुवाई अमावस्या से जुड़ी खास बातें

इस अमावस्या पर किसी पवित्र नदी में स्नान करें और स्नान के बाद नदी किनारे दान-पुण्य जरूर करें।

इस अमावस्या पर किसी सार्वजनिक स्थान पर प्याऊ लगवाएं या किसी प्याऊ में मटके का और जल का दान भी कर सकते हैं।

जरूरतमंद लोगों को भोजन कराएं। मौसमी फल जैसे आम, तरबूज, खरबूजा का दान करें।

जूते-चप्पल, सूती वस्त्र, छाता भी दान कर सकते हैं। किसी गोशाला में गायों की देखभाल के लिए धन का दान करें और गायों को हरी घास खिलाएं।

अमावस्या पर सुबह जल्दी उठें और स्नान के बाद सूर्य देव को अर्घ्य अर्पित करें। इसके लिए तांबे के लोटे का इस्तेमाल करें। अर्घ्य चढ़ाते समय ऊँ सूर्याय नमः मंत्र का जप करना चाहिए। सूर्य को पीले फूल चढ़ाएं। सूर्य देव के लिए गुड़ का दान करें। किसी मंदिर में पूजा-पाठ में काम आने वाले तांबे के बर्तन दान कर सकते हैं।

घर की छत पर या किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर पक्षियों के लिए दाना-पानी रखें।

वैशाख मास की अमावस्या पर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जप करते हुए शिवलिंग पर ठंडा जल चढ़ाएं।

बिल्व पत्र, धतूरा, आंकड़े का फूल, जनेऊ, चावल आदि पूजन सामग्री अर्पित करें। मिठाई का भोग लगाएं। धूप-दीप जलाएं, आरती करें। पूजा के बाद प्रसाद बांटें और खुद भी लें। किसी मंदिर में शिवलिंग के लिए मिट्टी के कलश का दान करें, जिसकी मदद से शिवलिंग पर जल की धारा गिराई जाती है।

चावल से तृप्त होते हैं पितर देव

चावल से बने सत्तू का दान इस दिन पितरों के लिए किए जाने वाले श्राद्ध में चावल से बने पिंड का दान किया जाता है और चावल के ही आटे से बने सत्तू का दान किया जाता है। इससे पितृ खुश होते हैं। चावल को हविष्य अन्न कहा गया है यानी देवताओं का भोजन। चावल का उपयोग हर यज्ञ में किया जाता है। चावल पितरों को भी प्रिय है। चावल के बिना श्राद्ध और तर्पण नहीं किया जा सकता। इसलिए इस दिन चावल का विशेष इस्तेमाल करने से पितर संतुष्ट होते हैं।

युधिष्ठिर और कर्ण की प्रेरक कथा

सच्ची सेवा वही है जो सहानुभूति और दूरदृष्टि से की जाए

महाभारत में जीवन प्रबंधन, नैतिकता और नेतृत्व के गहरे सूत्र छिपे हैं। महाभारत में एक कथा है, जिसमें युधिष्ठिर और कर्ण की तुलना होती है। कथा में जब एक व्यक्ति अपने पिता के दाह संस्कार के लिए चंदन की लकड़ियां खोजते हुए पहले युधिष्ठिर और फिर कर्ण के पास पहुंचता है।

उसके पिता का देहांत हो गया तो वह सोचने लगा कि मुझे अपने पिता का अंतिम संस्कार चंदन की लकड़ियों से करना चाहिए। इस समय बारिश हो रही थी, इस कारण कहीं भी चंदन की सूखी लकड़ियां नहीं थीं। उस व्यक्ति ने विचार किया कि मुझे अपने राजा युधिष्ठिर के पास जाना चाहिए।

युधिष्ठिर के पास संसाधनों की कोई कमी नहीं थी। जब व्यक्ति युधिष्ठिर के पास पहुंचा तो युधिष्ठिर ने उससे कहा कि चंदन की लकड़ियां तो बहुत हैं, लेकिन बारिश की वजह से भीग गई हैं। ये सुनकर वह व्यक्ति वहां से निराश होकर कर्ण के पास पहुंचा। कर्ण की स्थिति भी वही थी, उसके पास की चंदन की लकड़ियां भी भीग चुकी थीं, लेकिन कर्ण ने थोड़ा सोच-विचार किया कि मेरे द्वार से आज तक कोई खाली हाथ नहीं गया है, इसे भी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। कर्ण के पास जो सिंहासन था, वह चंदन की लकड़ी से ही बना था। कर्ण ने तुरंत ही अपना सिंहासन तोड़कर उस व्यक्ति को चंदन की लकड़ियां दे दीं।

चंदन की लकड़ी का सिंहासन तो युधिष्ठिर के पास भी था, लेकिन युधिष्ठिर ऐसा कुछ सोच नहीं सके। इस घटना के बाद ये चर्चा होने लगी थी कि ज्यादा बड़ा दानी कौन है- युधिष्ठिर या कर्ण।

इस कथा से जीवन प्रबंधन की तीन बातें हम सीख सकते हैं। पहली बात - समस्या नहीं, उसके समाधान पर ध्यान देना चाहिए।

युधिष्ठिर ने देखा कि लकड़ियां भीगी हैं और निष्कर्ष पर पहुंच गए कि उनके चंदन की सूखी लकड़ियां नहीं हैं। दूसरी ओर कर्ण ने समस्या के समाधान के बारे में सोचा। यही सफल जीवन प्रबंधन का मूलमंत्र है, जब परिस्थिति जटिल हो, तब समाधान ढूंढने की कोशिश करनी चाहिए।

दूसरी बात - दान समझदारी से देना चाहिए। कर्ण ने ये नहीं सोचा कि सिंहासन कट जाएगा, बल्कि ये देखा कि किसी की अंतिम इच्छा पूरी हो सकती है। यही सच्ची उदारता है, जो समय, स्थान और पात्र को समझकर निर्णय लेती है। हमें भी दान देते समय समझदारी से काम लेना चाहिए।

तीसरी बात - सम्मान पद से नहीं अच्छे कर्म से मिलता है। युधिष्ठिर राजा थे, पर कर्ण का ये कर्म श्रेष्ठ था। ऐसे ही कर्मों की वजह से कर्ण को दानवीर कहा जाता है।

किसी की मदद करनी हो तो हमें सिर्फ अपना सामर्थ्य देखना काफी नहीं, समय और सामने वाले की भावना भी समझनी चाहिए।

जब कोई जरूरतमंद दिखाई दे तो उसकी जरूरत को समझकर दान करें। कर्ण और युधिष्ठिर की यह कथा हमें सिखाती है कि सच्ची सेवा वही है जो सहानुभूति और दूरदृष्टि से की जाए। तभी हम भी अपने जीवन में दानवीर बन सकते हैं।

अक्सर सपने में दिखाई देती है कुल देवी? किसी बड़ी घटना का संकेत!

हर व्यक्ति के जीवन में सपनों का खास महत्व होता है। कई बार ऐसे सपने आते हैं जो सिर्फ कल्पना नहीं होते, बल्कि वे कोई खास संदेश लेकर आते हैं। अगर आपने हाल ही में या अक्सर सपने में अपनी कुलदेवी को देखा है, तो यह एक सामान्य बात नहीं है। स्वप्न शास्त्र के अनुसार, कुलदेवी का बार बार सपने में दिखना आपके जीवन से जुड़े कुछ खास इशारे देता है

क्या मतलब है कुलदेवी का सपने में आने से

कुलदेवी को परिवार की रक्षक माना जाता है। जब वे सपने में बार बार नजर आती हैं, तो इसका मतलब होता है कि आपके जीवन में कुछ अच्छा होने वाला है या कोई परेशानी खत्म होने की ओर बढ़ रही है। यह सपना संकेत देता है कि कुलदेवी आपके साथ हैं और आपके ऊपर उनका आशीर्वाद है।

ये संकेत अच्छे होते है

अगर कुलदेवी आपके सपने में शांत भाव में दिखती हैं या मुस्कुरा रही होती हैं, तो यह बहुत ही शुभ संकेत होता है। यह आपके घर में सुख शांति और तरक्की की ओर इशारा करता है। अगर कोई काम लंबे समय से अटका हुआ है, तो वह अब पूरे होने लगेंगे।

क्या कुछ गलत होने की ओर इशारा कर रही है

कई बार कुलदेवी का अचानक बार बार सपने में आना किसी आने वाली परेशानी का संकेत भी हो सकता है। लेकिन डरने की जरूरत नहीं है।

यह सपना आपको पहले से आगाह करता है कि आप सावधान हो जाएं और कुलदेवी से मन ही मन प्रार्थना करें। इससे आपको सही रास्ता मिल सकता है और मुश्किलें आसान हो सकती हैं।

इन छोटे छोटे आसान उपाय से कुल देवी को खुश करें

अगर आप बार बार ऐसे सपने देख रहे हैं, तो यह समय है जब आप अपनी कुलदेवी को प्रसन्न करें। इसके लिए कुछ आसान उपाय अपनाए जा सकते हैं

रोज रात घी का दीपक जलाएं

रात को सोने से पहले कुलदेवी के सामने घी का दीपक जलाएं। आंखें बंद करके उनके सामने ध्यान लगाएं और घर की सुरक्षा की प्रार्थना करें।

कुल देवी को पीले चावल चढें

हल्दी में लिपटे हुए पीले चावल को पानी में भिगोकर कुलदेवी को चढ़ाना शुभ माना जाता है। इसके साथ चंदन और सिंदूर का तिलक भी करें।

पान भी भोग चढें

कुलदेवी को पान में इलायची, लौंग, सुपारी, गुलकंद और थोड़ी दक्षिणा रखकर अर्पित करें। इससे घर की दिक्कतें दूर होने लगती हैं।

सुपारी को भी पूजा में करें शामिल करें

अगर कुलदेवी की मूर्ति या तस्वीर उपलब्ध नहीं है, तो एक साफ सुपारी लेकर उस पर कलावा लपेटें और उसे कुलदेवी का प्रतीक मानकर पूजा करें।

क्या आपके घर आने वाली है नई संतान?

मई 2025 में लगने वाले विष योग और ग्रहण योग की जानकारी दे रहे हैं, ताकि जन्म से पहले ही अशुभ योगों से बचाव किया जा सके। जब किसी दंपत्ति के घर संतान का आगमन होने वाला होता है और कई बार डॉक्टर यह संकेत देते हैं कि डिलीवरी सामान्य नहीं होकर ऑपरेशन द्वारा होनी पड़ेगी, तो माता-पिता की इच्छा होती है कि बच्चा अगर संभव हो तो सहज और शुभ समय में जन्म ले।

ऐसे में अगर डॉक्टर की सलाह और ज्योतिषीय दृष्टिकोण का समन्वय हो, तो बच्चे के जन्म का समय थोड़ा आगे-पीछे किया जा सकता है, जिससे उसकी कुंडली में बनने वाले दोष जैसे विष योग, ग्रहण योग, मांगलिक दोष आदि से बचा जा सकता है। साथ ही, कुंडली में शुभ योग जैसे राजयोग आदि बनाने की संभावनाएं भी बढ़ाई जा सकती हैं।

क्या होता है विष योग?

विष योग तब बनता है जब चंद्रमा और शनि एक ही राशि में स्थित होते हैं। चंद्रमा जहां मन, माता और शरीर के जल तत्व का प्रतीक माना जाता है। वहीं शनि को पीड़ा और रोगों का कारक माना जाता है। इन दोनों की युति को ज्योतिष में बेहद अशुभ माना गया है। संतान की कुंडली में यह योग अशुभ फल प्रदान कर सकता है।

मई 2025 में यह योग कब बन रहा है?

आरंभः 22 मई 2025, सुबह 7:50 बजे (चंद्रमा मीन राशि में प्रवेश करेगा, जिसमें शनि पहले से ही हैं)

समाप्तिः 24 मई 2025, सुबह 10:38 बजे तक

इस काल में चंद्रमा और शनि दोनों मीन राशि में रहेंगे। यह पूरा समय विष योग कहलाएगा। इस दौरान जन्म लेने वाले शिशुओं की कुंडली में यह योग बनेगा। इसे मानसिक, शारीरिक और पारिवारिक दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं माना जाता।

ग्रहण योग

ग्रहण योग तब बनता है जब चंद्रमा राहु या केतु के साथ एक ही राशि में आता है। समुद्र मंथन की पौराणिक कथा में जिन राक्षसों को राहु और केतु कहा गया है, वे चंद्रमा के शत्रु माने जाते हैं। जब चंद्रमा इनसे युति करता है तो यह कुंडली में ग्रहण योग का निर्माण करता है, जिससे संतान के मानसिक, पारिवारिक व स्वास्थ्य जीवन में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं।

मई 2025 में ग्रहण योग कब बन रहा है?

आरंभः 08 मई 2025, सुबह 2:51 बजे से
चंद्रमा कन्या राशि में प्रवेश करेगा जहां पहले से केतु स्थित है।

समाप्तिः 10 मई 2025, दोपहर 1:48 बजे तक

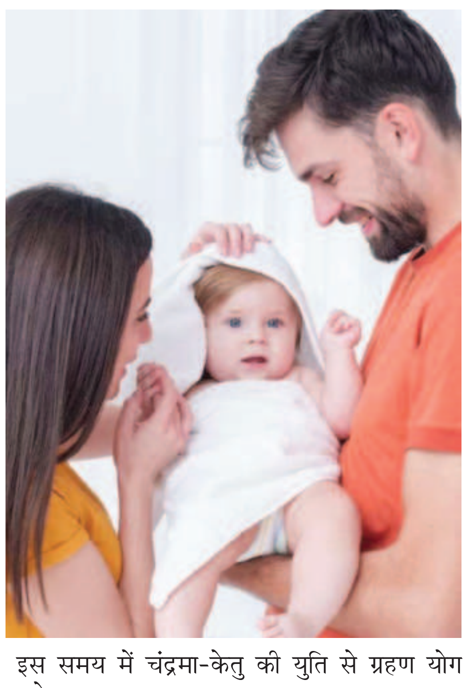

इस समय में चंद्रमा-केतु की युति से ग्रहण योग बनेगा।

यह कालखंड विष योग और ग्रहण योग दोनों का समन्वय लिए हुए है। इस समय विष योग और ग्रहण योग दोनों ही प्रभाव में रहेंगे। इसे अत्यंत अशुभ माना जाता है। यह समय बनारस पंचांग पर आधारित है, जो सबसे अधिक मान्यता प्राप्त पंचांगों में गिना जाता है।

वैशाख अमावस्या के दिन चुपके से कर लें ये काम

पितृ हो जाएंगे प्रसन्न

हिन्दू धर्म में अमावस्या तिथि का बहुत अधिक महत्व है। साल में 12 अमावस्या तिथियां होती हैं, लेकिन वैशाख माह की अमावस्या का विशेष महत्व है। वैशाख का महीना दान-पुण्य के लिए बहुत शुभ माना जाता है।

अमावस्या की तिथि भी बहुत पावन और विशेष मानी जाती है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा का विधान है और पितरों का तर्पण और पिंडदान भी किया जाता है। इस दिन कुछ ऐसे उपाय हैं जिन्हें करने से भगवान शंकर, मां लक्ष्मी और पितृ प्रसन्न होते हैं।

वैशाख अमावस्या कब मनाई जाएगी?

वैदिक पंचांग के अनुसार, वैशाख कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि की शुरुआत 27 अप्रैल को सुबह 4 बजकर 28 मिनट पर होगी। अमावस्या तिथि 27 अप्रैल को देर रात 1 बजकर 2 मिनट पर समाप्त होगी। उदयातिथि के अनुसार, वैशाख अमावस्या 27 अप्रैल 2025 को मनाई जाएगी।

वैशाख अमावस्या पर जरूर करें ये उपाय

1. यदि आप चाहते हैं कि मां लक्ष्मी की कृपा आप पर बनी रहे, तो वैशाख अमावस्या के दिन स्नान-दान करने के बाद शाम को ईशान कोण में गाय के घी का दीपक जलाएं। ध्यान रहे कि दीपक की बत्ती लाल रंग की हो। दीपक जलाने के बाद कनकधारा स्त्रोत का पाठ करें। इस उपाय से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और कभी धन की कमी नहीं होती।

2. वैशाख अमावस्या के दिन भगवान शिव की पूजा करना बहुत लाभदायक होता है। इस दिन प्रातः स्नान करने के बाद गाय के कच्चे दूध से भगवान शिव का अभिषेक करें। ऐसा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है और भगवान भोलेनाथ की कृपा से आपके कार्यों में आ रही रुकावटें समाप्त हो जाती हैं।

3. इस दिन सुबह यदि संभव हो तो नदी में स्नान करें, वरना घर पर स्नान करने के बाद पीपल के पेड़ की पूजा करें। कच्चे सूत से 108 बार पीपल के पेड़ की परिक्रमा करें।

इसके बाद गरीबों को जरूरत की चीजें दान करें और ब्राम्हण को भोजन कराएं। इस उपाय से पितरों की आत्मा को तृप्ति मिलती है और वे प्रसन्न होकर हमें खुशहाल रहने का आशीर्वाद देते हैं।

40 साल बाद अक्षय तृतीया पर 3 ग्रहों का अद्भुत संयोग

अक्षय तृतीया पर बनेगा स्वर्ण योग 2025
इस साल अक्षय तृतीया के दिन स्वर्ण योग बन रहा है। शास्त्रों के अनुसार, अक्षय तृतीया के अवसर पर रोहिणी नक्षत्र होने पर यह संयोग स्वर्ण योग से युक्त होता है। इस साल अक्षय तृतीया 30 अप्रैल को शाम 5 बजकर 50 मिनट तक है। इस साल रवि योग और अमृत सिद्धि योग की वजह से अक्षय तृतीया अति विशिष्ट बन गई है।

अक्षय तृतीया पर 40 साल बाद ग्रहों का अद्भुत संयोग

पंचांग के अनुसार, इस बार की अक्षय तृतीया पर 40 साल बाद 3 ग्रहों सूर्य, शुक्र और चंद्रमा का अद्भुत संयोग बन रहा है। सूर्य देव मेष राशि में, चंद्रमा वृषभ राशि में और शुक्र मीन राशि में उच्च के होकर विराजमान होंगे।

रोहिणी नक्षत्र की अक्षय तृतीया शुभ फलदायी

शास्त्रों के अनुसार, यदि अक्षय तृतीया रोहिणी नक्षत्र में हो तो वह शुभ फलदायी मानी जाती है। इसमें दुष्टों का नाश होता है और किसानों को लाभ होता है। ऐसे योग में धान की उत्तम फसल होती है।

अक्षय तृतीया 2025 शुभ मुहूर्त

अक्षय तृतीया के दिन सुबह 4 बजे से लेकर सुबह 6 बजकर 19 मिनट तक वृषभ लग्न है, दिन में 10 बजकर 51 मिनट से दोपहर 1 बजकर 5 मिनट तक सिंह लग्न और शाम 5 बजकर 34 मिनट से शाम 7 बजकर 51 मिनट वृश्चिक लग्न और रात में 11 बजकर 44 मिनट से देर रात 1 बजे तक स्थिर कुंभ लग्न हैं। इन 4 शुभ मुहूर्तों में आप कोई भी शुभ कार्य करते हैं तो वह अत्यंत ही फलदायी होगी।

अक्षय तृतीया पर खरीदें सोना, बढ़ेगा धन-धान्य

भविष्य पुराण में बताया गया है कि अक्षय तृतीया के दिन जो लोग सोने की खरीदारी करते हैं, उनके धन और धान्य में बढ़ोत्तरी होती है।

अक्षय तृतीया 2025 6 राशियों के लिए शुभ
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, इस बार की अक्षय तृतीया का प्रभाव 6 राशियों के लिए शुभ होगा।

1. मेष राशि के लोगों को यश की प्राप्ति होगी।
2. वृषभ और कर्क राशि के लोगों को कार्य सफल होंगे और शत्रुओं पर विजय हासिल होगी।
3. सिंह राशि के लोगों के धन और धान्य में बढ़ोत्तरी होगी।
4. तुला और धनु राशि के लोगों के लिए सर्व सिद्धि योग बन रहा है, जिससे आपके कार्य सफल सिद्ध होंगे।

अमावस्या पर नदी स्नान करने की है परंपरा, पक्षियों के लिए घर की छत पर रखें दाना-पानी

रविवार, 27 अप्रैल को वैशाख मास की अमावस्या है। इसका नाम है सतुवाई अमावस्या। इस पर्व पर सत्तु दान और पवित्र नदियों में स्नान करने की परंपरा है। जो लोग नदी स्नान नहीं कर पा रहे हैं, वे घर पर ही पानी में गंगाजल मिलाकर स्नान कर सकते हैं, ऐसा करने से घर पर नदी स्नान के समान पुण्य मिल सकता है।

उज्जैन के ज्योतिषाचार्य पं. मनीष शर्मा के मुताबिक, वैशाख माह की अमावस्या पर पूजा-पाठ करने के साथ ही पानी का दान करने का विशेष महत्व है, क्योंकि अभी गर्मी का समय है और गर्मी के दिनों में पानी पिलाने का काम अक्षय पुण्य देता है। इस अमावस्या पर किसी सार्वजनिक स्थान पर प्याऊ लगवा सकते हैं। अगर ये संभव न हो तो किसी प्याऊ में मटके का दान करें और पानी की व्यवस्था करवाएं। अपने घर की छत पर पक्षियों के लिए दाना-पानी भी रखें।

जानिए इस दिन कौन-कौन से शुभ काम किए जा सकते हैं...

रविवार को सुबह जल्दी उठें और स्नान के बाद सूर्य को तांबे के लोटे से जल चढ़ाएं। ऊँ सूर्याय नमः मंत्र का जप करें। सूर्य के लिए गुड़ का दान करें। किसी मंदिर में पूजा-पाठ में काम आने वाले तांबे के बर्तन दान कर सकते हैं।

इन दिनों में गर्मी काफी अधिक रहती है। इसलिए जरूरतमंद लोगों को खाना और पानी दान करें। सार्वजनिक जगहों पर पेड़-पौधों को पानी दें।

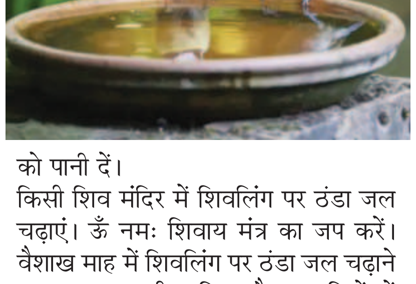

किसी शिव मंदिर में शिवलिंग पर ठंडा जल चढ़ाएं। ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जप करें। वैशाख माह में शिवलिंग पर ठंडा जल चढ़ाने का महत्व काफी अधिक है। इन दिनों में शिवलिंग पर मिट्टी के कलश से जल की धारा गिराई जाती है। माना जाता है कि ऐसा करने से शिव जी को शीतलता मिलती है और वे अपने भक्तों पर कृपा बरसाते हैं। शिव जी की कृपा से भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं और बाधाएं दूर होती हैं।

अमावस्या पर घर के पितरों के लिए धूप-ध्यान करना चाहिए। इस तिथि के स्वामी पितर देव ही माने जाते हैं, इसलिए अमावस्या पर पितरों के नाम से दान भी करना चाहिए। इस दिन धूप-ध्यान करने के लिए दोपहर करीब 12 बजे गोबर के कंडे जलाएं और जब कंडों से धुआं निकलना बंद हो जाए, तब अंगारों पर गुड़ और घी से अर्पित करें। पितरों का ध्यान करें। हथेली में जल लें और अंगूठे की ओर से पितरों को चढ़ाएं।

अमावस्या पर हनुमान जी का चोला चढ़वाएं। ये संभव न हो तो हनुमान मंदिर में सिंदूर और चमेली का तेल अर्पित करें। भगवान के सामने दीपक जलाएं। सुंदरकांड, हनुमान चालीसा का पाठ करें, राम नाम का जप करें। आप चाहें तो ऊँ रामदूताय नमः मंत्र का जप भी कर सकते हैं।

सतुवाई अमावस्या से बाद तीसरे दिन अक्षय तृतीया (30 अप्रैल) है। इस दिन भगवान परशुराम का प्रकट उत्सव मनाया जाता है। ये दिन अबुझ मुहूर्त माना जाता है यानी अक्षय तृतीया पर बिना मुहूर्त देखे विवाह, गृह प्रवेश जैसे मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं। अक्षय तृतीया पर भी पूजा-पाठ के साथ ही दान-पुण्य खासतौर पर करना चाहिए।

सोनाक्षी सिन्हा का 'मुंहतोड़ जवाब'

सोशल मीडिया पर अपने पति जहीर इकबाल के साथ रोमांटिक और चुलबुले वीडियोज शेयर करने वाली 'दबंग' गर्ल सोनाक्षी सिन्हा ने खुद को ट्रोल करने वाले को 'खामोश' कहते हुए ऐसा करारा जवाब दिया, जिसे सुनने के बाद उसके मुंह से आवाज नहीं निकल रही। जहीर से हुए अंतरधार्मिक विवाह करने वाली सोनाक्षी अक्सर ही ट्रोलर्स के निशाने पर आ जाती है। जहीर के साथ हंसी-खुशी अपना वैवाहिक जीवन बिताने वाली सोनाक्षी का दिमाग उस वक्त भन्ना उठा जब एक ट्रोलर ने उससे कहा कि तुम्हारा तलाक भी जल्द होगा।

ट्रोलर की बात को सुनने के बाद सोनाक्षी का पारा न केवल सातवें आसमान पर पहुंच गया, बल्कि ट्रोलर की क्लास लगाने के साथ उसे करारा जवाब देते हुए सोनाक्षी ने लिखा, "पहले तेरे मम्मी- पापा करेंगे और फिर हम। प्रॉमिस। इसके बाद फिर से सोनाक्षी ने एक और ट्रोलर की क्लास लगाई। हाल ही में सोनाक्षी ने जहीर के साथ एक रोमांटिक फोटो शेयर की, जिस पर कमेंट करते हुए एक यूजर ने लिखा, "उम्मीद नहीं थी इस पागल से शादी करोगी। बस फिर क्या था, जैसे ही सोनाक्षी की नजर इस कमेंट पर पड़ी, उसने भी यूजर को जबरदस्त अंदाज में जवाब देते हुए लिखा, "अबे तू होता कौन है जो तेरी उम्मीद से अपनी लाइफ जीऊं ? बेरोजगार, भाग यहां से। एक्ट्रैस के इस कमैंट पर कई यूजर्स ने रिएक्शन दिया है। एक यूजर ने सोनाक्षी के कमैंट पर रिएक्ट करते हुए लिखा, " बिलकुल सही लताड़ लगाई। एक और ने लिखा, 'इतना भी सच नहीं बोलना था।

अगली फिल्म

सीरीज 'हीरामंडी : द डायमंड बाजार' के बाद सोनाक्षी फिर से अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरने के लिए तैयार है। बीते दिनों उसकी एक पीरियड ड्रामा फिल्म की घोषणा हुई थी और अब उसकी एक और फिल्म का ऐलान हो गया है।

खास बात है कि इस फिल्म को उसका भाई कुश सिन्हा डायरैक्ट कर रहा है। इसका नाम 'निकिता रॉय' है, जिसका पहला पोस्टर हाल ही में जारी किया गया और साथ ही फिल्म की रिलीज डेट 30 मई बताई गई है। फिल्म सस्पैंस न सही, लेकिन मिस्ट्री से भरी रहने वाली है।यह एक हॉरर - मिस्ट्री शैली की फिल्म है। इससे पहले उसने हॉरर फिल्म' ककुड़ा' में काम किया था जिसके लिए उसे खूब सराहना मिली थी। वह ओ.टी. टी. प्लेटफॉर्म पर रिलीज हुई, लेकिन 'निकिता रॉय' सिनेमाघरों में दस्तक देगी। पोस्टर में सोनाक्षी की लुक भी काफी दमदार है। उसके साथ-साथ पोस्टर में अर्जुन रामपाल और परेश रावल भी हैं। तीनों अपनी-अपनी इंटेंस लुक में हैं। पोस्टर में फिल्म का डायरैक्टर कुश सिन्हा भी दिख रहा है।

नहीं करना चाहती 'शादी' : अदा शर्मा

फिल्म' द केरल स्टोरी' से सुर्खियों में आई अदा शर्मा गत दिनों फिल्म ' तुमको मेरी कसम' में नजर आई। अदा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती है लेकिन वह अपनी पर्सनल लाइफ को कभी किसी के साथ शेयर नहीं करती। उसके किसी ब्वॉयफ्रैंड को लेकर आज तक कोई खबर भी सामने नहीं आई है। एक रिपोर्ट के अनुसार, एक हालिया अनुसार, एक हालिया इंटरव्यू के दौरान जब अदा से पूछा गया कि वह अपनी शादी पर किस तरह की ड्रैस पहनना चाहेगी तो उसका कहना था, "मेरा सपना शादी नहीं करने का है। अगर मैं शादी करना चाहूंगी तो यह एक बुरा सपना होगा। जब पूछा गया कि क्या वह रिश्ते में रहने से डरती है तो उसने जवाब दिया, "मैं किसी भी रिश्ते से नहीं डरती। मुझे नहीं पता लेकिन मैंने कैमरे के सामने एक शादी में होने से जुड़ा इतना कुछ कर लिया है कि मैंने वास्तविक जीवन में सारी खुशियां खो दी हैं, इससे मन उठ गया है।

उसने आगे कहा, "अगर मुझे शादी करनी ही पड़ी तो मैं कम्फर्टेबल कपड़ों में करूंगी। यह भी हो सकता है अगर मुझे अनकम्फर्टेबल कपड़ों में किसी के साथ शादी करनी हो तो यह ज्यादा मजेदार बन जाए लेकिन फिर मुझे किसी ऐसे शख्स को लाना होगा जो लाना होगा जो कुछ थीम टाइप की चीजें करने के लिए सपोर्ट करे। एक 'एक्सट्रीमली ओवर द टॉप कैरीकेचरईश थीम ' (अत्यधिक तड़क-भड़क से भरपूर) वाली शादी की तरह, ताकि हर कोई इसे एंज्वॉय कर सके।

कैमरे के सामने 'खुशी' मिलती है : निकिता दत्ता

छोटे पर्दे के लोकप्रिय धारावाहिकों 'ड्रीम गर्ल' और 'एक दूजे के वास्ते' से चर्चा में आने वाली खूबसूरत और हंसमुख निकिता दत्ता ने बड़े पर्दे पर भी अपनी पहचान बनाने में कामयाबी पाई है। अब वह वैब सीरीज में भी काफी काम कर रही है। मिस इंडिया 2012 की फाइनलिस्ट रह चुकी निकिता ने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत फिल्म 'लेकर हम दीवाना दिल' से की थी। फिर 'कबीर सिंह ' और 'द बिग बुल' जैसी फिल्मों से अपनी छाप छोड़ने वाली निकिता जल्द ही फिल्म 'ज्वैल थीफ : द हीस्ट बिगिन्स' में नजर आएगी।

फिल्मों में एक दशक लम्बा सफर तय कर चुकी निकिता अब अपने करियर में मिली बड़ी सीख के बारे में पूछने पर कहती है, "हर काम से मैंने काफी सारी बातें सखी हैं। करियर ही नहीं, जिंदगी के लिहाज से भी, मगर सबसे बड़ी बात है कि इन दस सालों में मैंने रेस हमेशा अपने आप से रखी है। मेरी कोशिश रही है कि जो भी काम करूं, वह पिछले से बेहतर हो। हर काम को लेकर मेरी नीयत रही है कि मैं इससे क्या सीख सकती हूं, जो मुझे एक कलाकार के तौर पर आगे लेकर जाए। इसके अलावा, मैं बहुत धैर्य सीखा, क्योंकि इस इंडस्ट्री में आपको इतने रिजैक्शन झेलने पड़ते हैं कि धैर्य और दृढ़ निश्चय के बिना आप यहां टिक नहीं पाएंगे। संयोग था अभिनय में आना

निकिता ने बचपन में कभी एक्टिंग के बारे में सोचा नहीं था, अभिनय में आना उसके लिए एक संयोग था। वह कहती है, "बचपन से कभी ख्याल नहीं था कि मैं एक्ट्रैस बनूंगी, यह एक संयोग ही था, क्योंकि परिवार में दूर-दूर तक कोई भी इस फील्ड से नहीं था। यह अचानक हुआ क्योंकि जब मैंने मिस इंडिया में भाग लिया और फाइनल 20 में पहुंची थी, तो मेरे पास काफी काम आने लगे थे, तब पता चल गया था कि मुझे कैमरे के सामने काम कर खुशी मिलती है।

तभी से मैंने अभिनय में आने का मन बना लिया था। बचपन से एक्ट्रैस बनने का कोई सपना नहीं था, क्योंकि मैं एक ऐसे परिवार से हूं जहां पढ़ाई पर काफी ध्यान दिया जाता था। ऐसे में जब मैंने इस फील्ड में काम करना शुरू किया, तब मेरी मां ने काफी सहयोग दिया। उन्होंने हर प्रोजैक्ट में मेरे साथ रहने की कोशिश की है।

विशाखापत्तनम से मुंबई तक के अपने सफर के बारे में निकिता कहती है, "मेरे पिता इंडियन नेवी में थे, इससे मेरा अलग-अलग जगहों पर जाना हुआ, विशाखापत्तनम में स्कूल में थी, फिर दिल्ली गई और इसके बाद मुंबई आई। कॉलेज की पढ़ाई मैंने मुंबई में की है और तब से अभिनय की ओर ध्यान देना शुरू किया। पहली बार एक्टिंग के बारे में पेरैंट्स को बताने पर भी किसी प्रकार की बाधा नहीं आई, सभी ने मुझे पूरे दिल से सहयोग दिया। हालांकि मेरा पूरा परिवार मिलिट्री से है, लेकिन मेरा काम इतनी आसानी से हुआ कि मुझे कोई समस्या नहीं आई, इतने समय तक इंडस्ट्री में टिके रहना भी इसलिए संभव हो पाया, क्योंकि परिवार मेरे साथ था।

छोटे से बड़े पर्दे तक के सफर पर वह कहती है, "यह संयोग बिल्कुल नहीं था। अभिनय जगत में कदम रखने के बाद मैं फिल्में करना चाहती थी, तो मैंने बहुत सोच-समझकर ऐसा किया। टी.वी. से ब्रेक लिया। काफी शोज को न बोला।

हालांकि, यह मुश्किल जरूर रहा, क्योंकि 2018-19 में ओ.टी. टी. नहीं था और इंडस्ट्री में आपको एक टैग दे दिया जाता है कि आप टी.वी. कलाकार हैं। हर कोई नहीं, पर बहुत से लोग ऐसा कहते हैं कि आप टी.वी. में काम करते हैं तो आपको फिल्म में कास्ट नहीं कर सकते, तो उस सोच को तोड़ने में काफी समय लगा और फिल्म 'कबीर सिंह' ने इसमें मेरी बहुत मदद की।

हम जिससे गुजरते हैं, वह बहुत मुश्किल है : जाह्नवी कपूर

जाह्नवी कपूर पिछली बार फिल्म 'देवरा - पार्ट 1' में नजर आई थी। इस फिल्म में साऊथ का सुपरस्टार जूनियर एन. टी. आर. उसके साथ लीड रोल में था जबकि सैफ अली खान ने विलेन का रोल किया था। फिलहाल जाह्नवी फिल्म 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' और 'परम सुंदरी' जैसी फिल्मों में व्यस्त है। इसमें उसके साथ सिद्धार्थ मल्होत्रा लीड रोल में है। इसके अलावा वह राम चरण के साथ फिल्म 'पैडी' में भी नजर आएगी। वैसे इस समय वह अपनी फिल्मों नहीं, बल्कि अपने एक बयान को लेकर चर्चा में है।

कहते हैं घायल की गति घायल जाने। एक औरत के दर्द को भला एक औरत के सिवा कोई और कैसे समझ सकता है। खैर, अपने हालिया इंटरव्यू में पीरियड्स के दौरान होने वाले महिलाओं के मूड स्विंग का मजाक उड़ाने वाले पुरुषों को आड़े हाथों लेते हुए जाह्नवी कपूर ने उन्हें लताड़ते हुए कहा कि अगर मर्दों को पीरियड्स होते तो युद्ध हो जाता।

इस समय अपनी एक फिल्म की शूटिंग में बिजी जाह्नवी ने कहा, "अगर मैं अपनी बात को सामने रखने की कोशिश कर रही हूं और आप बोलते हो 'क्या यह पीरियड्स का समय है ?' लेकिन हम जिस से गुजरते हैं, वह बहुत मुश्किल है। यह अजीब सी नजर और लहजा है... क्योंकि मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, पुरुष इस दर्द और मूड स्विंग को एक मिनट भी बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। पता नहीं कौन-सा परमाणु युद्ध हो जाता अगर मर्दों को पीरियड्स होते।

गिफ्ट में मिली लैम्बोर्गिनी कार जाह्नवी को बिजनैसमैन कुमार मंगलम बिड़ला की बेटी अनन्या बिड़ला ने एक पर्पल रंग की लैम्बोर्गिनी कार उपहारस्वरूप भेंट की है, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वायरल हो रहे वीडियो में कार के साथ अनन्या ने एक बड़ा-सा पर्पल रंग में लिपटा हुआ गिफ्ट भी अपनी सहेली जाह्नवी के लिए भेजा है, जिस पर लिखा था- विद लव अनन्या बिड़ला, जिसे दो लोग कार से निकाल कर जाह्नवी के घर के अंदर ले जाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

जाह्नवी को लैम्बोर्गिनी गिफ्ट करने वाली अनन्या खुद बिजनैसवूमन ही नहीं एक संगीत कलाकार भी है। अनन्या द्वारा जाह्नवी को गिफ्ट की गई कार को देखने के बाद जहां कुछ लोगों को अनन्या जैसी दोस्त अपने जीवन में न होने का दुख है, वहीं एक यूजर ने जाह्नवी की किस्मत को सराहते हुए लिखा, 'फ्रैंड हो तो ऐसा हो, वरना न हो।' दूसरे ने लिखा, 'ऐसे दोस्त कहां होते हैं।'

गौरतलब है कि जाह्नवी अपनी फिटनैस के लिए भी काफी लोकप्रिय है। जाह्नवी ने अपनी फिगर ऐसे ही मेंटेन करके नहीं रखी है, बल्कि इसके लिए वह जमकर मेहनत भी करती है। वह अपनी डाइट का एक्स्ट्रा ख्याल रखती है और घंटों जिम में पसीना भी बहाती है। वह अपनी डाइट में हैल्दी चीजों को ही शामिल करती है।

अच्छे होते हैं 'बदलाव': प्रियंका चाहर चौधरी

ब्रेकअप पर बोला अंकित जब अंकित से उसके और प्रियंका के ब्रेकअप को लेकर सवाल किया गया तो उसने कहा, "यह जो कुछ भी है, यह हमेशा दो लोगों के बीच रहा है और हमेशा रहेगा। हम किसी तीसरे इंसान को इसमें घुसने की इजाजत नहीं दे सकते, न ही देते हैं..... इक्वेशन चाहे जो भी हो।"

अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में बनी प्रियंका चाहर चौधरी और अंकित गुप्ता को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है, कि दोनों के बीच ब्रेकअप हो गया है। दोनों के ब्रेकअप की खबरों को तब और हवा मिली, जब दोनों ने सोशल मीडिया पर एक-दूसरे को अनफॉलो कर दिया। बीते दिनों एक फैशन शो में शोस्टॉपर बनी प्रियंका ने अब एक ऐसा बयान दिया, जिसे अंकित से जोड़कर देखा जा रहा है।

प्रियंका ने कहा, मेरा मानना है कि हमेशा विकसित होना अच्छा होता है। बदलाव हमेशा अच्छे होते हैं। विकसित होने के लिए आगे बढ़ना पड़ता है इसलिए निश्चित रूप से विकसित होना एक अच्छी बात है। चाहे वह रिश्ते में हो या फैशन में।

वहीं एक इंटरव्यू में प्रियंका ने अपने ब्रेकअप की अटकलों पर कहा, अगर काम को निजी मामलों जितना ही महत्व दिया जाए, तो यह इंडस्ट्री कभी नहीं रुकेगी।

उसने इस बात पर निराशा जताई कि लोग उसकी पेशेवर उपलब्धियों की बजाय उसके निजी जीवन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। प्रियंका चाहती है कि लोग उसके निजी मामलों में बहुत ज्यादा न उलझें।

यह जोड़ी रवि दुबे और सरगुन मेहता द्वारा निर्मित एक शो में दिखाई देने वाली थी। हालांकि, उनके कथित ब्रेकअप के बाद, अंकित ने इस प्रोजैक्ट से हटने का फैसला किया। इस फैसले ने उनके रिलेशनशिप स्टेटस के बारे में चल रही अफवाहों को और हवा दे दी।

प्रोफैशनल फ्रंट की बात करें तो ऐसी अटकलें लगाई जा रही थीं कि प्रियंका अब 'नागिन 7' में नजर आ सकती है। हालांकि, बाद में उसने इन दावों को खारिज कर दिया। अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चाओं के बावजूद प्रियंका अपने करियर और आने वाले कुछ नए प्रोजैक्ट्स पर फोकस कर रही है।

अनंत अंबानी रिलायंस इंडस्ट्रीज के कार्यकारी निदेशक नियुक्त

ईशा और आकाश को इस मामले में छोड़ा पीछे

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। अरबपति मुकेश अंबानी के सबसे छोटे बेटे अनंत को रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड में अहम जिम्मेदारी मिली है। उन्हें कंपनी बोर्ड में कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया गया है। कंपनी ने यह खुलासा किया है। अनंत का कार्यकाल पांच साल का होगा और उनकी नियुक्ति एक मई से प्रभावी होगी। ब्राउन यूनिवर्सिटी से स्नातक अनंत अंबानी अपने भाई-बहनों में रिलायंस के कार्यकारी निदेशक नियुक्त होने वाले पहले व्यक्ति हैं। अंबानी ने अंतिम उत्तराधिकार योजना की तैयारी के तहत अगस्त 2023 में अपने तीन बच्चों- जुड़वां ईशा और आकाश और अनंत को तेल से लेकर दूरसंचार क्षेत्र में कारोबार करने वाली कंपनी के बोर्ड में गैर-कार्यकारी निदेशकों के रूप में शामिल किया था।

अनंत अंबानी पर और क्या-क्या जिम्मेदारी?

हाल के वर्षों में एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति ने कहा है कि भारत की सबसे मूल्यवान और लाभदायक कंपनी रिलायंस में उनके बच्चों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। सबसे बड़े बेटे आकाश 2014 में इकाई में शामिल होने के बाद जून 2022 से कंपनी की दूरसंचार शाखा, जियो इन्फोकॉम के अध्यक्ष हैं। उनकी जुड़वां बहन ईशा कंपनी के खुदरा, ई-कॉमर्स और लक्जरी कारोबार को संभालती हैं। अनंत विदेश में नए ऊर्जा कारोबार का संचालन करते हैं। तीनों बच्चे जियो प्लेटफॉर्म्स के बोर्ड में हैं। यह रिलायंस की दूरसंचार और डिजिटल संपत्तियों और रिलायंस रिटेल का स्वामित्व रखने वाली इकाई है।

रिलायंस के पूर्णकालिक निदेशक भी बने अनंत अंबानी

रिलायंस ने स्टॉक एक्सचेंज को दी गई सूचना में कहा, रिलायंस के निदेशक मंडल ने 25 अप्रैल को अपनी बैठक में मानव संसाधन, नामांकन और पारिश्रमिक समिति की सिफारिश पर विचार किया और गैर-कार्यकारी निदेशक अनंत एम. अंबानी को पूर्णकालिक निदेशक के रूप में नियुक्त किया। उन्हें कंपनी का कार्यकारी निदेशक भी नामित किया गया है।

उनकी नियुक्ति 1 मई, 2025 से 5 साल की अवधि के लिए होगी, जो कंपनी के सदस्यों की मंजूरी के अधीन है। अनंत को अगस्त 2022 में कंपनी के ऊर्जा वर्टिकल का लीडर नियुक्त किया गया था। वह मार्च 2020 से जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड के बोर्ड में, मई 2022 से रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड के बोर्ड में और जून 2021 से रिलायंस न्यू एनर्जी लिमिटेड व रिलायंस न्यू सोलर एनर्जी लिमिटेड के बोर्ड में शामिल हैं।

रेलवे स्टेशन पर अब यात्रियों को नहीं लगना पड़ेगा लाइनों में, क्यूआर कोड स्कैन कर बुक सकेंगे ट्रेन टिकट

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। भारतीय रेलवे को देश की लाइफ लाइन कहां जाता है। देश भर में हर दिन लाखों लोग रेल के जरिए यात्रा करते है। रेलवे यात्रियों को सफर के दौरान कई प्रकार की सुविधाएं भी मुहैया करवाता है। भारतीय रेलवे भी यात्रियों बेहतर सुविधाएं देने के लिए लगातार काम कर रहा है। रेलवे ने हाल ही में ऐसी ही एक सुविधा शुरू की है, जिसके चलते यात्रियों अब जनरल खरीदने के लिए टिकट काउंटर पर लंबी-लंबी कतारों में लगने की जरूरत नहीं पड़ती। अब लोग यूपीआई जैसे डिजिटल पेमेंट मोड से भी जनरल टिकट खरीद सकते है। पहले यात्रियों को जनरल टिकट लेने के लिए रेलवे स्टेशन पर लंबी-लंबी कतारों में लगना पड़ता था। इसमें यात्रियों को सबसे ज्यादा परेशानी भीड़ वाले समय के दौरान होती थी। इस दौरान न केवल यात्रियों का समय बर्बाद होता था बल्कि उन्हें कई प्रकार की परेशानी भी झेलना पड़ती थी। लेकिन अब यात्री घर बैठे-बैठे 'यूटीएस ऑन मोबाइल' ऐप डाउनलोड करके कुछ ही मिनटों में जनरल टिकट बुकिंग कर सकते हैं। यात्रियों को इस एप के जरिए टिकट खरीदते समय अपनी यात्रा के स्टेशन की जानकारी भरनी होगी। यात्री को यह भी बताना होगा कि आप कहां से यात्रा शुरू कर कर रहे हैं और आपको कहां तक जाना है। इतनी ही यूटीएस ऐप में पेमेंट के लिए यूपीआई जैसे डिजिटल पेमेंट ऑप्शन भी मौजूद हैं। यात्री एप से टिकट खरीदते समय गूगल पे,फोन पे और पेटीएम जैसे डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म से भुगतान कर सकते हैं। टिकट के बुकिंग होने के बाद यात्रियों को टिकट मोबाइल पर ही मिल जाता है। जिसे यात्री स्टेशन पर दिखाकर आसानी से एंट्री ले सकते हैं। अगर यात्री चाहें तो इसका प्रिंट भी निकलवा सकते हैं।

न एप्पल न बोफा और न ही कोका कोला, वॉरेन बफे ने अपनी कंपनी बर्क शायर हैथवे में लगाया है ढेर सारा पैसा

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। वॉरेन बफे एक बहुत बड़े निवेशक हैं। उन्होंने एक कंपनी के शेयर खरीदने में इतना पैसा लगाया है, जितना उन्होंने एप्पल, बैंक ऑफ अमेरिका, कोका-कोला, अमेरिकन एक्सप्रेस और शेवरॉन को मिलाकर भी नहीं लगाया। यह कंपनी कोई और नहीं, बल्कि उनकी अपनी कंपनी बर्कशायर हैथवे है। पिछले छह सालों में वॉरेन बफे ने बर्कशायर हैथवे के शेयर वापस खरीदने में करीब 78 अरब डॉलर खर्च किए हैं। यह रकम उन 47 अरब डॉलर से भी ज्यादा है, जो उन्होंने अपनी कंपनी के पांच सबसे बड़े सार्वजनिक इक्विटी पदों को बनाने में खर्च की थी। जून 2024 तक लगातार 24 तिमाहियों तक यह सिलसिला चला। इससे बर्कशायर के बकाया शेयरों की संख्या करीब 12.5% तक कम हो गई है।यह सब 2018 के मध्य से शुरू हुआ। बर्कशायर के बोर्ड ने अपनी स्टॉक पुनर्खरीद नीति में बदलाव किया। पहले, बफे केवल तभी शेयर वापस खरीद सकते थे जब स्टॉक का मूल्य बुक वैल्यू के 120% से कम हो। नई नीति में उन्हें यह अधिकार दिया गया कि वे कभी भी शेयर वापस खरीद सकते हैं, जब उन्हें लगे कि उनका मूल्य कम है।

सोने-चांदी में रही तेजी : सोना 721 रुपए महंगा होकर 95,631 रुपए पर पहुंचा, चांदी 97,684 रुपए किलो

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। इस हफ्ते सोने-चांदी के दामों में बढ़त रही। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के अनुसार पिछले शनिवार यानी 19 अप्रैल को सोना 94,910 रुपए पर था, जो अब (26 अप्रैल) को 95,631 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 721 रुपए बढ़ी है। वहीं इस हफ्ते 22 अप्रैल को सोने ने 99,100 रुपए का ऑल टाइम हाई भी बनाया था।वहीं, चांदी की बात करें तो ये पिछले शनिवार को 95,151 रुपए पर थी, जो अब 97,684 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है। इस तरह इस हफ्ते इसकी कीमत 2,533 रुपए बढ़ी है। वहीं 28 मार्च को चांदी ने 1,00,934 रुपए ऑल टाइम हाई बनाया था।

महानगरों में सोने की कीमत

दिल्ली: 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 90,170 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 98,310 रुपए है।

मुंबई: 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 90,020 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 98,210 रुपए है।

कोलकाता: 10 ग्राम 22 कैरेट गोल्ड की कीमत 90,020 रुपए और 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 98,210 रुपए है।

चेन्नई: 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 90,020 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 98,210 रुपए है।

भोपाल: 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 90,070 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 98,260 रुपए है।

हैदराबाद : सोने(गोल्ड) का रेट 24 कैरेट के लिए 98,240 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट के लिए 90,050 रुपये है।

इस साल अब तक 19,469 रुपए महंगा हो चुका है सोना

इस साल यानी 1 जनवरी से अब तक 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 76,162 रुपए से 19,469 रुपए बढ़कर 95,631 रुपए पर पहुंच गया है। वहीं, चांदी का भाव भी 86,017 रुपए प्रति किलो से 11,669 रुपए बढ़कर 97,684 रुपए पर पहुंच गया है।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री सिद्धार्थी नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2082**
शक संवत् **-1947**,सूर्य उत्तरायणे,ऋतु- ग्रीष्म
महावीर निर्वाण संवत् **-2551**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय - 05-56 सूर्यास्त - 18-31
भोग्य कलि वर्ष-**426874**
कलियुग संवत् **-5126** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949126**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885126**

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	मेष मे	मेष---	05-12 बजे
चंद्र-	मेष मे	वृष---	06-56 बजे
मंगल	कर्क मे	मिथुन..	08-57 बजे
बुध-	मीन मे	कर्क---	11-09 बजे
गुरु-	वृष मे	सिंह---	13-21 बजे
शुक्र-	मीन मे	कन्या--	15-28 बजे
शनि-	मीन मे	तुला----	17-33 बजे
राहु-	मीन मे	वृश्चिक--	19-44 बजे
केतु-	कन्या मे	धनु......	21-58 बजे
		मकर...	00-03 बजे
		कुंभ....	01-53 बजे
		मीन....	03-32 बजे

दिशाशूल - पश्चिम - पान खाकर घर से निकले
तिथि- अमावस्या **01-00** तक उपरान्त प्रतिपदा
मास - वैशाख कृष्ण , रविवार **27 April**
नक्षत्र - अश्विनी **00:38** तक उपरान्त भरणी
योग - प्रिति **00-18** तक उप आयुष्मान
करण- चतुष्पाद **14-56** तक उप नाग
विशेष:- देवपितृकार्ये अमावस्या
व्रत -त्योहार - श्री शुकदेव ज.

विशेषः- राशिफल गृहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 16:59 से 18:34 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो. 9247132654, 9167555710

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
उत्पात	05:56 - 07:29	अशुभ	शुभ	18:31 - 19:59	शुभ
चंचल	07:29 - 09:04	शुभ	अमृत	19:59 - 21:24	शुभ
लाभ	09:04 - 10:39	शुभ	चंचल	21:24 - 22:49	शुभ
अमृत	10:39 - 12:14	शुभ	रोग	22:49 - 00:14	अशुभ
काल	12:14 - 13:49	अशुभ	काल	00:14 - 01:38	अशुभ
शुभ.	13:49 - 15:24	शुभ	लाभ	01:38 - 03:03	शुभ
रोग	15:24 - 16:59	अशुभ	उत्पात	03:03 - 04:28	अशुभ
उत्पात	16:59 - 18:31	अशुभ	शुभ	04:28 - 05:56	शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,): दूसरों के विश्वास का सम्मान करें और नम्र बने रहें । आप सफलता हासिल करने की राह पर बढ़ रहे हैं लेकिन हमेशा अंतिम समय पर सावधानी नही रखते । जीवन अप्रत्याशित होता ही है,इसीलिए इन परेशानियों की अधिक चिंता ना करें । जीवन के पथ पर उत्साह और जोश से आगे बढ़ते रहें ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,): यह समय दोस्तों के साथ हल्का –फुल्का समय गुजारने के लिए बहुत अच्छा है । कोई पार्टी करें या शाम को मस्ती के साथ गुजरें,आप पार्टी की जान बने रहेंगे । इस दौरान आप किसी ऐसे व्यक्ति से भी मिलेंगे जिसकी रुचियाँ आप जैसी होंगी और वो आप जैसे कार्यकलापों का आनंद लेगा । आपको अपनी क्षमता का अनुभव भी होगा ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,): आज स्वयं को भौतिक चीजों के मोह में फंसा अनुभव करेंगे,लेकिन किसी भी वस्तु को इतना कसकर न पकड़ें । बहाव के साथ बहना ही उपयुक्त है,सहज बने रहें । जब तक आपको जवाब नही मिल जाते ,अपना नजरिया दृढ ही रखें । दुसरे स्थान पर शिफ्ट होने के बारे में भी सोच सकते हैं । इस बारे में दोस्तों और सहकर्मियों से बात करना सही रहेगा ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,): आज आपको कुछ चौंकाने वाली बातें पता चलेंगी । लेकिन चिंता ना करें,सब अच्छी खबरें होंगी । जिन कई चीजों के लिए आप लम्बे समय से कोशिश कर रहे थे,वे आज पूरी होने वाली हैं । जिन कोशशों को आप अपनी और से व्यर्थ मान चुके थे,वे अंतत आज सफल होंगी । इसीलिए आज दोस्तों और परिजनों के साथ खुशियाँ मनाएं ,हो सकता है कि उनके पास भी आपको सुनाने के लिए कोई अच्छी खबर हो ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,): आपसे सामजिक संपर्कों पर और ध्यान देने की अपेक्षा है । आपके आकर्षक व्यक्तित्व का सबपर प्रभाव पड़ेगा । इसके अलावे आपको उन लोगो पर भी ध्यान दें जो आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा को नुक्सान पहुंचा रहे हैं । अपनी व्यस्त कार्यशैली के बावजूद सेहत का ध्यान रखें ।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): आपके दिमाग में आज कोई अद्भुत विचार आएगा और आपको इसे हाथोहाथ केवल इसीलिए रद्द नही क्र देना चाहिए क्योंकि आपको इसका हो पाना मुश्किल लग रहा है । आज बड़ा सोचने और ऊँचाइयों को छूने का दिन है । ऐसा करने के लिए आपको बाधाओं की सूची बनाकर अच्छी योजना बनानी अहि और आप पायेंगे कि परेशानियों से खुद-ब-खुद समाधान नजर आने लगेंगे ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,): आज आप महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने सम्बन्धियों से बात कर सकते हैं । प्यार से बातचीत करें और नम्र बने रहें । अगर आप अभी स्थिति को नही संभाल पा रहें हैं तो अभी इसे छोड़ दें । अगर मूड हल्का करना चाहते हैं तो शाम को किसी समारोह में भाग लें । आध्यात्मिकता और विश्वास पर फोकस करने से आपको सहायता मिलेगी ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,): आज अपमनी दार्शनिकताओं तथा विचारों को किसी के साथ बाँट लेने का मौका देखें ,आपकी मुलाकात एक बेहतरीन व्यक्ति से हो सकती है । इससे एक ख़ूबसूरत दोस्ती या अच्छी साझेदारी भी जन्म ले सकती है । थोड़े से ध्यान से देखने से,आप अपने आसपास से बहुत सारी चीजें सीख पायेंगेऔर यह ज्ञान आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे): आपके सामने इन दिनों कुछ नई चीजें आई हैं ।अपने सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहें । पूछे गये प्रश्नों का जवाब दें । आपको अभी और भी प्रयास करने हैं और इससे आपकी तरक्की की मजबूत नींव पड़ेगी । इन सबके बीच खुद को तरोताजा करना और खुश रखना न भूलें है।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी): आज आप थोड़े से अभिमान में रहेंगे और उसी के प्रभाव में रहकर सोचेंगे और काम करेंगे । इसी के कारण आप किसी बड़े अधिकारी से बात करते हुए आँखें नही मिला पायेंगे । यह अच्छा होगा या बुरा,यह आज आपको सोचना है ,हमारी सलाह यह है की आज अपने दिमाग की सुनें । व्यवहार कुशलता का परिचय दें ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,): आपकी अपने पिछले समय में से किसी पुराने व्यक्ति से मिलने की सम्भावना है और यह व्यक्ति आपके भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । सहायता करने और लेने में अपने पूर्वाग्रहों को आड़े ना आने दें ,इससे आपकी प्रगति के नए रास्ते खुल सकते हैं ।अब कोई भी बदलाव नयी सफलता ही लाएगा ।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची): आपको आगे बढने से बहुत से अवसर मिलेंगे लेकिन उन सबको हासिल करने की जल्दी में ना रहें । अपने सभी विकल्पों को ध्यान से सोच समझकर ही आगे बढ़ें । अपने दोस्तों के साथ भी बाँटें । यह ऐसा समय होगा जब आपको कई प्रयास करने होंगें । सब कुछ भाग्य पर ना छोड़ें ।आपके कार्य ही आपके भाग्य का निर्माण करेंगे ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

ट्रेड वॉर के बीच अमेरिकी डॉलर पर संकट इन 5 कारणों से डोल रहा सिंहासन?

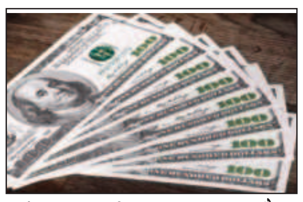

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। अमेरिकी डॉलर को अभी तक अजेय समझा जाता था। पूरी दुनिया के बाजार हिल जाते थे, मुद्रा की कीमत ऊपर-नीचे हो जाती थी, लेकिन डॉलर अपनी जगह अडिग रहता था। दुनिया के कई देशों को सेंट्रल बैंकों में डॉलर जमा है। लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के शासन में डॉलर भी डगमगा गया है। क्या उसकी बादशाहत जाने वाली है? इन 5 कारणों से हिल रही है डॉलर की कुर्सी...

भरोसा घटा

ट्रंप प्रशासन की टैरिफ और आर्थिक नीतियों के कारण विदेशी निवेशक अमेरिकी स्टॉक्स और बॉन्ड्स से दूरी बना रहे हैं। इससे डॉलर पर भरोसा घटा है, उसकी मांग कम हो रही है।

विदेशी निवेशक

अमेरिकी बाजार में विदेशी निवेशकों ने करीब 32 ट्रिलियन डॉलर का निवेश किया हुआ है। अब ये निवेशक दूसरे विकल्प भी देख रहे हैं। इस साल डॉलर की वैल्यू कई दूसरी मुद्रा की तुलना में 9% गिर गई है।

दूसरों की मजबूती

साल 2001 में दुनिया के कुल फॉरेन करंसी रिजर्व में डॉलर का हिस्सा 73% था, अब 58% है। स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और स्वीडन की करंसी की हिस्सेदारी बढ़ी है। केंद्रीय बैंकों ने पिछले तीन वर्षों में हर साल 1000 टन ज्यादा सोने की खरीदारी की है, जो पहले की तुलना में पॉइंट 140% ज्यादा है।

निर्भरता नहीं

दुनिया डॉलर पर निर्भरता घटा रही । ट्रंप की जीत के साथ ही इसकी शुरुआत हो गई थी। अमेरिका के बजट घाटे और बढ़ते कर्ज के कारण में वॉशिंगटन की आर्थिक समस्याएं और गंभीर हो सकती हैं। $ नहीं तो कौनचीन की अर्थव्यवस्था बड़ी है, पर उसकी मुद्रा युआन को डॉलर के मुकाबले तैयार होने में समय लगेगा।

100 अरब डालर गंवाने के बाद मस्क को समझ आई बात

अब डीओजीई की जिम्मेदारी से झाड़ेंगे पल्ला, टी–शर्ट से दिया संकेत

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने एक बड़ा इशारा दिया है। उन्होंने संकेत दिया है कि वे अपने डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी (डीओजीई) के पद से हट सकते हैं। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी एक तस्वीर पोस्ट की है। इस तस्वीर में उन्होंने एक्स ब्रांड की टी-शर्ट पहनी है। ये एक तरह का बदलाव है।

पहले वे 'टेक सपोर्ट' और 'डीओजीई' वाली टी-शर्ट पहनते थे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के व्हाइट हाउस लौटने के बाद से वे अक्सर ऐसी टी-शर्ट पहनते थे।

यह पोस्ट टेस्ला की कमाई के बाद आई है। मस्क ने शेयरधारकों की चिंताओं पर बात की। शेयरधारक इस बात से परेशान थे कि मस्क का ध्यान कई जगह बंटा हुआ है। टेस्ला ने बताया कि कारों की बिक्री में 20% की गिरावट आई है। साथ ही, साल 2025 की पहली तिमाही में मुनाफे में 70% की भारी गिरावट आई है। इससे मस्क की नेटवर्थ में भी कमी आई है। ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इंडेक्स के मुताबिक इस साल मस्क की संपत्ति में करीब 100 अरब डॉलर की कमी आई है। मस्क ने बताया कि मई से वे डीओजीई में कम समय देंगे। डीओजीई ट्रंप प्रशासन की एक योजना है। इसका मकसद संघीय खर्च को कम करना है। मस्क ने कहा कि वे टेस्ला पर बहुत अधिक ध्यान देंगे। मस्क के कपड़ों में बदलाव ऐसे समय पर आया है जब वे निवेशकों और ग्राहकों दोनों के निशाने पर हैं। पिछले कुछ महीनों में, अमेरिका में टेस्ला के शोरूम पर विरोध प्रदर्शन हुए हैं। कुछ टेस्ला मालिकों ने अपनी कारों को दूसरी कंपनियों को सौंप दिया। ये एक तरह का विरोध था। कुछ लोगों ने टेस्ला के बहिष्कार की मांग की। इस बीच, मस्क और ट्रंप के रिश्ते और भी गहरे हो गए हैं। इस साल की शुरुआत में, व्हाइट हाउस ने एक कार्यक्रम आयोजित किया था। ये ट्रंप द्वारा समर्थित था। इसमें टेस्ला की कारों को दिखाया गया। साथ ही, मस्क के अमेरिकी मैन्युफैक्चरिंग को लेकर विचारों को भी दिखाया गया।अमेरिका में पिछले साल हुए राष्ट्रपति चुनाव में मस्क ने ट्रंप को 250 मिलियन डॉलर का दान दिया था। इस वजह से टेस्ला को लेकर लोगों की राय और भी बंट गई है। कुछ लोग इसके समर्थन में हैं, तो कुछ विरोध में। मस्क ने बार-बार डीओजीई के काम को अमेरिका के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण बताया हैजरूरी है।

अब ईपीएफ अकाउंट ट्रांसफर कराना हुआ आसान

जॉब चेंज करते वक्त नहीं आएगी दिक्कत

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने शुक्रवार को फॉर्म 13 में बदलाव किया है और इसी के साथ ईपीएफ अकाउंट ट्रांसफर कराने में एम्प्लॉयर के अप्रूवल की शर्त हटा दी है.

प्राइवेट सेक्टर में जब लोग एक नौकरी से दूसरे में स्विच करते हैं, तब उन्हें ईपीएफ अकाउंट ट्रांसफर कराने की जरूरत पड़ती है. अब ईपीएफओ के उठाए गए इस कदम से 1.25 से अधिक ग्राहकों को फायदा होगा. उनके लिए अब जॉब चेंज करने पर ईपीएफओ अकाउंट ट्रांसफर कराने की प्रक्रिया आसान हो गई है. अभी तक पीएफ अकाउंट का ट्रांसफर सोर्स ऑफिस और डेस्टिनेशन ऑफिस दोनों की भागीदारी से होता था. लेकिन अब नए नियम के मुताबिक, ईपीएफओ अकाउंट ट्रांसफर में डेस्टिनेशन ऑफिस के अप्रूवल की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि सिर्फ सोर्स ऑफिस के अप्रूवल से ही काम हो जाएगा. ईपीएफओ ने एक बयान में कहा है, "अकाउंट ट्रांसफर के प्रॉसेस को और आसान बनाने के मकसद से ईपीएफओ ने रीवैम्प्ड फॉर्म 13 सॉफ्टवेयर को लॉन्च किया है."

हर साल 90,000 करोड़ रुपये होंगे ट्रांसफर

ईपीएफओ ने कहा है कि इस नए फैसले के साथ एक बार सोर्स ऑफिस से क्लेम अप्रूव हो जाने के बाद अकाउंट अपने आप ही डेस्टिनेशन ऑफिस में ईपीएफओ मेंबर के वर्तमान खाते में ट्रांसफर हो जाएगा. ईपीएफओ ने कहा है कि इससे 1.25 करोड़ से अधिक सदस्यों को फायदा होगा, जिससे हर साल लगभग 90,000 करोड़ रुपये का ट्रांसफर हो सकेगा. अकाउंट ट्रांसफर प्रॉसेस में तेजी आएगी.इसी के साथ ईपीएफओ ने यूएएन जेनरेट करने के लिए आधार की आवश्यकताओं में ढील दी है. एम्प्लॉयर्स आईडी और रिकॉर्ड पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर बल्क में आधार जेनरेट कर सकेंगे ताकि मेंबर्स के अकाउंट में फंड्स जल्द से जल्द जमा हो सके. ईपीएफओ अपने सब्सक्राइबर्स के साथ-साथ एम्प्लॉयीज का भी ख्याल रखते हुए लगातार सुविधाएं बेहतर बनाने की कोशिश में जुटा हुआ है.

तमिलनाडु में सैमसंग करने जा रही 1000 करोड़ का निवेश, सैंकड़ों नौकरियां होंगी जेनरेट

चेन्नई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स तमिलनाडु में अपनी एक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में 1000 करोड़ का निवेश करने जा रही है. कंपनी ने यह कदम श्रमिकों के हड़ताल के कुछ ही महीनों बाद उठाया है. बता दें कि चेन्नई के पास श्रीपेरुम्बुदुर प्लांट में सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन के बैनर तले कर्मचारी सितंबर के महीने में हड़ताल पर थे. उनकी मांगों में कंपनी की तरफ से यूनियन को मान्यता देना, काम के घंटे में सुधार और वेतन बढ़ाने की बातें शामिल थीं. सैमसंग के श्रीपेरुम्बुदुर प्लांट में निवेश की खबर की तमिलनाडु के उद्योग मंत्री डॉ. टीआरबी राजा ने सोशल मीडिया पर पुष्टि की.

उन्होंने कहा कि इस नए निवेश से मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में 100 की संख्या में नए जॉब क्रिएट होंगे. श्रीपेरुम्बुदुर प्लांट में रेफ्रिजरेटर, वॉशिंग मशीन, टेलीविजन जैसे कई इलेक्ट्रॉनिक प्रोडक्ट्स की मैन्युफैक्चरिंग होती है. 2022-23 में यहां से 12 बिलियन अमेरिकी डॉलर के सामानों की बिक्री हुई. मई 2021 और मार्च 2025 के दौरान तमिलनाडु 10.14 लाख करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित करने में सफल रहा है. नतीजतन, ऑटोमोबाइल, सेमी-कंडक्टर और टेक्नीकल टेक्सटाइल जैसे सेक्टर्स में 32 लाख नौकरियों का सृजन हुआ है. अभी तक तमिलनाडु में 31,517 मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स हैं, जो भारत में सबसे ज्यादा है. 20,739 कारखानों की संख्या के साथ महाराष्ट्र दूसरे स्थान पर है. सैमसंग के श्रीपेरुम्बुदुर प्लांट में इस वक्त 2,000 से भी अधिक लोग काम करते हैं. भारत में सैमसंग के परिचालन में इसका अहम योगदान है. वित्त वर्ष 2022-23 के कंपनी के आंकड़ों के अनुसार, इस प्लांट ने देश भर में सैमसंग की 1 लाख करोड़ रुपये की बिक्री में लगभग पांचवां हिस्सा योगदान दिया है.

पिछले साल की तुलना में हवाई यात्रियों की संख्या 8.79% बढ़ी

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। मार्च महीने में देश में करीब 1 करोड़ 45 लाख यात्रियों ने उड़ान भरी। डीजीसीए ने शनिवार को आधिकारिक आंकड़े जारी कर यह जानकारी दी। देश के हवाई यात्रियों की संख्या में एक साल पहले की समान अवधि की तुलना में 8.79 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। पिछले साल यानी मार्च 2024 में कुल 1 करोड़ 33 करोड़ यात्रियों ने उड़ान भरी थी। नागरिक विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने अपनी मासिक घरेलू यात्री यातायात रिपोर्ट में कहा, ?मार्च 2025 के दौरान देश की विमानन कंपनियों से 145.42 लाख यात्रियों ने सफर किया। पिछले साल इसी अवधि के दौरान 133.68 लाख यात्रियों ने उड़ान भरी थी। बीते महीने में इंडिगो ने कुल 93.1 लाख यात्रियों को परिवहन सुविधा प्रदान की, जिसकी बाजार हिस्सेदारी 64 प्रतिशत रही। जबकि एयर इंडिया समूह ने (पूर्ण सेवा प्रदाता एयर इंडिया और कम लागत वाली कंपनी एयर इंडिया एक्सप्रेस) के जरिए 38.8 लाख यात्रियों को परिवहन सुविधा प्रदान की। उसकी बाजार हिस्सेदारी 26.7 प्रतिशत रही। दो अन्य प्रमुख एयरलाइन कम्पनियों अकासा एयर और स्पाइसजेट ने मार्च 2025 में क्रमशः 7.2 लाख और 4.8 लाख यात्रियों को उड़ान सेवाएं प्रदान की। उनकी बाजार हिस्सेदारी क्रमशः 5 प्रतिशत और 3.3 प्रतिशत रही। मार्च 2025 में इंडिगो के विमान सबसे अधिक 88.1 प्रतिशत समय पर रहे। उसके बाद अकासा एयर का ओटीपी (ऑन टाइम परफॉर्मेंस) 86.9 प्रतिशत रहा। एयर इंडिया समूह और स्पाइसजेट का स्कोर क्रमशः 82 प्रतिशत और 72.1 प्रतिशत प्रदर्शन किया। ओटीपी की गणना चार मेट्रो हवाई अड्डों - बेंगलुरु, दिल्ली, हैदराबाद और मुंबई के लिए की गई है।

कोर्ट कर्मचारी को जमीन में लेटाकर लात-घुसों से पीटा

गरियाबंद कोर्ट के फैसले के खिलाफ था परिवार मोबाइल और बैग छीनकर दस्तावेज फाड़े

गरियाबंद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। गरियाबंद जिले में कोर्ट के कर्मचारी को जमीन में लेटाकर बेरहमी से पिटाई की गई। ग्राम मूढगेलमाल माहुलपारा में कोर्ट के आदेश पर कर्मचारी रामराव सोलंके जमीन का कब्जा दिलाने गए थे। इसी दौरान 8 से 10 लोगों ने उनसे मारपीट की। इस मारपीट का वीडियो भी सामने आया है। घटना थाना अमलीपदर क्षेत्र की है। 2 परिवार के बीच जमीन विवाद का मामला था। यादव परिवार ने किसी दूसरे की जमीन पर कब्जा जमा रखा था। कोर्ट का फैसला इनके पक्ष में नहीं आया। फैसले के बाद 24 अप्रैल को कोर्ट आदेशिका वाहक रामराव सोलंके कार्रवाई के लिए पहुंचे थे। जहां वे यादव परिवार को कब्जा हटाने के लिए कह रहे तभी परिवार ने आपत्ति जताई और मारपीट शुरू कर दी।

हमले में कर्मी के हाथ-पैर और सिर पर चोटें आईं है। हमला करने वाले सभी एक ही परिवार के है। आरोपी कोर्ट के फैसले के खिलाफ थे इसलिए उन्होंने हमला किया। पीड़ित रामराव ने बताया कि मारपीट के दौरान उनसे गाली गलौज भी हुई है और उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई। साथ ही मोबाइल-बैग छीनकर दस्तावेज भी फाड़ दिए। इन आरोपियों में 3 महिला और 3 पुरुष हैं। आरोपियों का नाम मेघनाथ यादव, दिलेश्वरी यादव, चुलेश्वर यादव, चयमनी यादव, गौमनी यादव और खमय बाई यादव है। पीड़ित ने थाना अमलीपदर में शिकायत दर्ज कराई है। घटना के समय राजस्व विभाग के अधिकारी, कोटवार, पटवारी और ग्रामीण मौजूद थे। उन्होंने बीच-बचाव का प्रयास किया। थाना प्रभारी फैजुल शाह के मुताबिक, 6 आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। आरोपियों पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 126(2), 221, 121(1), 132, 296, 351(2), और 191(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

बीजेपी पार्षद बीएसपी में चोरी करते गिरफ्तार

भिलाई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। रिसाली नगर निगम के वार्ड क्रमांक-33 के भाजपा पार्षद परमेश्वर कुमार उर्फ पिंटू भिलाई स्टील प्लांट से लोहा चोरी करते पकड़ाया है। बीएसपी की सुरक्षा ड्यूटी में तैनात सीआईएसएफ ने पार्षद को गिरफ्तार कर भट्ठी पुलिस के हवाले किया। पुलिस ने गुपचुप तरीके से न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक, पार्षद परमेश्वर कुमार पिंटू की कार से चोरी का तांबा जब्त किया गया है। यह तांबा भिलाई इस्पात संयंत्र का तांबा है। जिसे वो शुक्रवार को अपनी कार में छिपाकर चोरी के इरादे से ले जा रहे थे। इसी दौरान भिलाई इस्पात संयंत्र की सुरक्षा में तैनात सीआईएसएफ के जवानों ने उनको रोका और कार की तलाशी ली तो तांबा जब्त किया गया। भट्ठी टीआई राजेश साहू ने बताया कि, सीआईएसएफ ने परमेश्वर कुमार को उनके हवाले किया है। उन्होंने उनकी गाड़ी की जब्ती भी करवाई है, उस कार में लगभग 220 किलो तांबे के तार भरा हुआ था।

प्रसव के बाद रेफर की गई महिला की मौत

गिरिडीह सदर अस्पताल की जगह एंबुलेंस चालक निजी अस्पताल ले गया, परिजनों का हंगामा

गिरिडीह, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। गिरिडीह जिले में एक गंभीर मामला सामने आया है। जमुआ थाना क्षेत्र के बेहरडीह निवासी रानी देवी (20) की मौत कल्याण हॉस्पिटल में इलाज के दौरान हो गई। रानी देवी ने जमुआ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अपने पहले बच्चे को जन्म दिया। प्रसव के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव होने के कारण उन्हें गिरिडीह सदर अस्पताल रेफर किया गया। जानकारी के मुताबिक एम्बुलेंस चालक ने गिरिडीह सदर अस्पताल ले जाने की बजाय परिजनों को बहला-फुसलाकर बोरो स्थित कल्याण हॉस्पिटल में भर्ती करा दिया। जहां अस्पताल के डॉक्टरों ने परिजनों से पैसे लेकर बेहतर इलाज का आश्वासन दिया। निजी अस्पताल में इलाज के दौरान रानी देवी की मौत हो गई। मौत की खबर सुनते ही परिजनों ने अस्पताल में हंगामा कर दिया। इस दौरान अस्पताल का स्टाफ मौके से फरार हो गया।

परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग की।

पाकिस्तान में संपत्ति बेचकर छत्तीसगढ़ रहने आए हिंदू

सरकार से गुजारिश- वापस न भेजा जाए, गृहमंत्री विजय शर्मा बोले- विचार करेंगे

रायपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में हाल ही में 24 लोगों का एक ग्रुप सिंध पाकिस्तान से रायपुर पहुंचा है। जिन्होंने खुद को हिंदू बताया है। ये लोग ऐसे समय में राजधानी आए हैं जब देशभर में पहलगाम में हुए आतंकी हमले का विरोध हो रहा है और केंद्र सरकार ने पाकिस्तानियों को देश छोड़ने को कहा है।

खुद अमित शाह ने देश के सभी मुख्यमंत्रियों से राज्य में सर्चिंग कर ऐसे लोगों को वापस भेजने को कहा है। वहीं, ये ग्रुप सिंध पाकिस्तान से 22 अप्रैल को ही यहां पहुंचे हैं। जिन्होंने 25 अप्रैल को प्रदेश के गृहमंत्री विजय शर्मा से मुलाकात की और कहा कि हमें वापस नहीं जाना है।

सोशल मीडिया पर पाकिस्तानियों और विजय शर्मा के बीच बातचीत का वीडियो खुद गृहमंत्री विजय शर्मा ने पोस्ट किया है। मिनिस्टर के सामने बैठे लोगों ने खुद को सिंधी समुदाय का हिंदू बताया और प्रदेश में रहने दिए जाने की गुजारिश की है।

उपमुख्यमंत्री शर्मा से मिलने पहुंचे सुखदेव लुंद पाकिस्तान में सिंध के घोटकी जिला के खानपुर के रहने वाले हैं। वहां हिंदुओं की आबादी 3-4 हजार है। सुखदेव फिलहाल 45 दिनों के विजिटर वीजा पर रायपुर के शदाणी दरबार पहुंचे। साथ में पत्नी, दो बेटियां और एक बेटा है। इनके अलावा रवि लुंद, निर्भय बत्रा, रोशन लाल और महेंद्र लाल भी अपने परिजन के साथ उसी दिन रायपुर पहुंचे। दल में 24 सदस्य हैं। इसके अलावा लगभग 100 और लोगों का जत्था भी लगभग एक माह पहले से रायपुर में है। गृहमंत्री विजय शर्मा ने इन पाकिस्तानी नागरिकों आश्वस्त किया कि इन्हें आम पाकिस्तानी नागरिक के बजाय 'पाकिस्तान पीड़ित' के रूप में देख रहे हैं। इस मामले में केंद्र सरकार से बात करेंगे, ताकि उन्हें वापस नहीं जाना पड़े। ये लोग अपनी संपत्ति छोड़कर रायपुर आ गए हैं। इसलिए हम इन्हें 'पाकिस्तान पीड़ित' मानकर इनके मामले में प्राथमिकता के साथ विचार करेंगे।

छत्तीसगढ़ में पाकिस्तान से आए करीब 2000 लोग रहते हैं। इसमें 1800 सिर्फ रायपुर में ही हैं। पाकिस्तान से रायपुर आने वाले 95 फीसदी लोग सिंधी समाज के हैं। बाकी मुस्लिम हैं।

जंगल में युवक ने सूअर समझकर चलाई गोली, साथी की मौत

शिकार करने गए थे ग्रामीण, 12वीं का छात्र था, आरोपी हिरासत में

बलरामपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। बलरामपुर जिले के बिमलापुर जंगल में शुक्रवार को जंगली सूअर का शिकार करने गए युवक ने भरमार बंदूक से उसके साथ गए 18 साल के छात्र को गोली मार दी। गोली लगने से छात्र की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस को घटना की जानकारी देर शाम मिली। शनिवार को छात्र के शव का पंचनामा किया गया। गोली चलाने वाले युवक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। यह घटना त्रिकुंडा थाना क्षेत्र अंतर्गत डिंडो चौकी की है।

जानकारी के मुताबिक, ग्राम बेलसर निवासी 40 वर्षीय राजेंद्र पंडो शुक्रवार को गांव के ही मुकेश कुमार आयाम (18 साल) सहित अन्य ग्रामीणों के साथ शुक्रवार को बिमलापुर, बेलकोता के जंगल में जंगली सूअर का शिकार करने गए था। दोपहर के वक्त सभी अलग-अलग होकर जंगली सूअर की तलाश कर रहे थे। तभी झाड़ियों के बीच से सरसराहट की आवाज आने पर राजेंद्र पंडो ने भरमार बंदूक से गोली चला दी।

राजेंद्र पंडो ने सूअर के भ्रम में गोली चलाई, जो सीधे उसके साथी मुकेश आयाम को जा लगी। गोली मुकेश की पीठ में लगी और अंदर तक धंस गई। गोली लगते ही मुकेश की चीख सुनकर राजेंद्र पंडो दौड़ा और उसके पास पहुंचा।

लेकिन गंभीर रूप से घायल मुकेश की कुछ ही देर में मौत हो गई। घटना से राजेंद्र पंडो घबरा गया। देर शाम राजेंद्र पंडो वापस गांव पहुंचा और उसने घटना की जानकारी ग्रामीणों को दी।

घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीण जंगल पहुंचे तो मौके पर मुकेश का शव पड़ा था। देर शाम डिंडो पुलिस को घटना की सूचना मिली। रात हो जाने की वजह से शव का पंचनामा नहीं हो सका। मृतक के परिजन और ग्रामीणों ने पूरी रात जंगल में शव की पहरेदारी की। शनिवार सुबह डिंडो पुलिस और त्रिकुंडा पुलिस टीम मौके पर पहुंची। रामानुजगंज के एसडीओपी बाजी लाल सिंह भी दोपहर में घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस ने मौके पर शव का पंचनामा कराया।

मुकेश कुमार आयाम इस वर्ष कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में शामिल हुआ था। पुलिस ने गोली चलाने वाले राजेंद्र पंडो को हिरासत में ले लिया है। साथ ही, घटना में इस्तेमाल हुई भरमार बंदूक को जब्त कर लिया है। एसडीओपी बाजी लाल सिंह ने बताया कि सूअर समझकर राजेंद्र पंडो ने गोली चलाई थी। उनके और साथी भी जंगल में शिकार के लिए गए होंगे। शिकार के लिए एक या दो ग्रामीण नहीं जाते हैं। पुलिस इसकी जांच कर रही है।

पहलगाम आतंकी हमले में फंसी थी कोंडागांव की एक फैमिली

3 बार अल्लाह-अल्लाह बोलकर बचाई जान, बगल में खड़े पर्यटक को मार दी गोली

कोंडागांव, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम स्थित बैसरन घाटी में 22 अप्रैल की शाम को हुए आतंकी हमले के दौरान कोंडागांव के कैलाश सेठिया और उनका परिवार भी फंसा था। कैलाश सेठिया ने बताया कि वे परिवार के साथ वैष्णो देवी के दर्शन के बाद पहलगांव पहुंचे थे। शाम के समय जब हजारों पर्यटक घाटी में मौजूद थे, अचानक गोलियों की आवाजें गूंजने लगीं। मिलिट्री की वर्दी में आए आतंकियों ने लोगों से उनका धर्म पूछना शुरू किया। जब एक आतंकी ने कैलाश से पूछा कि क्या वे हिंदू हैं, तो डर के मारे उनके मुंह से तीन बार 'अल्लाह-अल्लाह' निकल गया।

इस जवाब ने उनकी और उनके परिवार की जान बचा ली। हालांकि, उनके बगल में खड़े एक अन्य पर्यटक को आतंकियों ने गोली मार दी। हमले से पहले के कुछ फोटो और वीडियो भी परिवार ने शेयर किया है।

झारखंड में आज से बदलेगा मौसम का मिजाज

अगले 3 दिन में 7 डिग्री तक गिर सकता है पारा, मौसम विभाग का यलो अलर्ट

रांची, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। बीते कुछ दिनों से झारखंड का मौसम तल्ख हुआ है। भीषण गर्मी ने लोगों के जनजीवन को प्रभावित किया है। प्रदेश का पारा 40 डिग्री या इसके पर जा चुका है। लगभग पूरा राज्य लू की चपेट में है। ऐसे में एक राहत भरी बात यह है कि प्रदेश का मौसम एक बार फिर बदलने वाला है।

राज्य में आज से मौसम का मिजाज बदलने वाला है, हालांकि दोपहर से पहले तक लोगों को भीषण गर्मी झेलनी होगी। दोपहर बाद थोड़ी राहत मिल सकती है। मौसम विभाग की ओर से जारी रिपोर्ट के मुताबिक अगले तीन दिन में अधिकतम तापमान में 3 से 7 डिग्री सेल्सियस की गिरावट हो सकती है।

मौसम विभाग की ओर से जारी रिपोर्ट बता रही है कि 1 मई तक राज्य में कुछ स्थानों पर मेघ गर्जन के साथ हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश हो सकती है। इसकी शुरुआत आज दोपहर बाद से होने की पूरी संभावना है। 27 अप्रैल, 28 अप्रैल और 29 अप्रैल को भी हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश की बात कही गई है।

26 अप्रैल यानी आज राज्य के दक्षिणी और उत्तर पूर्वी हिस्से के 12 जिलों में दोपहर तक भीषण गर्मी रहने वाली है। सुबह से ही उमस भरा दिन रहेगा। दोपहर बाद में गर्जन और वज्रपात की संभावना व्यक्त की गई है। इसे लेकर यलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने बताया है कि इस दौरान हवा की रफ्तार 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे तक हो सकती है। 27 अप्रैल के लिए ऑरेंज और यलो अलर्ट जारी किए गए हैं। राज्य के उत्तर-पूर्वी हिस्से जिसमें देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़, साहिबगंज जामताड़ा में हवा की रफ्तार 50 किलोमीटर तक रहने वाली है। इस दौरान ओलावृष्टि और वज्रपात की संभावना भी जताई गई है।

जंगल में नग्न मिली नाबालिग की लाश

शव के पास रखे थे कपड़े, घर से महुआ बीनने निकली थी, रेप-मर्डर की आशंका

सूरजपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। सूरजपुर जिले में 14 साल की बच्ची की नग्न अवस्था में लाश मिली है। ग्राम सेंदरी में शुक्रवार सुबह बच्ची महुआ बिनने घर से जंगल के लिए निकली थी। अगले दिन उसी जंगल में बच्ची का शव मिला है। मामला रामानुजनगर थाना क्षेत्र का है। पुलिस ने रेप-मर्डर की आशंका जताई है। मृतका के गले, चेहरे और हाथ पर धारदार हथियार से कटने का निशान भी है। शनिवार सुबह ग्रामीणों ने जंगल में चप्पल और टिफिन देखा और थोड़ी ही दूरी पर बच्ची मृत पड़ी मिली जिसके बाद पुलिस को सूचना दी।

फॉरेंसिक टीम कुलदीप कुजूर ने बताया कि जहां शव मिला है वहीं थोड़ी दूरी पर उसके कपड़े भी उतरे हुए रखे है। घटना स्थल पर खून के निशान मिले है। फिलहाल जांच के बाद पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर मामले का खुलासा किया जाएगा। मृतक 8वीं की छात्रा है। परिजनों ने बताया कि बच्ची शुक्रवार से गायब थी। जिसकी खोजबीन कर रहे थे। थाने में भी देर रात रिपोर्ट लिखवाए थे लेकिन रात भर पता नहीं चल सका। गांव वालों ने सुबह सूचना दी कि लाश पड़ी मिली है। एसपी प्रशांत कुमार ठाकुर ने बताया कि, बच्ची के कल से गायब होने की सूचना मिली थी।

पहलगाम अटैक- धनबाद में 15 जगह एटीएस की रेड

हिरासत में 5 लोग, लैपटॉप-हथियार मिलने की खबर डार्क वेब से आतंकी संगठन से जुड़े होने का शक

धनबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की आंच झारखंड के धनबाद तक पहुंच गई है। शनिवार की सुबह से ही धनबाद शहर के वासेपुर सहित कई इलाके में एटीएस ने डेरा डाल रखा है। जानकारी के मुताबिक, एटीएस को आशंका है कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले के तार धनबाद से भी कनेक्ट हो सकते हैं। इसी क्रम में जांच शुरू की गई है।

धनबाद में एटीएस 15 अलग-अलग लोकेशन पर सुबह से जांच कर रही है। सूत्रों के मुताबिक 12 संदिग्धों की तलाश में टीम छापेमारी कर रही है। जिसमें से 5 लोगों को हिरासत में लिया है और पूछताछ की जा रही है।

जानकारी के अनुसार एटीएस ने वासेपुर से यूसुफ और कौसर को उठाया है। इसके साथ शमशेर नगर से अयान की पत्नी शबनम को अपने साथ ले गई है। शबनम गोविंदपुर की रहने वाली है। बताया जा रहा है कि अयान आधार कार्ड में सुधार का काम किया करता था। टीम ने धनबाद सीओ ऑफिस में आउटसोर्स पर काम कर रहे कंप्यूटर ऑपरेटर गुलेज को उठाया है। उसने अपने साथ कई जूनियर ऑपरेटर को भी जमीन से जुड़े काम में अपने स्तर से रखा था। इसके अलावा धनबाद के ही रहने वाले एक शख्स को कोडरमा के वसुंधरा पेट्रोल पंप के पास से उठाया है। इसकी पहचान अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है।

जानकारी के अनुसार आज सुबह धनबाद के वासेपुर में एटीएस की टीम पहुंची। टीम ने वासेपुर के नूरी मस्जिद के आसपास दबिश दी। बाद में गफ्फार कॉलोनी के अमन सोसायटी, वासेपुर बाईपास रोड पहुंची। जहां जांच में जुटी हुई है। इसके साथ ही शहर के बैंक मोड़ और भूली थाना क्षेत्र में एटीएस टीम कार्रवाई में जुटी हुई है। जबकि भूली ओपी में डीएसपी लॉ एंड आर्डर नौशाद आलम कैंप किए हुए हैं।

ट्रक ने बाइक सवार शिक्षक को कुचला

गुमला, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। गुमला जिले में 50 वर्षीय सहायक शिक्षक की सड़क हादसे में मौत हो गई। घटना शिलम ढलान के पास हुई है। जानकारी के मुताबिक गोकुल नगर के रहने वाले शिक्षक दीनानाथ केसरी अपनी बाइक से रायडीह बीआरसी परीक्षा देने जा रहे थे। तभी छत्तीसगढ़ की ओर से आ रहे बीड़ी पत्ता लदे एक ट्रक ने उन्हें कुचल दिया।

हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। सिसई थाना पुलिस ने बाद में ट्रक को पकड़ लिया। पुलिस ने गंभीर रूप से सड़क पर पड़े घायल शिक्षक को सदर अस्पताल पहुंचाया,लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतक शिक्षक 1994 से राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय सुगा कांटा में कार्यरत थे। घटना की सूचना मिलते ही अस्पताल परिसर में लोगों की भीड़ जमा हो गई। परिजनों की स्थिति शोकाकुल है। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पंचनामा कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया और जांच शुरू कर दी है।

शादी के दो दिन बाद युवक ने लगाई फांसी

धनबाद का रहने वाला था युवक, घर में फंदे से लटका मिला शव, पत्नी के साथ हुआ था विवाद

धनबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। धनबाद जिले के झरिया के फुलड़ीबाग इलाके में रहने वाले हैंडसम खान ने अपनी शादी के दो दिन बाद फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि हैंडसम खान की शादी झाझा जमुई की एक युवती से हुआ था।

शादी के दो दिन बाद ही युवक का शव घर में फंदे से लटका मिला। सूचना मिलने पर झरिया पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए एसएनएमएमसीएच धनबाद भेज दिया। मृतक की मां नाजमा बीबी ने बताया कि हमलोग का परिवार काफी गरीब है। पति दिव्यांग हैं। चार बेटों में हैंडसम बड़ा था।

उन्होंने बताया कि शादी के अगले दिन हैंडसम अपनी पत्नी के साथ ससुराल जा रहा था। लेकिन रास्ते में ही दोनों के बीच कुछ अनबन हो गई। इसके बाद वह अकेले घर लौट आया। वहीं उसकी पत्नी लेने आए परिजनों के साथ मायके चली गई। परिजनों के मुताबिक रात में खाना खाने के बाद वह सो गया।

मां बोली- दामाद ने बेटी और उसके प्रेमी को मारा

हजारीबाग, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। हजारीबाग के विष्णुगढ़ प्रखंड स्थित कोनार डैम के पास जंगल में मिले दो शवों की पहचान हो गई है। मृतक लिली कुमारी और विजय कुमार महतो जरीडीह थाना क्षेत्र के गांधीनगर के रहने वाले थे। मृतका की मां पनवा देवी ने अपनी बेटी की हत्या का आरोप दामाद मुकेश कुमार पर लगाया है।

उन्होंने बताया कि लिली का विवाह बोकारो जिले के गांधीनगर थाना क्षेत्र के जरीडीह में हुआ था। लिली के दो छोटे बच्चे हैं। पड़ोसी विजय कुमार महतो से लिली का प्रेम संबंध था। मृतका की मां का आरोप है कि इसी कारण मुकेश ने दोनों की हत्या कर शव जंगल में फेंक दिए।

मृतक विजय कुमार महतो के भाई ने भी थाने में आवेदन देकर मुकेश कुमार पर हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस ने दोनों शवों का पोस्टमॉर्टम शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में कराने के बाद परिजनों को सौंप दिया है।

हजारीबाग एसपी अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस ने कुछ ही घंटों में दोनों की पहचान कर ली है। मामला संदेहास्पद है। हर पहलू से जांच की जा रही है। पुलिस दोषियों को जल्द गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई करेगी।

जसीडीह में रेल से कटकर युवक की मौत

मानसिक रूप से बीमार था युवक, परिजन बोले- किसी को नहीं बताकर घर से निकला था

देवघर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। देवघर-जसीडीह रेल मुख्य मार्ग पर रेलवे ट्रैक पोल संख्या 294/22 पर एक अज्ञात ट्रेन की चपेट में आने से 20 वर्षीय युवक की मौत हो गई।

मृतक की पहचान मधुपुर थाना क्षेत्र के लखना मोहल्ला निवासी मोहम्मद अली के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और आरपीएफ मौके पर पहुंची।

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। वहीं शव को पोस्टमॉर्टम के लिए देवघर भेजा गया। मृतक के भाई ने बताया कि मोहम्मद अली पिछले कुछ महीनों से मानसिक रूप से बीमार था। वह कल रात बिना किसी को बताए घर से चला गया था। परिवार के सदस्य उसकी तलाश कर रहे थे।

पुलिस से उन्हें सूचना मिली कि उनके भाई का एक्सीडेंट हो गया है। जब वे घटनास्थल पर पहुंचे तो देखा कि उनका भाई रेलवे ट्रैक पर मृत पड़ा है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

बाग की रखवाली करने वाले की हत्या

बगीचे में ताड़ी पीने से किया मना, लोहे के हथियार से मार डाला, दो हिरासत में लिए गए

पाकुड़, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। झारखंड के पाकुड़ जिले में आम बाग में ताड़ी पीने से रोकने पर एक रखवाले की हत्या कर दी गई। मुफ्सिल थाना क्षेत्र के कुमारपुर गांव में हुई इस घटना में 50 वर्षीय निवास सरकार की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि निवास सरकार तारानगर के रहने वाले थे। वह अपने ससुराल कुमारपुर में रहकर आम बाग की रखवाली करते थे। घटना के वक्त अशोक राजवंशी और लुसरु पहाड़िया नशे में धुत होकर बाग में ताड़ी पीने लगे। निवास ने उन्हें रोका तो दोनों ने छेनी जैसे हथियार से हमला कर दिया। वहीं मारपीट की इस घटना में अशोक राजवंशी भी घायल हो गया और उसे पुलिस ने इलाज के लिए सोनाजोड़ी सदर अस्पताल के कैदी वार्ड में भर्ती कराया है।

मृतक के बेटे सनत सरकार ने बताया कि जब वह मौके पर पहुंचा, तब उनके पिता बेहद डरे हुए थे।

घटना का विवरण बताते समय ही उनकी मौत हो गई। थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों आरोपियों को हिरासत में ले लिया गया है।

पीएम शरीफ बोले- पहलगाम की निष्पक्ष जांच के लिए तैयार

किसी भी हमले से निपट लेंगे, फौज पाकिस्तान की हिफाजत में सक्षम

इस्लामाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ ने कहा है कि वे पहलगाम हमले के बाद हर जांच के लिए तैयार हैं। शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान को बदनाम किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिए तैयार है। पाकिस्तान मिलिट्री अकादमी में एक परेड को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री शरीफ ने कहा कि पहले भी पाकिस्तान पर ऐसे हमले के आरोप लगाए जाते रहे हैं। इसे पूरी तरह से बंद किया जाना जाहिए। एक जिम्मेदार देश के तौर पर पाकिस्तान किसी भी तटस्थ और पारदर्शी जांच में हिस्सा लेने के लिए तैयार है।

शरीफ ने कहा कि भारत दुनिया को गुमराह कर रहा है। बिना किसी विश्वसनीय जांच और सबूत के पाकिस्तान पर झूठा आरोप लगाकर देश को बदनाम कर रहा है। पीएम शरीफ ने कहा कि यदि सिंधु नदी के पानी को कम करने या मोड़ने की कोशिश की गई तो पूरी ताकत से जवाब दिया जाएगा। शरीफ ने कहा कि पानी पाकिस्तान के लिए बेहद जरूरी है। यह हमारे 24 करोड़ लोगों की जिंदगी का सवाल है। हम हर कीमत पर इसे सुरक्षित रखेंगे। शहबाज ने कहा कि पाकिस्तान शांति चाहता है, लेकिन उसकी इस इच्छा को कमजोरी न समझा जाए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को बदनाम किया जा रहा है। पाकिस्तान के फौजी अपने देश को बचाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। भारत ने हाल ही में पहलगाम हमले के बाद भारत ने सिंधु जल समझौता रद्द करने का ऐलान किया है। शरीफ ने कहा कि जिन्ना ने सही कहा था कि कश्मीर पाकिस्तान के गले की नस है। दुर्भाग्य से यूनाइटेड स्टेट के कई प्रस्तावों के बावजूद यह मामला आज तक नहीं सुलझा है। पाकिस्तान कश्मीर के लोगों के फैसला लेने के अधिकार का हमेशा समर्थन करता रहेगा। पीएम शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान ने हमेशा से आतंकवाद की निंदा की है। हमारा देश खुद आतंकवाद का सामना कर रहा है। पाकिस्तान में 90 हजार से ज्यादा लोग इसमें मारे गए हैं और 600 बिलियन डॉलर का नुकसान हो चुका है। यह सब सोच से परे है। पीएम शरीफ ने कहा कि शांति हमारी प्राथमिकता है, लेकिन कोई इसे हमारी कमजोरी न समझे। हम अपनी अखंडता और सुरक्षा पर कभी समझौता नहीं करेंगे।

शरीफ ने अपने भाषण का अंत एक शेर से करते हुए कहा- खून ए दिल देकर निखारेंगे रुखे गुलाब, हमने गुलशन के तहफ्फुज की कसम खाई है।

भारत के हमले की आशंका के बीच चीन की शरण में पाकिस्तान

शी जिनपिंग के दूत से मिले इशाक डार, युद्ध के लिए मांगी मदद?

इस्लामाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान को भारत के हमले का डर सता रहा है। पिछले दो दिनों से भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले पाकिस्तान ने आज नई पैंतरेबाजी शुरू कर दी है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने जहां निष्पक्ष जांच ऑफर किया है, वहीं पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने इंटरनेशनल जांच की मांग कर डाली है। लेकिन भारत के तेवर को देखते हुए पाकिस्तान अपने सदाबहार दोस्त चीन की शरण में पहुंच गया है। इस्लामाबाद में पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने चीन के राजदूत जियांग जेड से मुलाकात की है। इस दौरान पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने क्षेत्रीय तनाव की जानकारी चीन को दी है। इससे पहले जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद चीन ने अपनी प्रतिक्रिया में आतंकी हमले की निंदा तो की थी दी है। नई दिल्ली में चीन के राजदूत शू फेइहोंग ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में इस बर्बर आतंकी हमले की निंदा की है। लेकिन चीन का यह बयान आतंकी हमले के एक दिन बाद आया था और इससे भी दिलचस्प बात यह थी कि इस पर पाकिस्तान और चीन की प्रतिक्रिया एक साथ आई थी।

उत्तर कोरिया ने तैयार किया नौसैनिक विध्वंसक जहाज

किम ने तनाव के लिए अमेरिका को ठहराया जिम्मेदार

सियोल, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। उत्तर कोरिया लगातार अपनी सैन्य ताकत में इजाफा कर रहा है। देश ने अब नया नौसैनिक विध्वंसक जहाज तैयार किया है। तानाशाह किम जोंग उन ने नए जहाज का अनावरण किया। उन्होंने इसे अपनी परमाणु-सशस्त्र सेना की परिचालन सीमा और पूर्वव्यापी हमला क्षमताओं का विस्तार करने के लक्ष्य की दिशा में एक अहम कदम बताया। इसके अलावा किम ने दुनियाभर में बढ़ रहे तनाव के लिए अमेरिका को जिम्मेदार ठहराया।

शुक्रवार को नंपो के पश्चिमी बंदरगाह पर 5,000 टन के युद्धपोत के शुभारंभ समारोह में किम ने नए जहाज को देखकर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका और एशिया में उसके सहयोगियों से कथित खतरों के जवाब के रूप में हथियारों का निर्माण किया जा रहा है। क्योंकि अमेरिका और उसके सहयोगी परमाणु कार्यक्रम पर बढ़ते तनाव के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास का विस्तार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बी का

अधिग्रहण उनकी नौसेना को मजबूत करने की दिशा में उनका बड़ा कदम होगा।

किम ने कहा कि नए बहुउद्देशीय विध्वंसक को विभिन्न हथियार प्रणालियों को संभालने के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें हवाई और नौसैनिक हमले को रोकने के साथ ही परमाणु-सक्षम बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलें शामिल हैं। नए जहाज को अगले साल की शुरुआत में नौसेना को सौंप दिया जाएगा और यह सक्रिय रूप से काम करना शुरू कर देगा। किम ने संयुक्त सैन्य अभ्यासों का विस्तार करने और अपनी परमाणु निरोध रणनीतियों को अपडेट करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण कोरिया के हालिया प्रयासों की आलोचना की। किम ने भू-राजनीतिक संकट और चल रहे घटनाक्रमों का निर्णायक रूप से जवाब देने की कसम खाई। उत्तर कोरिया के नए युद्धपोत का अनावरण मार्च में निर्माणाधीन एक कथित परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बी के खुलासे के बाद हुआ है। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि क्या गरीब और काफी हद तक अलग-थलग देश विदेशी सहायता के बिना ऐसी उन्नत क्षमताएं विकसित कर सकता है।

परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियां उन उन्नत हथियारों की व्यापक सूची में शामिल हैं, जिन्हें किम ने 2021 में एक प्रमुख राजनीतिक सम्मेलन में विकसित करने का संकल्प लिया था। इसके अलावा उत्तर कोरिया ठोस ईंधन वाली अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलें, हाइपरसोनिक हथियार, जासूसी उपग्रह और बहु-वारहेड मिसाइलें भी तैयार कर रहा है। उत्तर कोरिया ने इन क्षमताओं को हासिल करने के उद्देश्य से कई परीक्षण किए हैं। उत्तर कोरिया लगातार सैन्य परमाणु क्षमताओं का प्रदर्शन कर रहा है।

ईरान के बाद सऊदी अरब ने भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव कम करने की कोशिश शुरू की

अधिकारी बोले- दोनों हमारे करीबी

रियाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। ईरान के बाद अब सऊदी अरब ने भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव को कम करने की कोशिश शुरू की है। सऊदी अरब के बड़े अधिकारी ने कहा कि भारत-पाकिस्तान दोनों देश सऊदी अरब के अहम सहयोगी रहे हैं। हम नहीं चाहते हैं कि स्थिति कंट्रोल से बाहर हो जाए। अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि दोनों देशों के बीच तनाव कम करने के लेकर किंगडम बातचीत कर कर रहा है।

सऊदी विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान ने शुक्रवार को अपने भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर और पाकिस्तानी विदेश मंत्री इशाक डार से अलग-अलग फोन पर बातचीत की थी। जयशंकर ने अल सऊद को हमले और इसके सीमापार संबंधों के बारे में जानकारी दी। इससे पहले ईरान ने शुक्रवार को भारत-पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता की पेशकश की थी। ईरान के विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची ने कहा था कि तेहरान इस मुश्किल समय में बेहतर अंडरस्टैंडिंग बनाने के लिए इस्लामाबाद और नई दिल्ली में अपने ऑफिस का इस्तेमाल करने के लिए तैयार है।

ब्रिटिश प्रिंस पर आरोप लगाने वाली वर्जीनिया की मौत

14 साल पहले कहा था- प्रिंस एंड्रयू ने यौन शोषण किया, आरोप के बाद शाही परिवार से बेदखल

कैनबरा, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली वर्जीनिया गिफ्रे की मौत हो गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक उसने आत्महत्या की। हालांकि, अभी तक इसकी पुष्टि नहीं हुई है। वर्जीनिया (41 साल) ने साल 2011 में अमेरिका के हाई प्रोफाइल वेश्यावृत्ति नेटवर्क का खुलासा कर पूरी दुनिया को हैरान कर दिया था।

वर्जीनिया कई साल से ऑस्ट्रेलिया में रह रही थीं और यौन उत्पीड़न का सामना करने वाली महिलाओं की वकील बन गई थीं। उनके परिवार ने बयान जारी कर कहा कि 'वर्जीनिया ने अपने फार्म पर आत्महत्या कर ली। वह जीवनभर शारीरिक शोषण और यौन तस्करी से जूझती रहीं।'

वर्जीनिया ने 2011 में एक इंटरव्यू में अपने साथ हुए यौन शोषण और तस्करी का खुलासा किया था। उसने कहा था कि जब वह सिर्फ 15 साल की थीं, तब एपस्टीन के नेटवर्क में फंस गई थीं। उसे कई प्रभावशाली और हाई-प्रोफाइल व्यक्तियों के साथ यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया गया। इसी इंटरव्यू में वर्जीनिया ने ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू के साथ अपनी मुलाकातों का भी जिक्र किया था।

पिछले महीने वर्जीनिया ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में दावा किया था कि उनके पास अब जीने के लिए सिर्फ 5 दिन बचे हैं। वर्जीनिया ने इंस्टाग्राम पोस्ट पर एक पोस्ट शेयर की थी, जिसमें उनके चेहरे पर चोटें नजर आई थीं।

उन्होंने कहा कि वह मरने से पहले आखिरी बार अपने बच्चों को देखना चाहती हैं। उन्हें स्कूल बस ने टक्कर मार दी थी, जिसके बाद से वह किडनी फेलियर से

जूझ रही हैं। वर्जीनिया ने साल 2021 में ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू के खिलाफ मुकदमा भी दायर किया था। गिफ्रे ने आरोप लगाया था कि जब वो 17 साल की थीं, तब जेफ्री एपस्टीन उन्हें एंड्रयू के पास ले गए थे और प्रिंस ने उनका यौन शोषण किया था।

वर्जीनिया ने कहा था कि उसने प्रिंस एंड्रयू के साथ 3 बार यौन संबंध बनाए थे। पहली बार 2001 में लंदन यात्रा के दौरान। दूसरी बार एपस्टीन के न्यूयॉर्क वाले बंगले में और तीसरी बार अमेरिका के वर्जिन आइलैंड पर।

उन्होंने कहा कि पहली और दूसरी बार जब वो एंड्रयू से मिली थी तब उसकी उम्र महज 17 साल थी। वर्जीनिया के इस खुलासे के बाद प्रिंस एंड्रयू को शाही परिवार से बेदखल कर दिया गया था। वर्जीनिया की वजह से एपस्टीन के खिलाफ मुकदमा शुरू हुआ

वर्जीनिया ने अमेरिका के कई बड़े अरबपतियों को लड़कियां मुहैया कराने वाले जेफ्री एपस्टीन के खिलाफ आवाज उठाई थी। वर्जीनिया की वजह से ही जेफ्री एपस्टीन के खिलाफ मुकदमा शुरू हो सका था। वर्जीनिया ने ही जेफ्री के खिलाफ अदालत में गवाही दी और जेफ्री को वेश्यावृत्ति का नेटवर्क चलाने और बड़ी संख्या में महिलाओं के यौन शोषण और मानव तस्करी का दोषी ठहराया गया।

झांसी जिला अस्पताल के बच्चा वार्ड में लगी आग

भर्ती थे 16 मासूम, कुछ महीने पर गई थी 18 की जान

झांसी, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। झांसी में शनिवार शाम जिला अस्तपाल के बच्चा वार्ड की छत पर शार्ट सर्किट से अचानक आग भड़क उठी। थोड़ी देर में आग आगे फैलने लगी। आग की लपटें देखकर वहां चीख-पुकार मच गई। जिनके बच्चे वार्ड में भर्ती थे, वह अपने बच्चों को लेकर बाहर भागने लगीं। अस्पताल प्रशासन ने आग बुझाने की कोशिश की। दमकल की गाड़ियां भी बुला ली गईं। करीब आधे घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका।

चिल्ड्रेन वार्ड में करीब 16 बच्चे भर्ती थे जिन्हें तत्काल वार्ड से बाहर निकाला। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है शाम करीब साढ़े चार बजे बच्चा वार्ड की छत पर खुले तार से शार्ट सर्किट होने लगा। वहां सूखे पत्ते पड़े थे। शार्ट सर्किट की वजह से पैदा हुई चिंगारी ने उनमें आग पकड़ ली। आग भड़कते ही अस्पताल प्रबंधन ने बिजली आपूर्ति काट दी।

सिंधु जल समझौता रोकने पर भारत को बिलावल की धमकी

बोले- सिंधु दरिया हमारा है, इसमें या तो हमारा पानी बहेगा या फिर उनका खून

इस्लामाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो ने भारत के खिलाफ भड़काऊ भाषण दिया है। उन्होंने शुक्रवार को एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि सिंधु नदी में या तो हमारा पानी बहेगा, या फिर उनका खून बहेगा। सिंधु दरिया हमारा है और हमारा ही रहेगा। भुट्टो ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता कि आप एक झटके में सिंधु जल समझौता को तोड़ दें। हम इसे नहीं मानते हैं। हमारी अवाम इसे नहीं मानती। हजारों साल से हम इस नदी के वारिस हैं।

बिलावल ने कहा कि सिर्फ इसलिए कि भारत की आबादी ज्यादा है, वो यह नहीं तय कर सकते कि पानी किसका है। पाकिस्तान की अवाम बहादुर लोग हैं, हम डटकर मुकाबला करेंगे। सरहदों पर हमारी फौज हर हमले का जवाब देने को तैयार है।

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के अध्यक्ष भुट्टो ने कहा कि भारत ने पहलगाम घटना के लिए पाकिस्तान को दोषी ठहराया है। अपनी कमजोरियों को छिपाने और अपने लोगों को मूर्ख बनाने के लिए, मोदी ने झूठे आरोप लगाए हैं और सिंधु जल संधि को एकतरफा तरीके से रोक दिया है।

भुट्टो ने कहा कि हर पाकिस्तानी सिंधु का पैगाम लेकर दुनिया को बताएगा कि हमारे दरिया पर डाका मंजूर नहीं। दुश्मन की नजरें हमारे पानी पर हैं। बिलावल ने कहा कि वे देश के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को इस बात का भरोसा दिलाना चाहते हैं कि अलग राजनीतिक दल होने के कारण भले ही उनकी राय अलग हो, लेकिन सिंधु जल संधि के मुद्दे पर वे उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं।

बिलावल भुट्टो ने अपनी मां और देश की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो का भी नाम लिया। उन्होंने कहा कि पीपीपी और सिंध प्रांत की जनता ने नदी पर डैम और नहर बनाने के मंसूबे कामयाब नहीं होने दिए हैं। आने वाले दिनों में भी सिंधु जल संधि में एकतरफा बदलाव की कोशिशों को नाकाम किया जाएगा। बिलावल भुट्टो ने पाकिस्तान के चारों राज्यों की एकता की बात करते हुए कहा कि ये चार सूबे चार भाइयों की तरह हैं। ये चारों सूबे मिलकर भारत के हर मंसूबे का करारा जवाब देंगे। भुट्टो का यह बयान ऐसे समय आया है जब भारत ने पहलगाम हमले के बाद सिंधु जल संधि को सस्पेंड करने का कदम उठाया है, जिसे पाकिस्तान ने 'जंग के बराबर' करार दिया है।

पाकिस्तान के साथ 'सिंधु जल समझौता स्थगित' करने पर शुक्रवार को जल शक्ति मंत्रालय की बैठक हुई। इसे 3 चरणों में पूरा करने का फैसला लिया गया है। बैठक के बाद केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने बताया कि इसे लेकर 3 तरह की रणनीति बना रहे हैं। पाकिस्तान को एक बूंद पानी नहीं मिलेगा। मीटिंग केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के घर पर हुई।

पाकिस्तानी सैन्य काफिले में आईईडी ब्लास्ट, 10 की मौत

बीएलए ने ली जिम्मेदारी, कहा- यह हमारी आजादी की लड़ाई, पिछले महीने ट्रेन हाईजैक की थी

इस्लामाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत की राजधानी क्वेटा में बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के हमले में 10 पाकिस्तानी सैनिकों की मौत हो गई। बीएलए ने शुक्रवार को बयान जारी कर हमले की जिम्मेदारी ली। बीएलए ने कहा कि उसके फ्रीडम फाइटर्स ने पाकिस्तानी सेना के काफिले को रिमोट कंट्रोल्ड आईईडी के जरिए निशाना बनाया है। यह हमला हमारी आजादी की लड़ाई का हिस्सा है। क्वेटा से लगभग 30 किमी मार्गट चौकी के पास सैन्य काफिले को निशाना बनाया गया। बीएलए ने कहा कि दुश्मन के खिलाफ हमारा ऑपरेशन तेजी से जारी रहेगा। बलूच लिबरेशन आर्मी ने पिछले महीने बलूचिस्तान के क्वेटा में जाफर एक्सप्रेस पर हमला कर उसे हाईजैक कर लिया था। ट्रेन में लगभग 450 पैसेंजर सवार थे। बीएलए ने जेल में बंद बलूच

कार्यकर्ताओं, राजनैतिक कैदियों, गायब लोगों, लड़ाकों और अलगाववादियों की बिना शर्त रिहाई की मांग की थी। इसके बाद पाकिस्तानी सेना और बलूच लड़ाकों के बीच 48 घंटे लड़ाई चली थी। पाकिस्तानी सेना दावा किया था कि 33 बलूच लड़ाके मारे गए हैं और सभी बंधकों को रिहा करा लिया गया। जबकि बलूच लड़ाकों ने 100 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराने का दावा किया था। बलूचिस्तान में कई लोगों का मानना है कि भारत-पाकिस्तान बंटवारे के बाद वे एक आजाद देश के तौर पर रहना चाहते थे, लेकिन बिना उनकी मर्जी से उन्हें पाकिस्तान में शामिल कर दिया गया था। इस वजह से बलूचिस्तान में सेना और लोगों का संघर्ष आज भी जारी है।

बीएलए की प्रमुख मांग पाकिस्तान से अलग होकर बलूचिस्तान देश का गठन करना है। बलूचिस्तान में आजादी की मांग करने वाले कई संगठन हैं। इनमें बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) सबसे ताकतवर संगठन है। ये संगठन 70 के दशक में अस्तित्व में आया, लेकिन 21वीं सदी में इसका प्रभाव बढ़ा है। बीएलए बलूचिस्तान को पाकिस्तानी सरकार और चीन से मुक्ति दिलाना चाहता है। उनका मानना है कि बलूचिस्तान के संसाधनों पर उनका हक है। पाकिस्तान सरकार ने बलूच लिबरेशन आर्मी को 2007 में आतंकी संगठनों की सूची में शामिल किया था।

सिडनी स्थित इंस्टीट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस की तरफ से जारी वैश्विक आतंकवाद सूचकांक (जीटीआई) रिपोर्ट 2025 में पाकिस्तान को दुनिया में दूसरा सबसे ज्यादा आतंक प्रभावित देश बताया गया था।

वेटिकन सिटी में हुई ट्रंप-जेलेंस्की की मुलाकात

पोप के अंतिम संस्कार में शामिल होने पहुंचे दोनों नेता

वेटिकन सिटी, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए दुनियाभर के शीर्ष नेता और राष्ट्राध्यक्ष वेटिकन सिटी पहुंचे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की भी पोप के अंतिम संस्कार कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे। अंतिम संस्कार कार्यक्रम से पहले दोनों नेताओं की निजी मुलाकात भी हुई। व्हाइट हाउस और यूक्रेन सरकार ने भी दोनों नेताओं की मुलाकात की पुष्टि की। दोनों नेताओं की मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की पर तीखा हमला बोला था। ट्रंप ने आरोप लगाया कि जेलेंस्की क्रीमिया को रूस को सौंपने के प्रस्ताव को ठुकराकर संभावित शांति की कोशिशों में रुकावटें डाल रहे हैं। ट्रंप ने कहा कि यूक्रेनी नेता युद्ध को और लंबा खींच रहे हैं। वहीं जेलेंस्की ने रूस के साथ शांति समझौते के लिए रूस को यूक्रेन के क्षेत्र सौंपने से भी इनकार कर दिया है और कहा कि वे ऐसी किसी भी शांति योजना को नहीं मानेंगे, जिसमें यूक्रेन को अपना कोई हिस्सा रूस को देना पड़े।

पाकिस्तान की सिर्फ 2 पनडुब्बियां ऑपरेशनल

बाकी खराब, सैटेलाइट तस्वीरों से खुलासा भारत के लिए क्या है इसका मतलब?

इस्लामाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। भारत से तनाव के बीच सैटेलाइट तस्वीरों से दुश्मन की बहुत बड़ी कमजोरी का खुलासा हुआ है। सैटेलाइट तस्वीरों से पता चला है कि पाकिस्तान की ज्यादातर पनडुब्बियां इस वक्त मरम्मत में हैं। अगर सैटेलाइट तस्वीरों से होने वाला आकलन सही है तो इसका मतलब ये होगा कि अरब सागर में पाकिस्तान की शक्ति काफी कमजोर हो गई है। भारत के विपरीत पाकिस्तान ने अपनी नौसेना को पनडुब्बियों से मजबूत किया है, क्योंकि पनडुब्बी को ट्रैक करना काफी मुश्किल होता है। लेकिन सैटेलाइट तस्वीरों से पता चला है कि पाकिस्तान की

ज्यादातर पनडुब्बियां अभी बंदरगाहों पर मरम्मत की प्रक्रिया में हैं। मार्च 2025 में कराची से ली गई सैटेलाइट तस्वीरों से इसका खुलासा हुआ है। रिपोर्ट में बताया गया है कि पाकिस्तान की आठ ऑपरेशनल पनडुब्बियों में से सिर्फ 2 ही अभी चालू हैं। बाकी पनडुब्बियां अभी मरम्मत में, या अपग्रेडेशन में फंसी हुई हैं। इन पनडुब्बियों को एक्टिव होने में अभी कई महीनों का वक्त लगने वाला है, जिससे भारत के साथ बढ़ते तनाव के बीच पाकिस्तान की नौसेना की तैयारियों पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं।

एक्सपर्ट्स का कहना है कि शिमला समझौता खत्म करने के बाद दोनों देशों के बीच का तनाव काफी बढ़ गया है, लेकिन पाकिस्तान की नौसेना अरब सागर में रणनीतिक बढ़त बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। दावा किया गया है कि इस साल मार्च, यानि पिछले महीने ही कराची बंदरगाह पर मौजूद इन पनडुब्बियों की सैटेलाइट तस्वीरें ली गई हैं।

ईरान के बंदरअब्बास पोर्ट पर धमाका

516 लोग घायल, ज्वलनशील पदार्थों को रखने में लापरवाही से हादसा

तेहरान, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। ईरान के बंदर अब्बास पोर्ट पर शनिवार को विस्फोट में 516 लोग घायल हो गए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक शुरुआती जांच में पता चला है कि घटनास्थल पर ज्वलनशील पदार्थों के स्टोरेज में लापरवाही से यह हादसा हुआ। ईरानी अधिकारियों ने बताया कि यह विस्फोट बंदर अब्बास पोर्ट के ठीक बाहर शाहिद राजाई पोर्ट के सिना कंटेनर यार्ड में हुआ। यहां पर ट्रांसपोर्ट कंटेनर्स को रखा जाता है, जिसमें ऑयल और अन्य पेट्रोकेमिकल फेसिलिटी भी है। रेस्क्यू वर्कर्स हादसे वाली जगह से

लोगों को बाहर निकालने की कोशिश कर रहे हैं। ईरानी मीडिया का कहना है कि विस्फोट की वजह से किसी एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर को नुकसान नहीं पहुंचा है। ईरान को अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों की वजह से जरूरी इक्विपमेंट नहीं मिल पाते हैं, इस वजह से यहां पर अक्सर इंडस्ट्रीयल दुर्घटनाएं होती रहती हैं।

शाह से चर्चा के बाद एक्शन में सीएम

पाक नागरिकों के वीजा निरस्ती के निर्देशों पर सख्त पालन के आदेश

जयपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद देशभर में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सख्ती बरती जा रही है। इसी सिलसिले में शुक्रवार को राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से वार्ता की। उसके बाद उन्होंने राज्य में पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा से संबंधित केंद्रीय गृह मंत्रालय की गाइडलाइन का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश जारी किए। मुख्यमंत्री ने साफ कहा कि इन निर्देशों की अवहेलना किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं की जाएगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से वार्ता की। उसके बाद उन्होंने केंद्र द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा को लेकर जारी की गई गाइडलाइन के पालन के लिए अधिकारियों को निर्देशों की तत्काल और सख्ती से पालना करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को वार्ता में उन्हें यह आश्वस्त किया कि पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा के संबंध में प्राप्त दिशा-निर्देशों का राज्य में कठोरता से पालन किया जाएगा।

जिला कलेक्टरों और एसपी को दिए गए स्पष्ट निर्देश

मुख्यमंत्री के निर्देशों के बाद गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव आनन्द कुमार ने सचिवालय में एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई। इस बैठक में पुलिस महानिदेशक यू.आर. साहू, सीआईडी सुरक्षा पुलिस महानिदेशक संजय अग्रवाल, गृह विभाग की उप सचिव सोविला माथुर, वरिष्ठ अधिकारी राजेश जैन सहित राज्य के सभी जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए। बैठक का मुख्य उद्देश्य था- गृह मंत्रालय द्वारा पाक नागरिकों के वीजा निरस्त करने के निर्देशों के पालन की तैयारियों की समीक्षा।

वीजा रद्द, निष्कासन तय, अब 27 अप्रैल से प्रभाव में आएंगे आदेश

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने आदेश जारी कर स्पष्ट किया है कि 26 अप्रैल (शनिवार) से सार्क वीजा और 27 अप्रैल (रविवार) से सभी अन्य वैध वीजा तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिए जाएंगे। यह आदेश दीर्घकालिक वीजा, राजनयिक और आधिकारिक वीजा को छोड़कर सभी प्रकार के वीजा पर लागू होगा। हालांकि मेडिकल वीजा 29 अप्रैल 2025 तक वैध रहेगा। सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि पाकिस्तान से आए नागरिकों का निष्कासन अटारी बॉर्डर के माध्यम से किया जाएगा।

एफआरओ और पुलिस अधीक्षकों को निष्कासन कार्रवाई की जिम्मेदारी

एसीएस (होम) आनन्द कुमार ने बैठक में कहा कि राज्य में जो पाक नागरिक दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) को छोड़कर अन्य किसी भी वीजा पर निवासरत हैं, उनकी पहचान कर उन्हें निर्धारित समय-सीमा में निष्कासित किया जाए। संबंधित एफआरओ और पुलिस अधीक्षक इस कार्रवाई के लिए सीधे जिम्मेदार होंगे।

कानून व्यवस्था पर मुख्यमंत्री गंभीर, सोशल मीडिया भी जद में

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हाल ही में कानून व्यवस्था को लेकर अधिकारियों के साथ हुई समीक्षा बैठक में स्पष्ट निर्देश दिए थे कि प्रदेश में पूर्ण चौकसी बरती जाए। खासकर आमजन और पर्यटकों की सुरक्षा में किसी भी प्रकार की ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके साथ ही सोशल मीडिया पर फैलाई जाने वाली अफवाहों और आपत्तिजनक सामग्री पर भी नजर रखने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी जिला और पुलिस प्रशासन को सामंजस्य के साथ कार्य करना होगा।

रंधावा के बयान पर भड़के रिटायर्ड मेजर जनरल

बोले- पाक के साथ तीन मोर्चों पर लड़ाई की तैयारी मे

जयपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। कश्मीर के पहलगाम में हुए हालिया आतंकी हमले के बाद पूरे देश में गुस्से और एकजुटता का माहौल है। आतंकियों के इस हमले ने एक बार फिर भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव को बढ़ा दिया है। वहीं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा के एक बयान ने राजनीतिक गलियारों में नई बहस छेड़ दी है। रंधावा ने अग्निवीर योजना पर सवाल उठाते हुए कहा था कि चार साल के लिए कोई अपनी जान दांव पर नहीं लगाएगा, अग्निवीर योजना को तुरंत बंद किया जाना चाहिए। उनके इस बयान को लेकर सेना के जज्बे और मनोबल पर चोट करने के आरोप लगाए जा रहे हैं।

रिटायर्ड मेजर जनरल अनुज माथुर ने रंधावा के बयान को गैरजिम्मेदाराना करार देते हुए कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि आज देश को एकजुट होकर सेना के साथ खड़े होने की जरूरत है, न कि उनके साहस और बलिदान पर सवाल उठाने की। मेजर जनरल ने कहा कि हर अग्निवीर सैनिक देशभक्ति से भरा होता है, वह किसी नौकरशाही की चाहत में नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा की भावना से सेना में आता है। उन्होंने दो टूक कहा कि भारतीय सेना का मोरल कोई चाय का प्याला नहीं है, जो हर घूंट के साथ नीचे गिर जाए।

तीन मोर्चों पर लड़ाई की तैयारी में भारत

रिटायर्ड मेजर जनरल अनुज माथुर ने अमर उजाला से खास बातचीत में बताया कि पाकिस्तान के खिलाफ भारत पहले ही तीन स्तरों पर कार्रवाई शुरू कर चुका है। पहला है आर्थिक युद्ध (इकोनॉमिक वॉरफेयर), जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 1960 की जल संधि को रद्द कर दिया है, जिससे पाकिस्तान की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर जबरदस्त असर पड़ेगा। पाकिस्तान की ऊर्जा और सिंचाई का मुख्य स्रोत यही नदियां हैं और जल आपूर्ति बंद होने से पाकिस्तान में त्राहिमाम मच सकता है।

दूसरा मोर्चा है मनोवैज्ञानिक युद्ध, जिसमें भारत ने पाकिस्तानी डिप्लोमेट्स को वापस भेजने और देश में मौजूद पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे के भीतर भारत छोड़ने के आदेश जारी कर दिए हैं। इससे पाकिस्तान में भय और अनिश्चितता का माहौल फैल गया है।

इसके साथ ही तीसरा और सबसे अहम मोर्चा है सैन्य ताकत का प्रदर्शन। भारतीय नौसेना ने अरब सागर में आईएनएस सूरत जैसे अल्ट्रा-मॉडर्न युद्धपोत को तैनात कर मिसाइल परीक्षण किया है। मेजर जनरल अनुज माथुर ने कहा कि पाकिस्तान आज भी 4 दिसंबर 1971 की रात को नहीं भूल पाया है, जब भारतीय नौसेना ने कराची पोर्ट को तबाह कर दिया था। आज हमारी नौसेना तब से 50 गुना ज्यादा ताकतवर हो चुकी है।

पाकिस्तान में बढ़ती घबराहट

मेजर जनरल ने बताया कि पाकिस्तान को अच्छी तरह पता है कि चार बार युद्ध लड़ने के बावजूद वह भारत के सामने टिक नहीं पाया है और आज भारत की सैन्य क्षमता पहले से कहीं ज्यादा मजबूत है। पाकिस्तान जानता है कि अगर सीधा सैन्य हमला हुआ, तो उसे कहीं से कोई सहारा नहीं मिलेगा। इसीलिए वहां के आतंकी सरगना हाफिज सईद और सेना प्रमुख आसिफ मुनीर बंकरों में छुपने को मजबूर हैं।

मेजर जनरल ने जोर देकर कहा कि इस बार अगर कार्रवाई हुई तो सिर्फ आतंकियों पर नहीं, बल्कि उनके संरक्षकों पर सीधा वार होगा। पाकिस्तान का आतंकवाद को समर्थन पूरी दुनिया के सामने उजागर हो चुका है और अब भारत निर्णायक कदम उठाने के लिए तैयार है।

पोस्टर विवाद के बाद बीजेपी विधायक पर केस दर्ज

जयपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। राजधानी जयपुर के जौहरी बाजार स्थित जामा मस्जिद के बाहर पोस्टर लगाने को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। बीजेपी के हवा महल सीट से विधायक बालमुकुंद आचार्य के खिलाफ धार्मिक भावनाएं आहत करने और सौहार्द बिगाड़ने के आरोप में पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। इस घटना के बाद से शहर के बड़ी चौपड़ और आसपास के इलाकों में तनाव का माहौल बना हुआ है।

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में विधायक बालमुकुंद आचार्य अपने समर्थकों के साथ प्रदर्शन के लिए बड़ी चौपड़ पहुंचे। यहां 'जय श्री राम' के नारे लगे और कई दीवारों पर पोस्टर चिपकाए गए। प्रदर्शनकारियों का काफिला जब जामा मस्जिद के सामने पहुंचा तो विवाद हो गया। और यही घटना विवाद की जड़ भी बनी।

आरोप है कि विधायक आचार्य ने मस्जिद की सीढ़ियों पर 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' लिखे पोस्टर खुद चिपकाए और उन पर पैर भी रखा। उस वक्त मस्जिद के अंदर रात की नमाज चल रही थी, जिससे वहां मौजूद लोगों में आक्रोश फैल गया। देखते ही देखते बड़ी संख्या में लोग मस्जिद के बाहर जमा हो गए और विधायक के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया।

मस्जिद प्रशासन की शिकायत पर विधायक बालमुकुंद आचार्य के खिलाफ जयपुर के माणक चौक थाने में धार्मिक भावनाएं आहत करने, धार्मिक स्थल के सम्मान का उल्लंघन करने और शांति भंग करने के आरोप में एफआईआर दर्ज की गई है।

जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जोसेफ जॉर्ज ने बताया कि दो पक्षों के बीच तनाव फैलने की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को शांत कराया। एसीपी कुंवर राष्ट्रदीप, डीसीपी नॉर्थ राशि डोगरा समेत भारी पुलिस बल मौके पर तैनात किया गया। समझाइश के बाद भीड़ को धीरे-धीरे हटाया गया।

पुलिस ने फिलहाल मामले की जांच शुरू कर दी है और विधायक की भूमिका की बारीकी से जांच की जा रही है। हालात को देखते हुए जौहरी बाजार और बड़ी चौपड़ क्षेत्र में अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर दिया गया है।

गटर के ढक्कनों पर लगाए इसराइल के झंडे

6 युवकों समेत एक बाल अपचारी को डिटेन किया

जोधपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। शहर के भीतरी इलाके में इजरायल के झंडेनुमा बैनर पर जूते के निशान बनाकर उन्हें गटर के ढक्कनों पर लगाए जाने का मामला सामने आया है। इस संबंध में सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और सीसीटीवी कैमरे खंगालने के साथ ही छः लोगों को डिटेन भी किया गया और एक बाल अपचारी को संरक्षण में लिया है।

शहर के मोती चौक इलाके में फरसों का बंगला और आसपास की कई जगहों पर इजरायल का झंडा लगाकर उस पर जूते के निशाना बनाए गए थे और इन्हें जगह-जगह गटर के ढक्कनों पर लगाया गया था। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी, जिस पर सदर बाजार थाना पुलिस अधिकारियों को मामले की जानकारी देकर मौके पर पहुंची।

मामले में पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज खंगालकर 6 लोगों को डिटेन किया है, साथ ही एक नाबालिग को संरक्षण में लिया गया है। कार्रवाई के बारे में बताते हुए एसीपी सेंट्रल मंगलेश चुंडावत ने बताया कि पहलगाम हमले के बाद सोशल मीडिया पर माहौल खराब करने वालों पर लगातार नजर रखी जा रही है। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि मामले में सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए, जिसमें कुछ युवक दिखाई दिए। इसके बाद पुलिस ने ये सामग्री बनाने वाले सहित 6 लोगों को डिटेन किया और एक नाबालिग को संरक्षण में लिया है।

एसीपी मंगलेश चुंडावत ने बताया कि पूछताछ में पता चला कि ये सब सोशल मीडिया का साइड इफेक्ट था। युवक कुछ भ्रामक वीडियो देखकर सोशल मीडिया के जाल में फंस गए और यह हरकत कर दी। पुलिस ने पकड़े गए युवाओं के मोबाइल भी खंगाले हैं।

पहलगाम आतंकी हमले पर सरकारी टीचर की विवादित पोस्ट से मचा हड़कंप

बाड़मेर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में बीते दिनों हुए आतंकी हमले को लेकर राजस्थान सहित देशभर आक्रोश व्याप्त है। इस बीच राजस्थान में एक सरकारी टीचर ने पहलगाम आतंकी हमले को लेकर विवादित पोस्ट अपलोड कर दी। जिससे अब हड़कंप मचा हुआ है। हैरान कर देने वाली

बात ये है कि आतंकी हमले को लेकर देश के लोगों में गुस्सा है। राजस्थान सहित जगह-जगह आतंकियों को सबक सीखाने की मांग को लेकर विरोध-प्रदर्शन किया जा रहा है। लेकिन, सरकारी टीचर ने आतंकी हमले को प्रोपेगेंडा बताया है। इस पोस्टर के बाद पुलिस महकमा भी हरकत में आ गया। वहीं, शिक्षा विभाग ने भी विवादित पोस्ट करने वाले शिक्षक पर बड़ा एक्शन लिया है।

गुड़ामालानी थाना पुलिस के अनुसार पायला कल्ला ब्लॉक के राजकीय प्राथमिक विद्यालय पीपाजी की ढाणी में पदस्थापित टीचर जसवंत डाभी निवासी गोलिया कला ने सोशल मीडिया पर पहलगाम हमले को लेकर सेना, सरकार और मीडिया पर अभद्र टिप्पणी करते हुए मृतकों की सूची शेयर की। साथ ही आतंकी हमले को प्रोपेगेंडा बताया था।

सरकारी टीचर ने स्टेटस पर आतंकी हमले को प्रोपेगेंडा बताते हुए मृतकों की लिस्ट डाली थी। उसने लिखा था कहा कि 'अगर धर्म पूछ कर मारा होता, तो शायद सैय्यद आदिल हुसैन शाह जिंदा होता।' टीचर ने देश की मीडिया पर झूठ फैलाने का आरोप भी लगाया। साथ में कहा कि पहलगाम पुलवामा की तरह एक प्रोपेगेंडा है। टीचर के स्टेटस का स्क्रीनशॉट लेकर किसी ने सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। हालांकि, बाद में पोस्ट को डिलीट कर दिया गया है। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर सोशल मीडिया पर विवादित टिप्पणी करने पर पुलिस ने एक शिक्षक को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी देवीचंद ढाका ने बताया कि आरोपी शिक्षक को शांतिभंग में गिरफ्तार किया पुलिस की शिक्षक के खिलाफ कार्रवाई होने के बाद शिक्षा विभाग ने जांच के आदेश दिए है।

प्रोफेसर का बाथरूम में मिला शव

छात्राओं से छेड़छाड़ करने के आरोप में सस्पेंड करके भीलवाड़ा कर दिया था ट्रांसफर

कोटा, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। आरटीयू कॉलेज कोटा के पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर गिरीश कुमार परमार की शुक्रवार सुबह संदिग्ध हालात में मृत्यु हो गई। परमार कमरे के बाथरूम में मृत मिले। सूचना पर कोटा से परिजन भीलवाड़ा पहुंचे। प्रतापनगर थाना पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव सौप दिया। परमार (52) आरटीयू कॉलेज कोटा में एसोसिएट प्रोफेसर (इलेक्ट्रोनिक) थे। छात्राओं से छेड़छाड़ मामले में निलंबित किए जाने से उनका मुख्यालय एमएलवी टेक्सटाइल कॉलेज भीलवाड़ा कर दिया था। परमार यहां कॉलेज में सुबह एक बार हाजिरी देने जाते थे। परमार शारदा चौराहे के निकट उगम विहार कॉलोनी में किराए मकान में रह रहे थे। शुक्रवार सुबह दस बजे तक कमरे से बाहर नहीं निकले। मकान मालिक ने देखा तो परमार बाथरूम में मृत मिले। मकान मालिक की सूचना पर टेक्सटाइल कॉलेज से स्टाफ व प्रतापनगर पुलिस मौके पर पहुंची। घटना की सूचना पर परिजन भी कोटा से पहुंचे। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। प्रथम दृष्टया मृत्यु कारण हदय़घात माना जा रहा है। कोटा के आरटीयू की स्टूडेंट्स ने प्रोफेसरों पर 3 साल पहले छेड़छाड़ का आरोप लगाया था। बीटेक की छात्रा ने रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि उसके सहपाठी अर्पित के माध्यम से एसोसिएट प्रोफेसर गिरीश परमार ने उसे टेस्ट में अच्छे नंबर से पास करवाने की एवज में शारीरिक संबंध बनाने का दबाव बनाते थे। जिसके बाद यूनिवर्सिटी प्रशासन ने सस्पेंड कर उनका तबादला भीलवाड़ा कर दिया था तब से वे वहीं रह रहे थे।

जैसलमेर में आतंकी हमले की आशंका, बुलेटप्रूफ जैकेट और पिस्तौल के साथ गश्त करते दिखे पुलिसकर्मी

जैसलमेर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। जैसलमेर में हाई अलर्ट की घोषणा के बाद पूरे जिले में सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा किया गया है। पुलिस और बीएसएफ के समन्वय से सीमावर्ती इलाकों की निगरानी को सख्त कर दिया गया है और प्रत्येक संदिग्ध गतिविधि पर पैनी नजर रखी जा रही है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद देशभर के सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा किया जा रहा है। राजस्थान के जैसलमेर जिले में भी सुरक्षा का स्तर बढ़ाते हुए हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। इस कदम के तहत जैसलमेर जिले के अधिकारियों ने सीमा पर घुसपैठ की आशंका और सार्वजनिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आवश्यक कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। जैसलमेर में हाई अलर्ट के बाद पुलिस और बीएसएफ (बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स) के वरिष्ठ अधिकारियों की एक विशेष बैठक आयोजित की गई। इसमें मौजूदा सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की गई और आगामी सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए रणनीतियां तय की गईं। बैठक में जैसलमेर आईजी पुलिस विकास कुमार और बीएसएफ आईजी एमएल गर्ग सहित इंटेलिजेंस एजेंसियों और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारीगण शामिल हुए। इस बैठक का फोकस मुख्य रूप से सीमा पर घुसपैठ की बढ़ती आशंका, धार्मिक स्थलों की सुरक्षा, और इंटेलिजेंस साझेदारी पर था।

जैसलमेर जिले के रामदेवरा स्थित बाबा रामदेव समाधि स्थल और उसके आसपास के इलाकों में पुलिस और बीएसएफ द्वारा गहन जांच अभियान चलाया गया। थानाधिकारी शंकर लाल के नेतृत्व में इस इलाके में आने-जाने वालों की तलाशी ली जा रही है। खासकर राम सरोवर तालाब, परचा बावड़ी, मुख्य बाजार, होटल और धर्मशालाओं में आने-जाने वाले व्यक्तियों की सघन जांच की जा रही है। यह कदम सार्वजनिक स्थलों पर संभावित खतरे को रोकने और संदिग्ध गतिविधियों को तुरंत पकड़ने के लिए उठाया गया है।

साथ ही, जैसलमेर के पुलिस जवानों को बुलेटप्रूफ जैकेट और हथियारों से लैस किया गया है। अब जिले में पुलिस और बीएसएफ के जवान नियमित रूप से गश्त करेंगे और हर संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखी जाएगी। अधिकारियों के अनुसार, रेगिस्तानी बॉर्डर इलाकों में स्मार्ट फेंसिंग सिस्टम को सक्रिय किया गया है। साथ ही एंटी-ड्रोन तकनीक को अलर्ट मोड में रखा गया है, ताकि किसी भी संदिग्ध ड्रोन गतिविधि को रोका जा सके।

शराबी युवकों ने किया मौलाना पर हमला

बड़ी संख्या में भूपालपुरा थाने पहुंचे लोग, गिरफ्तारी की मांग

उदयपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। शहर के भूपालपुरा थाना इलाके में देर रात कुछ शराबी युवकों नें एक मौलाना पर अचानक हमला कर दिया। पहले तो उनकी दाढ़ी खींची और बाद मे नाले में धक्का देकर उन्हें मारने की कोशिश की। घटना की सूचना मिलते ही सैकड़ों लोग मौके पर इकट्ठा हो गए और थाने का घेराव कर दिया। बाद में तीन थानों का जाब्ता भी मौके पर पहुंचा और मामला शांत करवाया।

एक मौलाना तस्लीम रजा पुल से अलीपुर की ओर अपने घर जा रहे थे, तभी रास्ते में नशे में धुत चना बेचने वाले कुछ युवकों ने उन्हें रोका और कश्मीर मे हुए आतंकी हमले का हवाला देते हुए उनसे मारपीट शुरू कर दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार शराबी युवकों नें मौलाना के साथ अभद्रता करते हुए मारपीट की और बाद में उनके सिर पर पत्थर से हमला किया, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए और मौके पर ही बेहोश होकर नीचे गिर गए।घटना की सूचना मिलते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और मौलाना तस्लीम रजा को तुरंत अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज जारी है। घटना के बाद बड़ी संख्या में मुस्लिम समाज के लोग भूपालपुरा थाने पहुंचे और थाने का घेराव करते हुए आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

मामला बिगड़ते देख पुलिस के उच्चाधिकारी भी मौके पर पहुंचे और स्थित को नियंत्रित किया। क्षेत्रीय पूर्व पार्षद कुसुम पवार भी तुरंत मौके पर पहुंचीं और मुस्लिम समाज के लोगों से बातचीत कर माहौल को शांत किया। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए मुख्य आरोपी आकाश के छोटे भाई को हिरासत में ले लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है।

एक होटल में हो रहा था 'गंदा काम', अचानक आ धमकी पुलिस

नशे में धुत 50 लड़के-लड़की गिरफ्तार

जयपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। राजधानी जयपुर के बगरू थाना क्षेत्र में पुलिस ने देर रात एक होटल में चल रही रेव पार्टी पर छापा मारा। यहां 50 युवक-युवती नशे की हालत में मिले। मौके से शराब की 11 बोतल और बीयर की 82 बोतल जब्त की गई। रेव पार्टी हिम्मतपुरा स्थित होटल कैएलम अथर्वा पैलेस एंड रेस्टोरेंट में चल रही थी।

पुलिस ने मौके से होटल संचालक मुकेश गुर्जर पुत्र मूलचंद गुर्जर निवासी अनूपपुरा पुलिस थाना जमवारामगढ़ जयपुर ग्रामीण को गिरफ्तार किया है। साथ ही 40 युवकों को धारा 170 बीएनएसएस के तहत गिरफ्तार किया गया। वहीं, 10 युवतियों के खिलाफ धारा 172 बीएनएसएस के तहत कार्रवाई की गई। पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि सूचना मिली की हिम्मतपुरा स्थित होटल में रेव पार्टी चल रही है। इसके बाद कुछ पुलिसकर्मियों को सादा वर्दी में मौके पर भेजा गया। पुलिस टीम ने मौके पर रेव पार्टी होते हुए देखी। इसके बाद रात 1.30 बजे बगरू और बिंदायका थाने से पुलिस जाप्ता मौके पर भेजा गया।

पुलिस मौके पर पहुंची तो युवक-युवतियां नशे की हालत में मिले, जो होटल के बड़े हॉल में नांच रहे थे। पुलिस को देखते ही युवक-युवतियां अपना मुंह छिपाते हुए इधर-उधर भागने लगे। हालांकि, मौके से सभी को पकड़ लिया।

जसोल माताजी के दर्शन कर लौट रहे परिवार का हुआ भयंकर एक्सीडेंट, पति-पत्नी की मौत, 4 घायल

जालोर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। हादसे में कार में सवार मूलसिंह (32) और उसकी पत्नी दरियाव कंवर (28) की मौत हो गई, जबकि चार अन्य घायल हो गए। हादसा चंडालिया गांव के पास हुआ, जब कार का चालक झपकी ले रहा था और कार अनियंत्रित होकर खड़े ट्रक में घुस गई।

हादसे में मृतक मूलसिंह के पुत्र अभिजीत सिंह (5), जितेन्द्रसिंह (9), भाई अजयपालसिंह (24) व कार में सवार अन्य पारिवारिक सदस्य तनु घायल हो गए। पत्नी-पत्नी के शव को उप जिला अस्पताल ओसियां की मोर्चरी में रखवाया। घायलों को जोधपुर एमडीएम रैफर किया गया।

यह परिवार भागवा सिवाना, जालोर का रहने वाला था, जो जसोल माताजी के दर्शन करके घर लौट रहा था। मृतक मूलसिंह की पत्नी दरियाव अपने माता-पिता से मिलने के लिए ढेलाना जाने वाली थी, लेकिन उससे पहले ही उनकी मौत हो गई।

चार साल की मासूम से दुष्कर्म का प्रयास करने वाले को सात साल जेल

चित्तौड़गढ़, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। चित्तौड़गढ़ कोर्ट ने दुष्कर्म के प्रयास के आरोपी को दोषी करार देते हुए सात साल की सजा सुनाई है। साथ ही 40 हजार का अर्थदंड भी लगाया है। बड़ी बात ये है कि फैसला 68 दिन में ही दे दिया गया है।

चित्तौड़गढ़ जिले के चन्देरिया थाना क्षेत्र में चार वर्षीय बालिका के साथ छेड़छाड़ व दुष्कर्म के प्रयास के मामले में विशेष न्यायालय पॉक्सो कोर्ट चित्तौड़गढ़ क्रमांक-01 की न्यायाधीश लता गौड ने दो माह आठ दिन में फैसला सुनाया है। अभियुक्त को दोषी मानते हुए अधिकतम सात वर्ष के कठोर कारावास व 40 हजार रुपए अर्थदंड की सजा सुनाई गई है।

विशेष लोक अभियोजक पॉक्सो कोर्ट चित्तौड़गढ़ गोपाल जाट ने बताया कि 18 फरवरी 2025 को कस्बा चन्देरिया में चार साल की मासूम से दुष्कर्म का प्रयास हुआ था। इस संबंध में प्रार्थी की ओर से चन्देरिया थाने पर 19 फरवरी को प्रकरण दर्ज कराया गया। मामले में वांछित अभियुक्त हाउसिंग बॉर्ड कॉलोनी चन्देरिया निवासी 38 वर्षीय सलीम पुत्र मोहम्मद शफी कुरैशी को गिरफ्तार किया था। पुलिस ने अनुसंधान पूर्ण कर न्यायालय में चालान पेश किया। प्रकरण की सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से न्यायालय में 15 गवाह के बयान हुए। मामले में पॉक्सो कोर्ट क्रमांक 01 की न्यायाधीश ने शुक्रवार को फैसला सुनाया। अभियुक्त हाउसिंग बॉर्ड कॉलोनी चन्देरिया निवासी सलीम कुरैशी पुत्र मोहम्मद शफी कुरैशी को दोषी पाया।

जामबाग पार्षद राकेश जायसवाल झांसी निकेतन स्कूल द्वारा आयोजित कैंडल मार्च में शामिल हुए। मार्च का आयोजन पहलगाम में हुई 26 लोगों के मारे जाने के विरोध में किया गया था। अबसर पर स्कूल प्रिंसपाल श्रीमती शारदा, शिव कुमार, अनिल यादव, शिक्षक व अभिभावकगण भारी मात्रा में मौजूद थे।

उत्तम ने उदार लोकतंत्र के लिए वैश्विक खतरे की चेतावनी दी

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। सिंचाई और नागरिक आपूर्ति मंत्री एन उत्तम कुमार रेड्डी ने शनिवार को चेतावनी दी कि उदार मूल्यों पर दुनिया भर में अभूतपूर्व हमला हो रहा है। एचआईसीसी में भारत शिखर सम्मेलन 2025 के समापन सत्र में धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए उन्होंने कहा कि विचार, भाषण, कला, शिक्षा, सभा और विरोध की स्वतंत्रता पर दुनिया भर में चरम दक्षिणपंथी और सत्तावादी शासन द्वारा लगातार हमला किया जा रहा है। उत्तम कुमार रेड्डी ने कहा कि यह गर्व की बात है कि भारत शिखर सम्मेलन हैदराबाद, तेलंगाना में कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार के तहत आयोजित किया जा रहा है जो उदार, लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है। उन्होंने इस सम्मेलन को दुनिया के सबसे बड़े प्रगतिशील, उदारवादी, लोकतंत्रवादी, कार्यकर्ता, विचारक, कार्यकर्ता, परिवर्तनकर्ता और मानविकी के क्षेत्र में नवप्रवर्तकों में से एक बताया, जो ऐसे समय में एकत्रित हुए हैं जब मौलिक स्वतंत्रता की रक्षा वैश्विक अनिवार्यता बन गई है। दो दिनों में हुई चर्चाओं की व्यापकता पर विचार करते हुए, उत्तम कुमार रेड्डी ने कहा कि शिखर सम्मेलन के सत्रों में वैश्विक न्याय, पर्यावरण संबंधी चिंताएं, प्रौद्योगिकी के माध्यम से गलत सूचना का प्रसार और लिंग और आयु भेदभाव की लगातार चुनौतियों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि दुनिया के कुछ सबसे प्रतिष्ठित विचारकों, राजनीतिक हस्तियों, कार्यकर्ताओं और नीति निर्माताओं ने आगे के रास्ते पर अपनी अंतर्दृष्टि के साथ विचार-विमर्श को समृद्ध किया। मंत्री ने कहा कि भारत शिखर सम्मेलन 2025 ने उदार लोकतांत्रिक दुनिया की ओर से एक स्पष्ट और जरूरी आवाज उठाई है, जो न केवल बौद्धिक तर्क बल्कि समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए भावनात्मक ताकत भी प्रदान करता है। वर्तमान वैश्विक मामलों पर चर्चाओं में व्याप्त निराशा को स्वीकार करते हुए, उत्तम कुमार रेड्डी ने कहा कि बढ़ती असहिष्णुता और अधिनायकवाद का सामना करने पर कई लोग निराश और यहां तक कि हताश महसूस करते हैं। हालांकि, उन्होंने कहा कि भारत शिखर सम्मेलन ने न केवल दिमागों को बल्कि दिलों को भी एकजुट करके आशा को फिर से जगाया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि शिखर सम्मेलन केवल एक सम्मेलन नहीं था, बल्कि मानवता के लिए एक बड़े दृष्टिकोण से जुड़े एक परिवार को एक साथ लाया है- जो सम्मान, स्वतंत्रता और न्याय पर आधारित है। उत्तम कुमार रेड्डी ने प्रतिनिधियों को हैदराबाद को एक वैश्विक निवेश गंतव्य के रूप में विचार करने के लिए भी आमंत्रित किया, उन्होंने बताया कि शहर विभिन्न क्षेत्रों में कुछ बेहतरीन अवसर प्रदान करता है।

नशीली पदार्थों के मामलों में अपराधियों को दंडित करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए : डॉ. जितेंद्र

बड़ी मात्रा में ड्रग्स जब्त करने वाले अधिकारियों को पुरस्कार मिला

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य पुलिस महानिदेशक डॉ. जितेंद्र आईपीएस ने स्पष्ट किया है कि मादक पदार्थ मामलों की जांच को मजबूत बनाकर दोषियों को सजा दिलाने के लिए कदम उठाए जाएं। शनिवार को डीजीपी कार्यालय में तेलंगाना एंटी नारकोटिक्स ब्यूरो के तत्वावधान में बड़ी मात्रा में ड्रग्स जब्त करने वाले अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। बैठक में बोलते हुए डीजीपी डॉ. जितेन्द्र ने बताया कि तेलंगाना राज्य सरकार ने नशीली पदार्थों के उपयोग पर अंकुश लगाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ एक विशेष ब्यूरो की स्थापना की है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना राज्य सरकार ने देश में पहला एंटी-नारकोटिक्स ब्यूरो स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि यदि नशीले पदार्थों को जब्त कर लिया जाए और उनकी उचित जांच की जाए तो अपराधियों को 10 से 20 साल की जेल की सजा दी जाएगी। डीजीपी ने कहा कि इससे राज्य में नशीले पदार्थों के प्रवेश पर रोक लगेगी, क्योंकि अपराधी सजा के डर से नशीले पदार्थों की आपूर्ति को नियंत्रित करेंगे। डीजीपी का मानना है कि राज्य में कुछ छात्र और युवा नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं, जिससे उनका भविष्य बर्बाद हो रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसी परिस्थितियों में पुलिस अधिकारियों को नशीले पदार्थों पर प्रभावी अंकुश लगाना होगा।

बैठक में बोलते हुए अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून एवं व्यवस्था) महेश एम भागवत ने कहा कि पुलिसकर्मियों को जांच करते समय कानूनी एवं तकनीकी पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए तथा दोषियों को सजा दिलाने के लिए कदम उठाने चाहिए। उन्होंने कहा कि जांच में कमियां बताकर अपराधियों को सजा से बचने का मौका नहीं दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि फास्ट ट्रैक प्रस्ताव के तहत इन मामलों की जांच कर नशे पर अंकुश लगाया जा सकता है। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक अनिल कुमार ने कहा कि कुछ राज्यों में युवा अभी भी नशीली दवाओं के सेवन के कारण समस्याओं का सामना कर रहे हैं। युवा विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने एंटी नारकोटिक्स ब्यूरो की स्थापना की है तथा कड़े कदम उठाए हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री नशे पर नकेल कसने के लिए कृतसंकल्प हैं, इसलिए पुलिस अधिकारियों को सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। ब्यूरो निदेशक संदीप सांडिल्य ने कहा कि पुलिसकर्मियों को अपराधियों का पता लगाने के लिए जानकारी एकत्र करनी चाहिए। वे चाहते हैं कि उन क्षेत्रों के लोग उन्हें सूचना देकर आपूर्ति बंद करा दें। उन्होंने कहा कि नशीली दवाओं के प्रयोग के बारे में सूचना उन्हें टोल फ्री नंबर 1908 पर कॉल करके दी जाए, ताकि वे सख्त कार्रवाई कर सकें। कार्यक्रम में ब्यूरो एसपी रूपेश, एडिशनल एसपी कृष्णमूर्ति व अन्य शामिल हुए। डीजीपी ने भारी मात्रा में मादक पदार्थ जब्त करने वाले पुलिस अधिकारियों को पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किए।

टैंकर में आग लगने से 2 लोग सुरक्षित बचे

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। शनिवार की सुबह हयातनगर ओआरआर में एक टैंकर चालक और क्लीनर चमत्कारिक ढंग से बच गए, जब उनके वाहन में आग लग गई। टैंकर फार्मा सिटी से घाटकेसर की ओर जा रहा था, तभी ड्राइवर ने इंजन से आग निकलती देखी। ड्राइवर और क्लीनर गाड़ी से कूद गए। इस घटना में वाहन का अगला हिस्सा पूरी तरह से जलकर नष्ट हो गया। सूचना मिलने पर हयातनगर फायर स्टेशन से एक दमकल गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। अधिकारियों को संदेह है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी होगी। जांच जारी है।

रिमांड कैदी की दिल का दौरा पड़ने से मौत

करीमनगर, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। करीमनगर जिला जेल में रिमांड कैदी शादुल की दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई। राजन्ना-सिरसिल्ला जिले का मूल निवासी शादुल ट्रैक्टर चोरी के एक मामले में रिमांड पर था। सीने में दर्द की शिकायत पर जेल प्रशासन ने परिजनों को सूचना देकर उसे जिला मुख्यालय अस्पताल पहुंचाया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

दक्षिण मध्य रेलवे
हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें
द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in

ई-निविदा सूचना सं.15-2025 दि.25-04-2025

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से, वरिष्ठ विभागीय अभियंता/को-आर्ड./गुन्टकल द्वारा निम्न कार्यों हेतु बंद करने की तिथि व समयः 23-05-2025 के 15.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

अधोहस्ताक्षरी द्वारा शेड्यूल पर उल्लेखित प्रतिशत दर के आधार पर, दि. 1-7-2025 से 30-6-2026 की अवधि के लिए गुन्टकल डिवीजन के विभिन्न क्षेत्रों में तत्संबंधित कार्यों के निष्पादन, सामग्रियों की आपूर्ति के लिए दि.23-05-2025 के 15.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

ग्रूप -एः निम्न चैप्टर्स के तहत वार्षिक क्षेत्रीय अनुबंध से जुडे कार्य जैसे चैप्टर नं. 2 सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर-2021 वाल्यूम-। आयटम्स या मद 2.28.1, 2.31, 2.32 (जंगल क्लीयरेंस के लिए उपयुक्त), चैप्टर नं.13 सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर-2021 वाल्यूम-।। आयटम्स या मद 13.3% से 13.115 (व्हाइट वाशिंग, कालम वाशिंग, डिस्टेम्परींग व पेन्टिंग), चैप्टर नं.14 (वाटर प्रूफिंग) सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर-2021 वाल्यूम-।। आयटम्स या मद 14.86 से 14.92 (अर्थात् एपीपी वाटर प्रूफिंग ट्रीटमेन्ट), चैप्टर नं.16 सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर-2021 वाल्यूम-।। आयटम्स या मद 16.1 से 16.4, 16.21 से 16.52, 16.54 से 16.59 व 16.%2 से 16.96 (रोड्स व प्लाटफार्म) तथा चैप्टर नं.22 सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर-2021 वाल्यूम-।। आयटम्स या मद सं.22.8 से 22.13 का तत्संबंधित कार्य।

ग्रूप-बीः (।)सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर-2021 वाल्यूम -।, वाल्यूम-।। के तहत कार्य के लिए वार्षिक क्षेत्रीय अनुबंध, उपरोक्त ग्रूप-ए के तहत विवरित सभी मदों को छोडकर I

(।।)सीपीडब्ल्यूडी डीएसआर के तहत हार्टिकल्चर या बागवानी तथा लैण्डस्केपिंग कार्यों के लिए वार्षिक क्षेत्रीय अनुबंध

ग्रूप -सीः साइट आवश्यकता नुसार एनएस मदों से तत्संबंधित सामग्रियों की आपूर्ति के लिए वार्षिक क्षेत्रीय अनुबंध।

ई-निविदा सं.- 1827 डीइएनः को-आर्ड. झोनः एसडब्ल्यू/नार्थ/जीटीएल क्षेत्राधिकारः (बीजी) यार्ड, स्टेशन बिल्डिंग व सर्विस बिल्डिंग्स सहित गुंटकल की नार्थ कालोनी अनुमानित लागतः रु.1,90,27,800.00 बोली सुरक्षाःरु. 2,45,100.00

ई-निविदा सं.- 1828 डीइएनः को-आर्ड. झोनः एसडब्ल्यू/साउथ/जीटीएल क्षेत्राधिकारः धर्मावरम पर पीएफ 1 एण्ड 2, आउटर सिग्नल तक एवं तत्संबंधित सभी कार्यों सहित अनुमानित लागतः रु. 1,72,73,300.00 बोली सुरक्षाःरु. 2,36,400.00

ई-टेंड़र नं. 1829 डीइएनः को-आर्ड. झोनःडब्ल्यूडब्ल्यू/जीटीएल क्षेत्राधिकार एसएसइ/वर्क्स/वाटरवर्क्स/गुंटकल के तहत गुंटकल (पश्चिम) के पास सम्मर स्टोरेज टैंक (गुंटकल से नक्कनदोड्डी) के लिए वाटरिंग या पानी की व्यवस्थाएं। अनुमानित लागतः रु. 43,78,000/- बोली सुरक्षाःरु. 87,600.00

ई-निविदा सं.- 1830 डीइएनः दक्षिण झोनःआरयु क्षेत्राधिकारः रेणीगुन्टा (मिलाकर) से गुडूर (छोडकर) अनुमानित लागतः रु.1,32,00,000.00 बोली सुरक्षाःरु.216000.00

ई-निविदा सं.- 1831 डीइएनः दक्षिण झोनःआरजेपी क्षेत्राधिकारः रेणीगुंटा (छोडकर) से भाकरापेट(मिलाकर) अनुमानित लागतः रु.74,95,882.00 बोली सुरक्षाःरु.149900.00

ई-निविदा सं.- 1832 डीइएनः दक्षिण झोनःएचएक्स क्षेत्राधिकारः भाकरापेट (छोडकर) से कोदंडापुरम (छोडकर) तथा येर्रगुंटा से नोस्सम (मिलाकर) अनुमानित लागतः रु.88,00,000.00 बोली सुरक्षाःरु.176000.00

ई-निविदा सं.- 1833 डीइएनः सेंट्रल झोनःजीवाय क्षेत्राधिकारःगूटी (मिलाकर) से कोंडापुरम (मिलाकर)
अनुमानित लागतः रु.1,44,04,497.00 बोली सुरक्षाःरु. 222000.00

ई-निविदा सं.- 1834 डीइएनः सेंट्रल झोनः डीएचएनइ क्षेत्राधिकारः गुंटकल (बीजी) (छोडकर) से नंद्याल (छोडकर), गूटी (छोडकर) से पेंडेकल्लु एवं नोस्सम (छोडकर) से नंद्याल (छोडकर) अनुमानित लागतः रु.1,06,89,800.00 बोली सुरक्षाःरु.203500.00

ई-निविदा सं.- 1835 डीइएनः झोनः नार्थ/एमजी/जीटीएल क्षेत्राधिकारः गूटी (छोडकर) से मोलगावल्ली (छोडकर) तथा गुंटकल (छोडकर) से बेल्लारी (छोडकर), कल्लुरू(छोडकर) से गुंटूर (छोडकर) एवं गुंटकल (छोडकर) से गूटी (छोडकर)
अनुमानित लागतः रु. 55,51,976.00 बोली सुरक्षाःरु. 111000.00

ई-निविदा सं.- 1836 डीइएनः नार्थ झोनः एडी क्षेत्राधिकारःमोलगावल्ली (मिलाकर) से रायचूर (छोडकर)
अनुमानित लागतः रु.33,00,000.00 बोली सुरक्षाःरु. 66,000.00

ई-निविदा सं.- 1837 डीइएनः नार्थ झोनः आरसी क्षेत्राधिकारःरायचूर (मिलाकर) से वाडी (छोडकर) अनुमानित लागतः रु.99,00,001.00 बोली सुरक्षाःरु. 1,98,000.00

ई-निविदा सं.- 1838 डीइएनः पश्चिम झोनः एटीपी क्षेत्राधिकारः धर्मावरम(छोडकर) एवं गूटी (जंक्शन-केबिन)
अनुमानित लागतः रु.46,12,300.00 बोली सुरक्षाःरु. 92,300.00

ई-निविदा सं.- 1839 डीइएनः पश्चिम झोनः एमपीएल क्षेत्राधिकारःधर्मावरम (छोडकर) तथा पाकाला (छोडकर) एवं होर्सले हिल्स अनुमानित लागतः रु.64,52,270.00 बोली सुरक्षाःरु.129100.00

ई-निविदा सं.- 1840 डीइएनः पश्चिम झोनः टीपीटीवाय क्षेत्राधिकारःतिरुपति (मिलाकर) तथा काटपाडी (छोडकर) तथा तिरुमला हिल्स अनुमानित लागतः रु.1,60,56,700.00 बोली सुरक्षाःरु.230300.00

बोली दस्तावेज व अन्य विवरण हेतु https://ireps.gov.in पर लागिन करें। किसी भी शुद्धिपत्रों को केवल आनलाइन पर ही जारी किया जायेगा।

विभागीय रेल प्रबंधक/कार्य/गुंटकल

PUB/0452

ई-निविदा सूचना सं.09/डीवाय. सीएसटीइ/सीएन/जीटीएल/2025 दि.24-04-2025

भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, उप मुख्य सिग्नल व दूर संचार अभियंता(निर्माण), दक्षिण मध्य रेलवे (दमरे), गुंटकल द्वारा सक्षम अधिकारी के अनुमोदन सहित निम्न कार्यों हेतु दि. 20-05-2025 के 15.00 बजे तक ई-निविदा(खुली) आमंत्रित हैं।

निविदा सं.- जी-एसजी-सीएन-एलएमडी-14-2025
कार्य विवरणः दमरे के जीटीएल डिवीजन के जीएनटी _जीटीएल सेक्शन के मध्य डबलिंग कार्य सहित एलएमडी पर एसएण्डटी गेयर्स की शिफ्टिंग तथा एलएमडी पर आयबीएस के हटाने रिमूवल के चलते नई क्रासिंग स्टेशन की व्यवस्था करते हुए मलियाला व पेंडेकलल्लु स्टेशनों पर ईआई आल्टरेशन कार्य के साथ लिन्गानेनीदोड्डी पर सेंट्रलाइज्ड इलेक्ट्रानिक इंटरलाकिंग के प्रावधान सहित तत्संबंधित एमएसीएलएस आउटडोर एवं इन्डोर कार्य।
कार्य की अनुमानित लागत रु.6,64,64,881.48 पूर्व धरोहर राशि(पूधरा)रु.4,82,300.00
कार्य पूरा करने की अवधिः 15 (पंद्रह) महिने

बोली या बिड्डिंग प्रणाली -एकल पैकेट प्रणाली
बोली दस्तावेज व अन्य विवरण हेतु कृपया वेबसाइटः https://ireps.gov.in पर लागिन करें
निविदाकर्ता, किसीभी शुद्धिपत्र को (किसी आनलाइन पर जारी) निविदा प्रस्तुति अवधि के प्रारंभिक तिथि तक ही अवलोकन कर सकते हैं।

उप मुख्य सांकेतिक व दूर संचार अभियंता(निर्माण), गुन्टकल

PUB/0453

निविदा सूचना सं.- जी/इ.29/टीआर./निविदा सूचना/03/2025-26

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता/ट्रैक्शन/गुंटकल द्वारा निम्न कार्यों हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

निविदा सं. --जीटीएल-टीआरडी-29-ईटीएन-04-2025-26
कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः जीटीएल-डब्ल्यूडी सेक्शन के अलावा तत्संबंधित डिवीजन के एससीएडीए सिस्टम के लिए साइबर सेक्युरिटी फीचर का प्रावधान। अनुमानित लागतःरु.5,64,27,330.00 पूधराःरु. 4,32,100.00

निविदा बंद करने की तिथि व समयः 19-05-2025 के 15.00 बजे
टिप्पणीः 1. निविदाकर्ता, निविदा दस्तावेज को निःशुल्क रूप में वेबसाइटः www.ireps.gov.in से डाउनलोड कर सकते हैं।
निविदा बोली अथवा टेंडर बिड्डिंग व अन्य विवरण हेतु https://www.ireps.gov.in पर लागिन करें। शुद्धिपत्र यदि कोई हो तो, उसे केवल आनलाइन पर ही जारी किया जायेगा।

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता, ट्रैक्शन, गुन्टकल

PUB/0454

खुली निविदा सूचना सं. बी-ई29-टीआरडी-टीएनडीआर-04-2025-26 दि. 24-04-2025

अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यों हेतु आईआरइपीएस में निविदाएं आमंत्रित हैं।

निविदा सं. बी-ई29-टीआरडी-टीएनडीआर-04-2025-26 कार्य विवरणः बीजेडए डिवीजन -बीजेडए डिवीजन में जंग लगे एन्टि क्रीप वायर का प्रतिस्थापन करना। अनुमानित मूल्यःरु.28,10,350.80 कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने बोली सुरक्षा(पूधरा)रु. 56,200.00 बंद करने की तिथिः16-05-2025 के 15.00 बजे
क्रम सं.1-निविदा प्रपत्र मूल्यःरु. शून्य

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता, टीआरडी, विजयवाडा

A0560 PUB/0455

निविदा नियम/शर्तों की अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्सः https://www.ireps.gov.in अथवा www.scr.indianrailways.gov.in पर जाएं।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने स्क्रैमजेट इंजन के विकास में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल) ने हाइपरसोनिक हथियार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। डीआरडीएल रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की हैदराबाद स्थित महत्वपूर्ण प्रयोगशाला है। डीआरडीएल ने हैदराबाद में नवनिर्मित अत्याधुनिक स्क्रैमजेट कनेक्ट टेस्ट सुविधा केंद्र में 1,000 सेकंड से अधिक समय तक लंबी अवधि के एक्टिव कूल्ड स्क्रैमजेट सबस्केल कॉम्बस्टर का जमीनी परीक्षण 25 अप्रैल, 2025 को पूरा किया किया। यह परीक्षण जनवरी, 2025 में 120 सेकंड के लिए किए गए पूर्व परीक्षण के क्रम में आगे की प्रक्रिया है। इस सफल परीक्षण के साथ ही यह प्रणाली अब शीघ्र ही पूरी तरह से उड़ान योग्य दहन परीक्षण के लिए तैयार हो जाएगी। हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल हथियारों की एक ऐसी श्रेणी है, जो ध्वनि की गति से पांच गुना अधिक (6100 किलोमीटर प्रति घंटा) रफ्तार से लंबी अवधि तक यात्रा कर सकती है और यह एयर ब्रीदिंग इंजन द्वारा संचालित होती है। सुपरसोनिक दहन क्षमता वाली एयर ब्रीदिंग प्रपल्शन इंजन प्रणाली लंबी अवधि की परिभ्रमण स्थितियों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह परीक्षण लंबी अवधि के स्क्रैमजेट कम्बस्टर के डिजाइन के साथ-साथ परीक्षण सुविधा को भी मान्यता प्रदान करता है। यह डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं द्वारा रक्षा उद्योग व शिक्षा जगत के साथ मिलकर किए गए एकीकृत प्रयास का परिणाम है और यह देश के हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल विकास कार्यक्रम हेतु एक सशक्त आधार तैयार करता है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए डीआरडीओ, रक्षा उद्योग जगत के भागीदारों और शिक्षाविदों को बधाई दी है। उन्होंने इस सफलता को राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण हाइपरसोनिक हथियार प्रौद्योगिकियों को साकार करने में सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब बताया। रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग के सचिव तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के अध्यक्ष डॉ. समीर वी. कामत ने महानिदेशक (मिसाइल और सामरिक प्रणाली) यू राजा बाबू, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के निदेशक डॉ.जीए श्रीनिवास मूर्ति व उनकी पूरी टीम को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए 1,000 सेकंड से अधिक समय तक सुपरसोनिक दहन का सफल परीक्षण करने के लिए बधाई दी।

जेजे भाईयों ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड और पुरस्कारों के साथ संगीत प्रतिभा के रूप में बिखेरी चमक

9 साल के जुड़वां भाई संगीत की दुनिया में मचा रहे धूम

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के महज नौ साल के जुड़वां भाई संगीत की दुनिया में धूम मचा रहे हैं। जेजे ब्रदर्स- जथिन गुडीपुडी और जसविन गुडीपुडी, पहले ही कई शानदार उपलब्धियों के साथ असाधारण युवा संगीतकार के रूप में अपनी योग्यता साबित कर चुके हैं। शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित पांचवीं कक्षा के छात्र अपनी निपुणता और संगीत की योग्यता से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं।

अपने करियर में पहले से ही कई संगीत कार्यक्रम जोड़ चुके ये बाल कलाकार वायलिन, मैंडोलिन, कीबोर्ड, कैजोन, काजू और गिटार बजाने में माहिर हैं। आंखों पर पट्टी बांधकर किए गए इस प्रयास में, जिसने उन्हें खूब प्रशंसा दिलाई, जथिन ने गिटार पर पांच भक्ति गीतों का मिश्रण कुशलता से बजाया, जबकि जसविन ने कीबोर्ड पर छह भक्ति गीत बजाकर अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

जेजे ब्रदर्स, जिन्होंने गुरु अशोक जी गुरजले से वायलिन सीखकर 3 साल की छोटी सी उम्र में अपनी संगीत यात्रा शुरू की थी, पहले ही इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्र्स, इंडियाज वर्ल्ड रिकॉर्ड और इंडियन बुक ऑफ रिकॉर्ड्र्स में अपना नाम दर्ज करा चुके हैं और ज्ञान उदय फाउंडेशन से इंडियन आइकॉन 2023 अवार्ड और सोशलीपॉइंट फाउंडेशन से प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड से भी सम्मानित हो चुके हैं। हाल ही में उन्होंने वायलिन पर एक वाद्य वीडियो एल्बम '10 शक्तिशाली देवी भजन' भी जारी किया, जिसे मैसूर के दत्त पीठम में गणपति सच्चिदानंद स्वामीजी ने लॉन्च किया।

14वां सेनजी महाराज जन्मोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। मारु सेन समाज हैदराबाद-सिकंदराबाद समाज बन्धुओं के सानिध्य में श्री सेनजी महाराज के 725वें जन्मोत्सव पर शुक्रवार 25 अप्रैल प्रातः 10.15 बजे भजन व जन्मोत्सव पूजा-अर्चनाकर जगदीश मंदिर, लोवर टैंकबंड में आयोजित किया गया।

जारी प्रेस विज्ञप्ति मे अध्यक्ष हनुमान तंवर ने बताया कि हर वर्ष की भांति श्री सेनजी महाराज की 725वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर भजन एवं जन्मोत्सव कार्यक्रम भव्य रूप से आयोजित किया गया। प्रातः वेला में पुजा-अर्चनाकर सेनजी महाराज की तस्वीर पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन, ज्योत जलाकर भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें विक्रम प्रजापत सांचौर ने सेनजी महाराज के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित किये। जिसका समाज बन्धुओं ने नाचते-गाते हुए लाभ लिया।

स्वागत समारोह कार्यक्रम में पधारे सम्मानित अतिथियों, बोली लेने वाले भामाशाह, पेपेर विज्ञापन के लाभार्थी नरेन्द्र चौहाण पित्रकृपा ज्वैलर्स पोट मार्केट व भोजन-प्रसादी के लाभार्थी मिश्रीलाल-दुर्गादेवी, सुरेन्द्र-अनिता भाटी परिवार का राजस्थानी परम्परा से विशेष सम्मान किया गया। अध्यक्ष हनुमान तंवर ने पधारे समाज बन्धुओं को सेनजी महाराज के जन्मोत्ससव की शुभकामनाएं देते हुए भरोसा

दिलाया कि समाज बन्धुओं के सहयोग से अतिशीघ्र तेलंगाना की पावन धरा पर सेनजी महाराज का मंदिर बनाने के लिए जमीन लेने व समाज के हर सम्भव विकासशील कार्यों को पूरा करने की कोशिश करेंगे।

पधारे अतिथियों व समाज बन्धुओं के लिए भोजन-प्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की गयी। कार्यक्रम के सफल आयोजन में मारु सेन समाज के संरक्षक गोवर्धन चौहाण, राजुराम, अध्यक्ष हनुमान तंवर, उपाध्यक्ष नरेन्द्र चौहाण, कोषाध्यक्ष अरविन्द देवड़ा, महामंत्री आनन्द परिहार, संयोजक जगदीश पुलडालिया, मीठालाल सुरग, योगेश जांखड़ा, विजय जांखड़ा, गिरीश परिहार, रतनलाल सैन, सरवण सोनीगरा, प्रकाश चौहान, चन्दन पंवार, संजय वर्मा एवं सभी समाज बन्धु सपरिवार उपस्थित रहे। मंच का संचालन गिरीश परिहार एवं महामंत्री आनन्द परिहार के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन्न हुआ।

पहलगाम में पर्यटकों के नृशंस हत्या के विरोध में विशाल कैंडल मार्च निकाला गया

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। शनिवार को निजाम कालेज ग्रांउड बशीरबाग से डाक्टर भीमराव अम्बेडकर चौक टैंक बंड तक विशाल कैंडल मार्च निकाला गया। यह मार्च पहलगाम में हिन्दू पर्यटकों की आतंकियों द्वारा नृशंस हत्या के विरोध में आयोजित किया गया था। उक्त जानकारी देते हुए संयोजक अविनाश देवडा ने बताया कि कैंडल मार्च में बडी संख्या में लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अविनाश देवडा ने कहा कि आज हमारा खून खौल रहा है। हमारे मासूम भाई बहनों का खून बहाया गया। यह सिर्फ हत्या नहीं- यह कायरता का चरम रूप है! यह मानवता को रौंदने का दुस्साहस है!

उन्होंने पाकिस्तानी आतंकियों को ललकारते हुए कहा कि तुम गोलियों से हमारी आत्मा को नहीं कुचल सकोगे? तुमने समझा था कि मासूमों का रक्त बहाकर हम डर जाएंगे? नहीं! तुमने अपनी कब्र अपने हाथों से खोद ली है। हम तुम्हारी इस कायरता का ऐसा उत्तर देंगे कि तुम्हारी आने वाली नस्लें भी कांपेंगी। तुम्हें न ज़मीन मिलेगी न आसमान, न छुपने की जगह मिलेगी, न साँस लेने की मोहलत।

पहलगाम की हवाओं में अब प्रतिशोध गूंजेगा। हम हर शहीद की चीख को हथियार बनाएंगे, हर आँसू को अग्निबाण बनाएंगे। तुम्हारे लिए अब कोई दया नहीं, कोई माफी नहीं! तुम्हें जड़ से उखाड़ फेंकना है, तुम्हारे पापी विचार को राख बनाना है। यह सिर्फ हमारा संकल्प नहीं यह हमारी चेतना है। हम इस युद्ध को अंत तक लड़ेंगे और विजयी होंगे!

अवसर पर सोहनलाल दायमा, सुभाष अग्रवाल, अरुण देवड़ा, अनूप अग्रवाल रमेश व्याक, बोईनी वेंकटेश, जिग्नेश दोषी मोहन सिंह राजपुरोहित अमित लड्डा (गग्गू भाई) राजेश करवा आदि ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। मंच संचालन कन्हैयालाल राठी ने किया तो शांति मंत्र पंडित गजानन कृष्ण महाराज ने कराया।

संयोजक रवि अग्रवाल का संबोधनः ये सिर्फ एक आतंकी गटना नहीं बल्कि ये एक धर्म विरोधी सोंची समजी जिहादी हमला था.. और हम अपने प्रधानमंत्री और केंद्रीय सरकार से अनुरोध करते है के इस बर्बरता का मुंह तोड़ जवाब दे और आतंक का हमेशा हमेशा के लिए अंतः करे। में अपने पूरे सनातनी भाइयों से अनुरोध करना चाहूंगा हमें एक जुट होकर ही अपने और अपने धर्म की रक्षा करना है। इसका एक ही मूल मंत्र है।

तीन विषयों में फेल होने पर इंटर की छात्रा ने की आत्महत्या

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। इंटरमीडिएट की परीक्षा पास न कर पाने से परेशान एक किशोर ने गुरुवार को घाटकेसर के अन्नोजीगुडा स्थित कॉलेज परिसर में जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या का प्रयास किया, जिसकी शुक्रवार को अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई।

मंगलवार को घोषित परिणामों में, एक निजी जूनियर कॉलेज के इंटरमीडिएट द्वितीय वर्ष के छात्र ए. जशवंत (17) तीन विषयों में फेल हो गए थे। मिली जानकारी के अनुसार, इस घटना से क्षुब्ध होकर किशोर ने कॉलेज परिसर में ही जहर खा लिया। उसे तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घाटकेसर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

3 टीमों की आईपीएल के प्लेऑफ में एंट्री

आखिरी पोजिशन के लिए 3 में लड़ाई, ये है पूरा समीकरण

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। आईपीएल 2025 में अब तक 42 मैच खेले जा चुके हैं. अब लीग स्टेज में सिर्फ 28 मैच बचे हुए हैं. टूर्नामेंट की सभी टीमों ने कम से कम आठ मुकाबले खेल लिए हैं. वहीं कुछ के 9 मैच भी हो चुके हैं. इसके साथ ही प्लेऑफ की तस्वीर भी धीरे-धीरे साफ होने लगी है. पॉइंट्स टेबल में मौजूदा हालात देखकर नॉकआउट राउंड में जाने वाली 4 में से लगभग 3 टीमों की एंट्री पक्की लग रही है. फिलहाल टूर्नामेंट में गुजरात टाइटंस पहले, दिल्ली कैपिटल्स दूसरे और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु तीसरे नंबर पर है. इन तीनों का ही प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई करना तय माना जा रहा हैं. वहीं आखिरी पोजिशन के लिए मुंबई इंडियंस, पंजाब किंग्स और लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच जबरदस्त लड़ाई है.

प्लेऑफ के लिए ये तीन टीमें पक्की?

ऐसा आमतौर पर देखा गया है कि 16 अंक पाने वाली टीमों को आईपीएल के प्लेऑफ में एंट्री मिल जाती है. गुजरात टाइटंस ने 8 में से 6 मैच जीतकर 12 अंक हासिल कर लिए हैं. उसका नेट रन रेट (+1.104) भी शानदार है. अब उसके पास 6 मैच बचे हुए हैं, जिसमें उसे आरआर, एसआरएच, एमआई, डिसी, एलएसजी और सीएसके का सामना करना है. अगर वो एक-दो मैच हार भी जाती है, तो भी उसका ज्यादा नुकसान नहीं होगा. जीटी के जबरदस्त फॉर्म को देखते हुए कहा जा सकता है कि वो आसानी से इसमें 2 मैच जीतकर 4 अंक हासिल करके प्लेऑफ में जगह पक्की कर सकती है.

दिल्ली कैपिटल्स की स्थिति भी गुजरात टाइटंस की तरह ही है. वो भी 8 में से 6 मैच जीतकर 12 अंक हासिल कर चुकी है. उसका नेट रन रेट (+0.657) भी अच्छा है और उसके भी 6 मैच बचे हुए हैं. दिल्ली को अब आरसीबी, केकेआर, एसआरएच, केकेआर, एसआरएच, पीबीकेएस, जीटी और एमआई से भिड़ना है. टूर्नामेंट के पहले हाफ में उसने शानदार प्रदर्शन का फल, उसे अब मिलेगा. वो इनमें 2 मैच भी जीत जाए तो उसका काम हो जाएगा और वो प्लेऑफ में क्वालीफाई कर जाएगी. उसके फॉर्म को देखते हुए ये मुश्किल काम नहीं लग रहा है.

इन दो टीमों के अलावा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने इस सीजन शानदार प्रदर्शन किया है. आरसीबी ने टूर्नामेंट में 9 में से 6 में जीत हासिल की है. इसमें से उसने घर से बाहर अपने सभी मैच जीते हैं. वहीं होमग्राउंड पर एक मैच जीता है और 12 अंक के साथ तीसरे स्थान पर है. अब बचे हुए 5 मैचों में से टीम को 4 मैच घर पर खेलना है. मौजूदा सीजन में होमग्राउंड पर आरसीबी का प्रदर्शन थोड़ा चिंताजनक रहा है. लेकिन उसे भी 16 अंक तक पहुंचने और अपनी सीट पक्की करने के लिए सिर्फ 2 मैच जीतने हैं. आरसीबी के खिलाड़ी जिस फॉर्म में हैं, प्लेऑफ की एंट्री में परेशानी नहीं होनी चाहिए.

आखिरी पोजिशन के लिए घमासान

अगर ये 3 टीमें अपने शानदार फॉर्म और प्रदर्शन के दम पर प्लेऑफ में चली जाती हैं तो सिर्फ 1 सीट खाली रह जाएगी. इसके लिए मुंबई इंडियंस, पंजाब किंग्स और लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच जबरदस्त घमासान देखने को मिल सकता है. मुंबई की टीम ने लगातार 4 मैच जीतकर प्लेऑफ के लिए दावा ठोक दिया है. फिलहाल वो 9 मैचों में 5 जीत और 10 अंक के साथ चौथे स्थान पर है. वहीं श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली पंजाब किंग्स 8 में से 5 मैच जीते हैं और 10 अंक लेकर छठे नंबर पर बनी हुई है. दूसरी ओर ऋषभ पंत की टीम ने भी 9 में से 5 मैच जीते हैं और 10 अंक के साथ सातवें स्थान पर है. हालांकि, मुंबई (+0.673) का नेट रन रेट पंजाब (+0.177) और लखनऊ (-0.054) से बेहतर है. वहीं मैचों के लिहाज से पबीकेएस बेहतर स्थिति में है, क्योंकि उसके पास अभी 6 मैच बचे हैं, जबकि एमआई और एलएसजी के 5-5 मैच बचे हैं. अब प्लेऑफ में अपनी सीट पक्की करने के लिए इन तीनों को कम से कम 3 मैच जीतने होंगे. हालांकि, 2 मैच जीतने पर भी काम बन सकता है लेकिन तब मामला नेट रन रेट पर फंस सकता है.

ये टीमें भी रेस में

हमने अभी तक 6 टीमों के बारे में बात किया. अब बचती हैं कोलकाता नाइट राइडर्स, चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और राजस्थान रॉयल्स. केकेआर के पास 8 मैचों में 6 अंक हैं, वहीं एसआरएच, और एसएसके के 8 मैचों में 4-4 अंक हैं, जबकि आरआर की टीम 9 मैच में 4 अंक ही हासिल कर सकी है. हालांकि, आधिकारिक तौर पर ये चारों ही टीमें बाहर नहीं हुई हैं लेकिन खराब प्रदर्शन को देखते हुए उनका प्लेऑफ में जाना लगभग नामुमकिन लग रहा है. केकेआर को मजबूत स्थिति में रहने के लिए कम से कम 5 मैच जीतने की जरूरत है. वहीं बाकी तीन टीमों के हर मैच जीतना होगा. इसलिए इनका अब अगले राउंड में जाना मुश्किल लग रहा है.

एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए 59 सदस्यीय टीम घोषित

नीरज नहीं लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। भारत ने दक्षिण कोरिया में होने लासी एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए 59 सदस्यीय भारतीय टीम का एलान कर दिया है। इस टूर्नामेंट में कोच्चि में संपन्न हुए फेडरेशन कप में शानदार प्रदर्शन करने वाले करीब सभी एथलीटों को जगह दी गई है। भारत के स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा इस चैंपियनशिप में हिस्सा नहीं लेंगे। नीरज ने भुवनेश्वर में 2017 टूर्नामेंट के बाद से इस प्रतिष्ठित महाद्वीपीय प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं लिया है जहां उन्होंने स्वर्ण पदक जीता था। तब से इस दिग्गज भारतीय की नजरें डायमंड लीग प्रतियोगिताओं, विश्व चैंपियनशिप और ओलंपिक पर रही हैं।

तेजिंदरपाल को नहीं मिली जगह

दोहरे ओलंपिक पदक विजेता नीरज का इस प्रतियोगिता में शामिल नहीं होना उम्मीद के मुताबिक ही है क्योंकि इस सत्र में उनका ध्यान डायमंड लीग प्रतियोगिताओं और सितंबर में होने वाली विश्व चैंपियनशिप पर होगा। इसके अलावा एनसी क्लासिक पर भी उनकी नजरें रहेंगी जिसकी मेजबानी वह 24 मई को बंगलूरु में कर रहे हैं। महाद्वीपीय चैंपियनशिप के पिछले सत्र में स्वर्ण पदक जीतने वाले राष्ट्रीय रिकॉर्डधारक गोला फेंक खिलाड़ी तेजिंदरपाल सिंह तूर को फेडरेशन कप में निराशाजनक दूसरे स्थान पर रहने के बाद टीम में जगह नहीं मिली है।

साबले-पारुल टीम में शामिल

पोल वॉल्ट खिलाड़ी देव कुमार मीणा अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड में सुधार करने के बावजूद टीम में जगह नहीं बना पाए क्योंकि उनका प्रयास भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) द्वारा निर्धारित एशियाई चैंपियनशिप पात्रता स्तर से कम था। अविनाश साबले (पुरुषों की 3000 मीटर स्टीपलचेज), पारुल चौधरी (महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज) और गुलवीर सिंह (5000 मीटर और 10000 मीटर) जैसे शीर्ष खिलाड़ियों को टीम में शामिल किया गया है। इन्होंने फेडरेशन कप में हिस्सा नहीं लिया था क्योंकि वे एएफआई की अनुमति लेने के बाद विदेश में प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।

गुमी में 27-31 मई तक होने वाली एशियाई चैंपियनशिप के लिए टीम में धावक अनिमेष कुजूर भी शामिल हैं जिन्होंने 200 मीटर में नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। त्रिकूद खिलाड़ी प्रवीण चित्रावेल को भी टीम में जगह मिली है जिन्होंने फेडरेशन कप के दौरान अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की थी। महिलाओं की भाला फेंक स्पर्धा में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक अन्नू रानी ने मार्च में मुंबई में इंडियन ओपन थ्रो प्रतियोगिता के दौरान 58.82 मीटर के प्रयास के आधार पर टीम में जगह बनाई।

'उम्मीद है कि योगासन को ओलंपिक खेल के रूप में देखेंगे'

बोले खेलमंत्री मनसुख मांडविया

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। योग को विश्व के लिये भारत का उपहार बताते हुए खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि दुनिया में जिस तरह से योग का प्रचार हो रहा है, उम्मीद है कि जल्दी ही योगासन को ओलंपिक खेल के रूप में देखेंगे। दूसरी एशियाई योगासन चैम्पियनशिप के उद्घाटन के मौके पर मांडविया ने कहा, 'योग विश्व के लिये भारत का बहुत बड़ा उपहार है। हम भाग्यशाली है कि हमें विरासत में योग मिला और योग से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' निकला जो हमारा संस्कार है।'

उन्होंने विश्व योगासन के अध्यक्ष स्वामी रामदेव से दुनिया के विभिन्न देशों में योग महासंघ के गठन का अनुरोध करते हुए उन्होंने कहा कि इससे योगासन को ओलंपिक खेल का दर्जा मिलने का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने कहा, 'दुनिया में आज जिस तरह से योग प्रचारित हो रहा है । मैं स्वामी रामदेव से अनुरोध करूंगा कि अगर दुनिया भर में अपने अपने देश में योग महासंघ का गठन हो जायेगा तो हम जल्दी ही योगासन को ओलंपिक खेल के रूप में देखेंगे।'

मांडविया ने कहा, 'ओलंपिक में योगासन में पदक चाहे कोई भी जीते लेकिन श्रेय भारत का रहेगा।' भारत सरकार ने दिसंबर 2020 में योगासन को प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में मान्यता दी थी । उत्तराखंड में इस साल की शुरूआत में हुए 38वें राष्ट्रीय खेलों में इसे पदक खेल के रूप में शामिल किया गया जबकि पहले यह नुमाइशी खेल ही था। एशियाई योगासन चैम्पियनशिप को इस दिशा में मजबूत कदम माना जा रहा है। योगासन भारत द्वारा खेल मंत्रालय और भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के सहयोग 25 से 27 अप्रैल तक इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में दूसरी एशियाई योगासन खेल चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है।

इस प्रतियोगिता में 17 एशियाई देशों के कुल 170 खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। यह चैंपियनशिप चार आयु वर्ग 10 से 18, 18 से 28, 28 से 35 और 35 से 45 वर्ष में आयोजित की जा रही है। चैंपियनशिप का पहला सत्र 2022 में थाईलैंड के बैंकॉक में आयोजित किया गया था। खेलमंत्री मांडविया ने कहा, 'वर्तमान समय में हम जिस विज्ञान, स्वास्थ्य का इस्तेमाल कर रहे हैं, अगर उसकी पृष्ठभूमि में देखें तो हमारे ऋषि मुनियों का ज्ञान है । हम चरक और सुश्रुत के देश से हैं और योग हमारा संस्कार, जीवनशैली और संपूर्ण स्वास्थ्य है।'

उन्होंने कहा, 'हमारे लिए स्वास्थ्य सेवा है, उद्योग नहीं। मुझे बताया गया कि योग दुनिया में कई मिलियन डॉलर का उद्योग हो गया है लेकिन हमने कभी स्वास्थ्य को उद्योग के रूप में नहीं देखा। यही हमारा संस्कार है, स्वभाव है और जीवनशैली है। इसी को अपनाते हुए हमें विकसित भारत, समृद्ध भारत और स्वस्थ भारत बनाने के लिये आगे बढना है।'

खेल राज्य मंत्री रक्षा खड़से ने कहा कि योग को अब एशियाई स्तर से आगे ले जाने का समय है। उन्होंने कहा, 'योग हमारे देश की परंपरा रही है और यहां एशिया भर से कई देश और खिलाड़ी चैम्पियनशिप में भाग ले रहे हैं। अब इसे एशियाई स्तर तक सीमित नहीं रखकर ओलंपिक में ले जाने की कोशिश करेंगे।'

दिग्वेश राठी ने खोला 'नोटबुक सेलिब्रेशन' का राज

जिसकी वजह से बीसीसीआई से 2 बार मिल चुकी सजा

लखनऊ, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। लखनऊ सुपर जायंट्स के मिस्ट्री स्पिनर दिग्वेश राठी इस सीजन कमाल कर रहे हैं, जहां उनके 'नोटबुक सेलिब्रेशन' ने धूम मचा दी है। हालांकि उन्हें इसकी वजह से बीसीसीआई से दो बार सजा भी मिल चुकी है। लेकिन इसके बाद भी उन्हें अपनी टीम से फुल सपोर्ट मिला है, जिसकी वजह उनकी शानदार गेंदबाजी है। उन्होंने अब अपने इस सेलिब्रेशन पर खुलकर बात की है।

एक इंटरव्यू में दिग्वेश ने कहा, 'मैं विकेट लेने के बाद नोटबुक सेलिब्रेशन के चलते चर्चा में आया था। दरअसल, प्रियांश और मैं बहुत अच्छे दोस्त हैं। मैच से पहले हमारे बीच समझौता हुआ था, जिसके तहत अगर मैं उसे जल्दी आउट कर सका, तो मैं वह जश्न मनाऊंगा और अगर प्रियांश बड़े शॉट खेलकर रन बना पाया तो वह नोटबुक सेलिब्रेशन करेगा।'

किसी का अपमान नहीं करना चाहता- दिग्वेश

उन्होंने आगे कहा कि वह यह सेलिब्रेशन करके किसी का अपमान नहीं करना चाहते थे। बीसीसीआई द्वारा दो बार दंडित किए जाने पर राठी ने कहा, 'हम बीसीसीआई के नियमों के खिलाफ नहीं जा सकते। इसलिए बाद में मैंने मैदान पर ही लिखना शुरू कर दिया।' इस इंटरव्यू में उनसे पूछा गया कि बल्लेबाज को आउट करने के बाद वह 'नोटबुक' में क्या लिखते हैं। इस पर उन्होंने कहा कि वह इसे गुप्त रखना चाहेंगे।

मैं कुछ भी नया नहीं करना चाहता- राठी

25 साल के इस स्पिनर ने कहा, 'मेरा एकमात्र लक्ष्य टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करना है। मैं कप्तान ऋषभ पंत और मेंटॉर जहीर खान सर द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को पूरा करने की कोशिश करता हूं। नतीजे चाहे जो भी हो, मैं कुछ भी नया करने की कोशिश नहीं करता। मैं बस अपना काम ठीक से करना चाहता हूं। जब मैं कैंप में शामिल हुआ तो पंत भाई और जहीर सर ने मुझसे कहा कि मुझे पहले मैच से ही खिलाया जाएगा। उन्होंने मुझे अपने तरीके से गेंदबाजी करने की सलाह दी, जिसका फायदा हुआ।'

इंडिया को पाकिस्तान से आईसीसी इवेंट में नहीं खेलना चाहिए : सौरव गांगुली

मुंबई, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष सौरव गांगुली ने कहा कि भारत को पाकिस्तान के खिलाफ आईसीसी और एशियन चैंपियनशिप में भी नहीं खेलना चाहिए। उन्होंने पहलगाम में हुए आतंकी हमले में पाकिस्तान का नाम सामने के बाद ये बात कही। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी।

गांगुली ने एंजेसी से बात करते हुए कहा कि टीम इंडिया को सख्त कदम उठाना चाहिए और आईसीसी इवेंट में भी नहीं खेलना चाहिए।

दरअसल 2013 के बाद से राजनीतिक संबंध खराब होने से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सीरीज का आयोजन बंद हो गया। भारत केवल पाकिस्तान से आईसीसी इवेंट या एशियन चैंपियनशिप में ही खेलता है।

2012-13 में आखिरी बार हुआ था बाइलैटरल सीरीज

पाकिस्तान ने 2012-13 में आखिरी बार बाइलैटरल सीरीज के लिए भारत का दौरा किया था। उस दौरे पर 3 वनडे और 2 टी-20 मैचों की बाइलैटरल सीरीज खेली गई थी। वनडे सीरीज को पाकिस्तान ने 2-1 से जीता था, जबकि टी-20 सीरीज 1-1 की बराबरी पर रही थी।

वहीं टीम इंडिया ने 2008 में आखिरी बार पाकिस्तान का दौरा किया था। 3 टेस्ट मैचों की उस सीरीज को भारतीय टीम ने 1-0 से जीता था। इस सीरीज के 2 मैच ड्रॉ रहे थे।

चैंपियंस ट्रॉफी में भारत नहीं गया था पाकिस्तान

इसी साल मार्च में संपन्न चैंपियंस ट्रॉफी में भारत ने पाकिस्तान का दौरान नहीं किया था। भारत ने फाइनल सहित अपने सभी मैच दुबई में खेला था। भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में न्यूजीलैंड को हरा कर 12 साल बाद खिताब अपने नाम किया था।

पहलगाम हमले पर पाकिस्तानी पूर्व क्रिकेटर शोएब रहमान ने उगला जहर

इस्लामाबाद, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों ने अपनी जान गंवा दी. पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े 'द रेसिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) ने इसकी जिम्मेदारी ली. इस हमले के कारण भारत के लोगों में रोष है, क्रिकेट जगत से कई मौजूदा और पूर्व खिलाड़ी इस दुखद घटना पर शोक जता चुके हैं. पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर दानिश कनेरिया ने भी इस आतंकी हमले के बाद मृत लोगों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की. लेकिन पाकिस्तान के एक पूर्व खिलाड़ी ने पहलगाम हमले पर जहर भी उगला है. पाकिस्तान के पूर्व खिलाड़ी शोएब रहमान ने पहलगाम हमले पर बेतुका बयान दिया. शोएब रहमान पाकिस्तान में प्रोफेशनल क्रिकेट खेल चुके हैं और अब बतौर क्रिकेट एक्सपर्ट टीवी चैनलों पर नजर आते हैं. हाल ही में एक शो में उन्होंने पहलगाम हमले पर बात करते हुए पाकिस्तान का बचाव करने की कोशिश की. शोएब रहमान का कहना है कि भारत बिना किसी सबूत के सारा इल्जाम पाकिस्तान पर लगा रहा है और ये भारत की ही गलती है. शोएब रहमान ने कहा, 'देखिए बात ये है कि हमला कश्मीर के पहलगाम में हुआ है, वहां पर भारत की 9 लाख फोज है, ये हमला 9 लाख फोजियों की मौजूदगी में हुआ है. सबसे पहले तो इंडियन फोर्स को जवाब देना चाहिए. ये सिक्योरिटी लेप्स है, उसमें आपने पाकिस्तान पर कैसे इल्जाम लगा दिया.

एएफआई ने पुरुषों की 400 मीटर रिले टीम में किया बदलाव

अगले महीने होना है विश्व रिले टूर

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। भारत ने चीन के ग्वांगझू में 10 से 11 मई तक होने वाली विश्व रिले के लिए पुरुषों की चार गुणा 400 मीटर टीम में बदलाव किया है जिसमें पेरिस ओलंपिक में प्रभावित करने में विफल रही टीम से केवल एक धावक ही जगह बना पाया है। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) द्वारा भेजी गई विश्व रिले टीम में संतोष कुमार तमिलारासन को छोड़कर अन्य सदस्य नए हैं। नए सदस्य धर्मवीर चौधरी, रिंस जोसेफ, तुषार कांति, जय कुमार, मोहित कुमार, टी एस मनु और टी के विशाल हैं।

दक्षिण कोरिया के गुमी में 27-31 मई तक होने वाली एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए इसी आठ सदस्यीय पुरुष चार गुणा 400 मीटर रिले टीम की घोषणा की गई थी। विशाल, जय कुमार, मनु, धरमवीर और जोसेफ कोच्चि में हाल ही में संपन्न फेडरेशन कप में पुरुषों की 400 मीटर फाइनल में इसी क्रम में पहले से पांचवें स्थान पर रहे थे। तुषार, मोहित और तमिलारासन सेमीफाइनल में दौड़े लेकिन फाइनल में पहुंचने में असफल रहे।

पेरिस ओलंपिक में मुहम्मद अनस, मुहम्मद अजमल, अमोज जैकब, राजेश रमेश, मिजो चाको कुरियन और तमिलारासन की भारतीय चार गुणा 400 मीटर रिले टीम हीट चरण से आगे नहीं बढ़ पाई। हालांकि, तमिलारासन उस चौकड़ी का हिस्सा नहीं थे जिसने प्रतिस्पर्धा पेश की थी। भारत ने मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले टीम भी उतारी है जिसमें अमोज जैकब को जगह मिली है। टीम के अन्य सदस्य धर्मवीर चौधरी, टी के विशाल (दोनों पुरुष) और स्नेहा कोलेरी, जिस्ना मैथ्यू, रूपल और सुभा वेंकटेशन हैं।

महिलाओं की चार गुणा 100 मीटर और चार गुणा 400 मीटर रिले, पुरुषों की चार गुणा 100 मीटर और चार गुणा 400 मीटर रिले, मिश्रित चार गुणा 100 मीटर और चार गुणा 400 मीटर रिले विश्व रिले का हिस्सा होंगी। ग्वांगझू में मिश्रित चार गुणा 100 मीटर रिले पहली बार वैश्विक मंच पर आयोजित होगी। प्रत्येक राष्ट्रीय महासंघ की एक टीम प्रत्येक स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा कर सकती है और प्रत्येक स्पर्धा के लिए अधिकतम आठ एथलीट प्रवेश कर सकते हैं।

हॉकी में भी पाकिस्तान की किरकिरी: 8.83 लाख नहीं चुकाने पर

मलयेशिया से नहीं मिला अजलान शाह कप का न्योता

कुआलालंपुर, 26 अप्रैल (एजेंसियां)। क्रिकेट के बाद अब हॉकी में भी पाकिस्तान की किरकिरी हो रही है। पैसे का भुगतान नहीं करने की वजह से उन्हें एक बड़े टूर्नामेंट के लिए आमंत्रित तक नहीं किया गया है। यह मामला मलयेशिया से जुड़ा हुआ है। दरअसल, मलयेशिया हॉकी महासंघ ने जोहर हॉकी संघ को 10,349 अमेरिकी डॉलर (8.83 लाख रुपये) के बकाए का भुगतान नहीं करने के कारण पाकिस्तान को वार्षिक अजलान शाह कप के लिए आमंत्रित नहीं किया है। पाकिस्तान हॉकी महासंघ (पीएचएफ) के एक सूत्र ने कहा कि जोहर संघ ने पीएचएफ को आधिकारिक पत्र भेजा है। इसमें अक्तूबर 2023 में टीम के साथ मलयेशिया गए पीएचएफ अधिकारियों और उनके परिवारों के आवास, यात्रा और अन्य खर्चों के लिए भुगतान की जाने वाली राशि के बारे में सख्त लहजे में बताया गया है। पाकिस्तान की टीम जोहर हॉकी कप खेलने के लिए मलयेशिया गई थी और पीएचएफ के कुछ अधिकारी और उनके परिवार भी टीम के साथ गए थे।

एक सूत्र ने बताया, 'टीम के ठहरने और अन्य खर्चों का वहन आयोजकों को उठाना था, लेकिन पीएचएफ के अधिकारियों को बता दिया गया था कि उन्हें अपने सभी खर्च खुद ही उठाने होंगे। ये अधिकारी भी उसी आलीशान होटल में रुके थे जहां टीमें ठहरी हुई थीं। इसमें पीएचएफ के पूर्व अध्यक्ष भी शामिल थे।'

जोहर संघ ने पहले ही इस मुद्दे को मलयेशिया महासंघ के समक्ष उठाया है और धमकी दी है कि अगर बकाया राशि का भुगतान नहीं किया गया तो वे इस मामले को एफआईएच (अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ) के समक्ष ले जाएंगे। सूत्र ने कहा, 'पीएचएफ के मौजूदा अध्यक्ष और उनकी टीम इस मामले को लेकर परेशानी में है, क्योंकि महासंघ पहले से ही आर्थिक तंगी से जूझ रहा है और उन्हें पीएचएफ के पूर्व अधिकारियों द्वारा किए गए इन खर्चों के बारे में जानकारी नहीं थी।' सुल्तान अजलान शाह कप का आयोजन 22 से 29 नवंबर तक मलयेशिया के इपोह में होना है।

समृद्ध इतिहास और अनूठी संस्कृति और परंपराओं से संपन्न तेलंगाना : रेवंत रेड्डी

सरकार ने 25.50 लाख किसानों का 20,617 करोड़ रुपये का कृषि ऋण माफ किया * सीएम ने भारत शिखर सम्मेलन में कहा

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने शनिवार को भारत शिखर सम्मेलन पूर्ण अधिवेशन में भाग लिया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मुझे प्रतिष्ठित भारत शिखर सम्मेलन कार्यक्रम में बोलने का अवसर मिला। तेलंगाना राज्य एक समृद्ध इतिहास और अनूठी संस्कृति और परंपराओं से संपन्न है। सीएम तेलंगाना ने कहा कि संयुक्त आंध्र प्रदेश का हिस्सा रहे तेलंगाना के लोगों ने कई दशकों तक अलग राज्य के लिए संघर्ष किया।

छात्रों, ट्रेड यूनियनों, किसानों और महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और तेलंगाना आंदोलन का नेतृत्व किया। उनके संघर्ष के परिणाम सामने आए और तेलंगाना के रूप में एक अलग राज्य का गठन हुआ। मुख्यमंत्री ने कहा कि दुर्भाग्य से, अलग तेलंगाना राज्य में पिछले 10 वर्षों से लोगों की आकांक्षाएं पूरी नहीं हुई हैं। लोगों ने कांग्रेस को जनादेश दिया और जनता की सरकार छात्रों, युवाओं, किसानों, महिलाओं और विशेष रूप से उत्पीड़ित जातियों सहित समाज के सभी वर्गों की आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास कर रही है। राज्य सरकार ने भारत के इतिहास में सबसे बड़ी कल्याणकारी योजनाएं शुरू कीं। सरकार ने 15 अगस्त 2024 को 25.50 लाख किसानों का 20,617 करोड़ रुपये का कृषि ऋण माफ कर दिया।

स्वतंत्रता दिवस पर तेलंगाना के किसान बढ़ते कर्ज के बोझ से मुक्त हो गए। राज्य में किसानों को 24 घंटे मुफ्त बिजली उपलब्ध कराई जा रही है। रैतु भरोसा के तहत प्रति एकड़ 12,000 रुपये इनपुट सब्सिडी दी जा रही है। भूमिहीन खेत मजदूरों को प्रति वर्ष 12,000 रुपये मिल रहे हैं। सरकार कृषि क्षेत्र में भूमिहीन और भूमि-स्वामी किसानों को हर साल 20,000 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य के अलावा, सरकार बढ़िया किस्म के धान की खेती करने वाले किसानों को प्रति क्विंटल 500 रुपये का बोनस भी दे रही है। किसानों को रैतु बीमा और फसल बीमा का लाभ भी दिया जा रहा है। बेरोजगार युवाओं में कौशल विकास के लिए यंग इंडिया स्किल यूनिवर्सिटी की शुरूआत की और जन सरकार के पहले साल में 60,000 सरकारी नौकरियों की भर्ती भी की। 5 लाख युवाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए राजीव युवा विकास योजना शुरू की। कांग्रेस ने देश में जन-केंद्रित नीतियां बनाकर इतिहास रच दिया। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने सिंचाई और शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया। इंदिरा गांधी ने "रोटी, कपड़ा और मकान" के नारे के साथ गरीबी उन्मूलन का प्रयास किया। कांग्रेस के तीन प्रधानमंत्रियों राजीव गांधी, पीवी नरसिम्हा राव और डॉ. मनमोहन सिंह ने आधुनिकीकरण, विकास, दूरसंचार और सॉफ्टवेयर जैसी वैश्विक तकनीकी क्रांतियों पर ध्यान केंद्रित किया। उनके अथक प्रयासों के कारण भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। लोगों की सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उन्होंने कहा कि राज्य के आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल ने दावोस, अमेरिका, दक्षिण कोरिया, जापान और सिंगापुर में आयोजित निवेश सम्मेलनों में भाग लिया। निजी क्षेत्र में युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए 2.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश प्राप्त हुआ है। महिलाएं, किसान और युवा हमारी सरकार में मुख्य भागीदार हैं। तेलंगाना में अद्भुत महिला उद्यमी हैं। कुछ महिलाओं ने 67 लाख सदस्यों के साथ स्वयं सहायता समूह बनाए हैं। हमारा लक्ष्य एक करोड़ महिलाओं को करोड़पति के रूप में बढ़ावा देना है।

महिला समूह राज्य में सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर रहे हैं, इलेक्ट्रिक आरटीसी बसों और पेट्रोल पंपों के मालिक हैं। राज्य बिजली वितरण कंपनियों ने 1000 मेगावाट सौर ऊर्जा खरीदने के लिए महिला समूहों के साथ समझौते किए हैं। महिलाएं 600 बसें चला रही हैं और कॉर्पोरेट परिवहन एजेंसियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि तेलंगाना की महिला उद्यमी सोलर प्लांट और ईवी बसें चलाने में अडानी और अंबानी जैसी बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। इंदिराम्मा आवास योजना के तहत, सरकार ने हर महिला को घर की मालकिन बनाने का संकल्प लिया है।

सरकार पहले साल में 4.50 लाख परिवारों के लिए इंदिराम्मा घरों के निर्माण पर 22,000 करोड़ रुपये खर्च कर रही है। महिलाओं के लिए मुफ्त आरटीसी बस यात्रा योजना शुरू की गई है और सरकार इस योजना के लिए 15 महीनों में 5,000 करोड़ रुपये खर्च कर चुकी है। कल्याणकारी योजनाएं- 200 यूनिट मुफ्त बिजली, 500 रुपये में रसोई गैस और राशन की दुकानों के जरिए बढ़िया चावल का वितरण राज्य में काफी लोकप्रिय है। सरकार ने स्वास्थ्य सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और राजीव आरोग्यश्री के माध्यम से गरीबों को 10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मुहैया कराया। इस साल सीएमआरएफ के जरिए 1000 करोड़ रुपये की वित्तीय मदद पहले ही दी जा चुकी है। मूसी नदी को पुनर्जीवित करके हैदराबाद को प्रदूषण से मुक्त करने की योजना बनाई गई है। न्यूयॉर्क में हडसन नदी, लंदन में टेम्स नदी और टोक्यो में सुमिदा सहित कई शहरों में नदियों और नदी तटों के विकास का अध्ययन किया गया है। मूसी एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनेगा और मूसी पुनरुद्धार परियोजना से हजारों लोगों को रोजगार भी मिलेगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने हैदराबाद को वैश्विक शहर बनाने के लिए कई बुनियादी ढांचा विकास परियोजनाएं शुरू की हैं। 30,000 एकड़ में एक विश्व स्तरीय शहर- फ्यूचर सिटी का विकास किया जा रहा है। 370 किलोमीटर लंबी क्षेत्रीय रिंग रोड का निर्माण और मेट्रो रेल का विस्तार किया जा रहा है। सरकार की नीति अधिक राजस्व उत्पन्न करने और धन को गरीबों में वितरित करने की है। सरकार सुधारों को लागू करने में पारदर्शी और सक्रिय है।

गिग, ऐप श्रमिक कल्याण नीति जल्द ही पेश की जाएगी। लोगों की शिकायतों को दूर करने के लिए प्रजा वाणी कार्यक्रम शुरू किया गया है। हमें गर्व है कि तेलंगाना भारत में जाति सर्वेक्षण और एससी वर्गीकरण करने वाला पहला राज्य बन गया है। उन्होंने कहा कि हमें यह कहते हुए भी खुशी हो रही है कि तेलंगाना यातायात पुलिस विभाग में तीसरे लिंग समुदाय की भर्ती करने वाली पहली सरकार भी है। लोगों की सरकार ने बहुत सारे कल्याण और विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं और अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। लोगों के जीवन में बदलाव लाने के हमारे मिशन में शामिल होने के लिए सभी प्रतिनिधियों को आमंत्रित करते हैं। सभी प्रतिनिधियों से अपील है कि वे अपने अनुभव, ज्ञान और कौशल को राज्य सरकार के साथ साझा करें और तेलंगाना राइजिंग के ब्रांड एंबेसडर बनें। सभी प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे दुनिया को तेलंगाना की महानता दिखाएं।

श्री भगवान परशुराम जयंती समारोह 30 को

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। श्री भगवान परशुराम मंदिर जगतगिरिगुट्टा हैदराबाद के द्वारा 30 अप्रैल को भव्य महासमागम का आयोजन किया जा रहा है। श्री भगवान परशुराम जी की कृपा से उनके जन्मोत्सव के अवसर पर 30 अप्रैल को सुबह 9 बजे से भव्य छप्पन भोग एवं सामूहिक अभिषेक एवं शाम 3 बजे से संगीत मय सुन्दर काण्ड पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसके बाद शाम 6 बजे से महाअन्नप्रसाद का वितरण कार्यक्रम होगा। संयोजक व पूर्व अध्यक्ष ब्राह्मर्षि सेवा समाज हैदराबाद, परशुराम मंदिर, राम गोपाल चौधरी ने सभी से सपरिवार कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया है।

बीआरएस को दूसरों की आलोचना करने का नैतिक अधिकार नहीं : श्रीधर बाबू

विशेष फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। आईटी और उद्योग मंत्री दुदिल्ला श्रीधर बाबू ने भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि एक पार्टी, जिसने एक दशक से अधिक समय तक लोगों के अधिकारों का व्यवस्थित रूप से उल्लंघन किया है, उसे दूसरों की आलोचना करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। "भारत शिखर सम्मेलन 2025" के हिस्से के रूप में, मंत्री ने उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क के साथ शनिवार को यहां एचआईसीसी में 'न्याय का मार्ग' नामक एक विशेष फोटो प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी का उद्देश्य युवा पीढ़ी को भारत के ऐतिहासिक मील के पत्थरों से परिचित कराना तथा इसके सकारात्मक अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। श्रीधर बाबू ने इस बात पर जोर दिया कि शिखर सम्मेलन का उद्देश्य वैश्विक प्रगतिशील आंदोलन को दिशा प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि प्रगतिशील विचार, लोकतंत्र और विश्व शांति जैसे क्षेत्रों में काम करने वाले 100 से अधिक देशों के बुद्धिजीवियों को इस पहल में हितधारक बनाया गया है। मंत्री ने आगे कहा कि मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी संविधान की भावना को कायम रखने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने बीआरएस नेताओं पर एआई-जनरेटेड सामग्री का उपयोग करके मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार की प्रतिष्ठा को धूमिल करने का दुर्भावनापूर्ण प्रयास करने का आरोप लगाया। सोशल मीडिया पर प्रदर्शनी की तस्वीरों को समय से पहले जारी करने के पीछे की मंशा पर सवाल उठाते हुए उन्होंने बीआरएस नेताओं से अपने तौर-तरीकों में सुधार करने का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क, एआईसीसी सचिव मीनाक्षी नटराजन और टीपीसीसी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ ने हैदराबाद में आयोजित भारत शिखर सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी का शमशाबाद हवाई अड्डे पर गर्मजोशी से स्वागत किया।

सीसीटीवी कैमरा सुरक्षा बढ़ाने और अपराध रोकथाम में महत्वपूर्ण : सुधीर बाबू

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस आयुक्त, राचकोंडा जी. सुधीर बाबू ने महेश्वरम जोन में 855 सीसीटीवी कैमरों का उद्घाटन किया, जिसमें सामुदायिक पहल के तहत 289 सीसीटीवी कैमरे 26 कॉलोनियों/गांवों में लगाए गए हैं, जिनमें प्रमुख सड़कें और जंक्शन शामिल हैं। इन पर 68 लाख रुपये की लागत आई है और 2 साल का वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) है। शेष 566 सीसीटीवी कैमरे विशेष अभियान के तहत 138 संवेदनशील मंदिरों में लगाए गए हैं। इन सामुदायिक कैमरों को कमांड और कंट्रोल सेंटर में एकीकृत किया जाएगा, जहां एक समर्पित टीम चौबीसों घंटे उनकी निगरानी करेगी। आज तक, 2997 सामुदायिक सीसीटीवी कैमरे और 23,582 नेनुसैथम सीसीटीवी लगाए गए हैं, जिनमें से सभी महेश्वरम जोन की सीमाओं के भीतर जियो-टैग किए गए हैं। इसके अलावा जी. सुधीर बाबू ने कहा कि सीसीटीवी कैमरे सुरक्षा बढ़ाने, अपराध की रोकथाम, आपराधिक गतिविधियों को रोककर सुरक्षित समाज बनाने, जांच में सहायता करने, सक्रिय निगरानी को सक्षम करने, अपराध विश्लेषण को सुविधाजनक बनाने और सामुदायिक सुरक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और इसकी उपस्थिति आधुनिक अपराध रोकथाम रणनीतियों का एक महत्वपूर्ण घटक है। सीसीटीवी कैमरों की मदद से राचकोंडा पुलिस कई सनसनीखेज मामलों का पता लगाने में सफल रही है। पुलिस आयुक्त जी. सुधीर बाबू ने कॉलोनी और गांव के बुजुर्गों से सीसीटीवी कैमरे लगाने के लिए आगे आने का अनुरोध किया और कहा कि ये कैमरे सामुदायिक सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं, जो अपराध को रोकने, संदिग्ध गतिविधि की निगरानी करने और जांच में पुलिस की सहायता करने में मदद करते हैं। सीसीटीवी की उपस्थिति अकेले ही गैरकानूनी व्यवहार को हतोत्साहित कर सकती है, जिससे सभी निवासियों के लिए सुरक्षित वातावरण बन सकता है। आइए जिम्मेदारी लें और एक अधिक सुरक्षित पड़ोस के लिए मिलकर काम करें। जी. सुधीर बाबू, पुलिस आयुक्त, राचकोंडा ने कॉलोनी के बुजुर्गों की सराहना की और उन्हें सम्मानित किया, जिन्होंने सीसीटीवी कैमरे लगाने में पुलिस का समर्थन किया। डी. सुनीता रेड्डी, पुलिस उप आयुक्त, महेश्वरम जोन, बी.वी. सत्य नारायण, एडिशनल डीसीपी, महेश्वरम जोन, सी. कुशालकर, एडिशनल डीसीपी महेश्वरम ट्रैफिक डिवीजन, जे. नरेन्द्र गौड़, एसीपी, आईटी सेल, पी. लक्ष्मीकांत रेड्डी, एसीपी, महेश्वरम डिवीजन, के.पी.वी. राजू, एसीपी इब्राहिमपटनम डिवीजन, और महेश्वरम जोन के सभी एसएचओ और एसआई इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

पुलिस कर्मियों को जनता की अपेक्षा के अनुरूप काम करना चाहिए : डीजीपी

डीजीपी कार्यालय में सभी थाना प्रभारियों की बैठक हुई

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस महानिदेशक डॉ. जितेन्द्र ने कहा कि पुलिस कर्मियों को जनता की अपेक्षा के अनुरूप कार्य करना चाहिए। शनिवार शाम को डीजीपी कार्यालय में राज्य के सभी थाना प्रभारियों की बैठक हुई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि लोग पुलिस थानों में तभी आते हैं जब उन्हें कानून और व्यवस्था की समस्या का सामना करना पड़ता है और वे तभी सफल हो सकेंगे जब वे सभी समस्याओं का समाधान करेंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि जब लोगों की समस्याएं हल हो जाएंगी तो पुलिस व्यवस्था पर भरोसा बढ़ेगा और पुलिसकर्मी तेलंगाना के उसी स्तर को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे, जिसने देश में पहला स्थान हासिल किया है। उन्होंने सुझाव दिया कि लोगों को पुलिस से बहुत उम्मीदें होती हैं और उन्हें इनका समाधान कर उनकी सराहना अर्जित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि डायल 100 कार्यक्रम के माध्यम से पुलिस विभाग को जनता के लिए सदैव उपलब्ध रहने का अवसर मिला है। उनका मानना है कि जब लोगों की समस्याएं हल हो जाएंगी तो उन्हें शिकायत करने के लिए कोई नहीं बचेगा। उन्होंने सुझाव दिया कि जांच करके और दोषियों को दंडित करके लोगों का सहयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान पुलिस व्यवस्था 165 वर्ष पहले शुरू हुई थी और यदि यह लोगों की अपेक्षा के अनुरूप काम करेगी तो इसे अच्छी प्रतिष्ठा मिलेगी। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून एवं व्यवस्था) महेश एम भागवत ने नकली बीजों पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि नकली बीज बनाने वाले अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। कार्यक्रम में एआईजी रमण कुमार, डीएसपी सत्यनारायण व अन्य शामिल हुए।

तेलंगाना उच्च शिक्षा परिषद ने यूजी में बकेट सिस्टम किया बहाल

शिक्षा विभाग की सचिव ने जताई आपत्ति

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। बकेट सिस्टम को समाप्त करने के निर्णय के कुछ ही सप्ताह बाद, जो विद्यार्थियों को एक पूल से अपने स्नातक विषय चुनने की अनुमति देता था, बकेट सिस्टम प्रणाली को पुनः लागू कर दिया गया है। तेलंगाना उच्च शिक्षा परिषद के अधिकारियों के साथ हाल ही में हुई बैठक के दौरान, शिक्षा विभाग की सचिव डॉ. योगिता राणा और कॉलेजिएट शिक्षा आयुक्त ए श्री देवसेना ने टीजीसीएचई के बकेट सिस्टम को खत्म करने और शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के लिए इसे बहाल करने के फैसले पर कड़ी आपत्ति जताई है।

सूत्रों के अनुसार, उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने टीजीसीएचई के इस निर्णय पर नाराजगी जताई है और इस एकतरफा कदम पर सवाल भी उठाए हैं। उनका मानना है कि एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाना चाहिए था और इस मुद्दे पर सिफारिशें मांगी जानी चाहिए थीं, न कि एकतरफा निर्णय लेने चाहिए था इससे अराजकता फैल सकती थी। इससे पहले, टीजीसीएचई ने 4 अप्रैल को आयोजित एक बैठक के दौरान पारंपरिक विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय के अनुसार बकेट प्रणाली को समाप्त कर दिया था।

2021 में शुरू की गई बकेट प्रणाली छात्रों को एक ही संकाय में चार बकेट की सूची से अपने विषय चुनने की अनुमति देती है। उदाहरण के लिए, बीए प्रोग्राम चुनने वाला छात्र बकेट ए, बी, सी और डी से संयोजन चुन सकता है, जिसमें विषयों का एक पूल होता है। विश्वविद्यालयों के अधिकारियों ने तर्क दिया कि इस प्रणाली के कारण प्रवेश में काफी असंतुलन पैदा हो रहा है, जहां कंप्यूटर विज्ञान जैसे विषयों में नामांकन अधिक हो रहा है, वहीं कला जैसे कम लोकप्रिय विषयों में सीटें भरने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

हयातनगर में आग लगने से 400 झोपड़ियां जलकर खाक

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। हयातनगर के कुंतलूर इलाके में भीषण आग लग गई। रवि नारायण रेड्डी नगर में गरीबों की 400 झोपड़ियां आग की भेंट चढ़ गईं। इसके कारण आग आस-पास के इलाकों में भी बड़े पैमाने पर फैल गई। आग के फैलने पर स्थानीय लोग डर के मारे अपनी झोपड़ियों से बाहर निकल आए। मामले की जानकारी मिलते ही दमकल कर्मी मौके पर पहुंचे और चार दमकल गाड़ियों की मदद से आग पर काबू पाया गया। इस बात की पुष्टि हुई है कि यह हादसा सिलेंडरों के फटने से हुआ है। जिला अग्निशमन अधिकारी केशवुलु ने बताया कि उन्हें फोन आया कि कुंतलूर में रवि नारायण रेड्डी कॉलोनी के पास झोपड़ियां जल रही हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने तुरंत एलबी नगर और हयातनगर में अपने कर्मचारियों को सूचित किया और पांच दमकल गाड़ियां भेजीं। उन्होंने यह भी बताया कि लगभग 300 से 400 झोपड़ियां जल गई हैं। अग्निशमन अधिकारी केशवुलु ने कहा कि उन्होंने आग पर काबू पा लिया है। अब्दुल्लापुरमेट एमआरओ सुदर्शन रेड्डी ने कहा कि उन्हें सूचना मिली थी कि कुंतलूर राजस्व सीमा में रवि नारायण रेड्डी कॉलोनी के पास आग लग गई है और उन्होंने कहा कि उन्होंने अग्निशमन कर्मियों को घटना के बारे में सूचित कर दिया है। उन्होंने कहा, हम आकलन करेंगे कि कितनी झोपड़ियां जल गईं और कितनी संपत्ति का नुकसान हुआ और सरकार को एक रिपोर्ट सौंपेंगे। हम पुलिस से दुर्घटना के कारणों का पता लगाने और एक रिपोर्ट सौंपने के लिए कहेंगे।

सिटी पुलिस ने शहर में रह रहे पाकिस्तानियों को तुरंत हैदराबाद छोड़ने का नोटिस भेजा

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। शहर की पुलिस ने राज्य की राजधानी में रह रहे पाकिस्तानियों को नोटिस भेजा है। पुलिस ने हैदराबाद में रह रहे चार पाकिस्तानियों को नोटिस भेजा है। नोटिस में कहा गया है कि उन्हें रविवार तक हैदराबाद छोड़ देना चाहिए। जानकारी के अनुसार, हैदराबाद, साइबराबाद और राचकोंडा के तीन पुलिस आयुक्तालयों में कुल 213 पाकिस्तानी रह रहे हैं। पुलिस ने पाया है कि चार पाकिस्तानियों को छोड़कर बाकी सभी के पास लंबी अवधि का वीजा (एलटीवी) है। इस संदर्भ में पुलिस ने चारों लोगों को रविवार तक हैदराबाद छोड़ने का नोटिस भेजा है। इस बीच, पहलगाम आतंकी हमले के बाद केंद्र सरकार द्वारा पाकिस्तानियों के वीजा रद्द करने के फैसले के बाद राज्य सरकारें सतर्क हो गई हैं। सरकारें चेतावनी दे रही हैं कि पाकिस्तान से आए लोग तुरंत अपने राज्य छोड़कर अपने घर लौट जाएं। इसके तहत तेलंगाना के डीजीपी जीतेंद्र ने राज्य में रह रहे पाकिस्तानियों को सलाह दी है कि वे तुरंत अपने देश लौटने की व्यवस्था करें। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, तेलंगाना में रह रहे पाकिस्तानियों को तुरंत अपने देश लौट जाना चाहिए। 27 अप्रैल के बाद पाकिस्तानी वीजा मान्य नहीं होंगे।

मेडिकल वीजा वालों के लिए 29 अप्रैल तक की समयसीमा है। पाकिस्तानी अटारी सीमा के जरिए अपने देश जा सकते हैं। अटारी सीमा इस महीने की 30 तारीख तक खुली रहेगी। केंद्र सरकार के नियमों के मुताबिक अगर पाकिस्तानी अवैध तरीके से तेलंगाना में रुके हैं तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

सनसिटी डकैती मामले में छह गिरफ्तार

आरोपियों में पीड़ित का रिश्तेदार भी शामिल

हैदराबाद, 26 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। राजेंद्रनगर पुलिस ने सनसिटी में पांच दिन पहले हुई डकैती के मामले में कथित तौर पर शामिल छह लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से दो चाकू, दो मोबाइल फोन और एक कार जब्त की है। गिरफ्तार लोगों में जिब्रान बिन जाबेर, मोहम्मद अकील, मोहम्मद फसीउद्दीन, सोहेल शाह खान, मोहम्मद अब्दुल जावेद और मोहम्मद शब्बीर शामिल हैं।

पुलिस के अनुसार, जिब्रान उस घर के मालिक का रिश्तेदार है, जहां गिरोह ने डकैती की थी और उसने अपने पांच दोस्तों की मदद से डकैती की साजिश रची थी। पुलिस ने बताया कि 21 अप्रैल को गिरोह ने हथियार और कार का इंतजाम किया और मोहम्मद शाकिर अली के घर में घुसकर सोना, चांदी और नकदी समेत संपत्ति लूटकर फरार हो गए। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर क्लोज सर्किट कैमरों की मदद से छह लोगों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.